

Book-Post

22

To,

If not delivered  
please return to :

EDITOR,  
THE VEDIC PATH,  
P.O. Gurukul Kangri,  
U.P. 240404.



॥१॥  
 ॥२॥  
 ॥३॥  
 ॥४॥  
 ॥५॥  
 ॥६॥  
 ॥७॥  
 ॥८॥  
 ॥९॥  
 ॥१०॥  
 ॥११॥  
 ॥१२॥

वायुस्वाहा॥ समुद्रायुस्वाहा॥ सरिरायुस्वाहा॥ ॥२॥ वातायुस्वाहा॥  
 नायुस्वाहा॥ भ्रा॥ युस्वाहा॥ मेघायुस्वाहा॥ विद्योतमानायुस्वाहा॥  
 यते स्वाहा॥ वरूजते स्वाहा॥ वर्षते स्वाहा॥ ववर्षते स्वाहा॥ गन्धर्वते  
 स्वाहा॥ शीघ्रम्वर्षते स्वाहा॥ हृहते स्वाहा॥ हृहीतायुस्वाहा॥ पुल्लते  
 स्वाहा॥ शीकायुने स्वाहा॥ पुष्यायुः स्वाहा॥ हाडुनीभ्यः स्वाहा॥ नाहारायुः  
 स्वाहा॥ ॥२॥ अग्नये स्वाहा॥ सोमायुस्वाहा॥ इन्द्रायुस्वाहा॥ पृथिव्ये  
 स्वाहा॥ नरिक्षायुस्वाहा॥ दिव्ये स्वाहा॥ दिग्भ्यः स्वाहा॥ शीघ्रैः स्वा  
 हा॥ धीदिशे स्वाहा॥ धीन् दिशे स्वाहा॥ ॥२॥ नक्षत्रेभ्यः स्वाहा॥



नक्षत्रियेभ्यः स्वाहा होरात्रेभ्यः स्वाहा । दिग्भ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा  
 कुलभ्यः स्वाहा । त्रिवेभ्यः स्वाहा । समस्तपुराणस्वाहा । चारोपशिवी स्वाहा  
 स्वाहा । नृदाय स्वाहा । सूर्याय स्वाहा । रुमिभ्यः स्वाहा । वसुभ्यः स्वाहा ।  
 रुद्रेभ्यः स्वाहा । हित्येभ्यः स्वाहा । मरुतभ्यः स्वाहा । विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ।  
 मूर्तेभ्यः स्वाहा । रास्वाहा । स्वाहा । चतुर्भ्यः स्वाहा । पुष्येभ्यः स्वाहा ।  
 त्रिभ्यः स्वाहा । षष्ठीभ्यः स्वाहा । ॥ २० ॥ पृथिव्यै स्वाहा । ते रिशोदः स्वाहा ।  
 दिवे स्वाहा । सूर्याय स्वाहा । नृदाय स्वाहा । नक्षत्रेभ्यः स्वाहा । ॥ २१ ॥  
 षष्ठीभ्यः स्वाहा । चतुर्भ्यः स्वाहा । परिपुष्येभ्यः स्वाहा । वराचरे ॥ २२ ॥  
 होरात्रेभ्यः स्वाहा । ॥ २३ ॥ अस्वे स्वाहा । वसवे स्वाहा । विश्वे ॥ २४ ॥  
 ॥ २५ ॥



सुक्ति तयः १८ यः ॥ अग्ने को मा य वे मि ने ॥ ११६ ॥ अग्निः पियेषु ॥ अग्निः पियेषु  
धाम सु को मो त तस्य त व स्य ॥ सम्प्राडे को वि न जति ॥ ११७ ॥ ॥ मयि गृह्णामि ॥ ॥  
इति द्वा दशो द्वा दशः ॥ १२ ॥ ॥ मयि गृह्णामि ॥ अग्निः पियेषु ॥ अग्निः पियेषु  
य सु वी र्या य ॥ मा मु दे व ता स व न्ता म् ॥ १ ॥ अग्निः पियेषु ॥ अग्निः पियेषु  
समु द्ग म ति त ॥ पि न्त्र मा न म् ॥ व र्द्ध मा नो म हा ॥ २ ॥ ॥ आ नु पु ष्क रे दि वो मा त्र या व वि त  
म्प सा पृ थ स्व ॥ २ ॥ म्प ल ज ता न म् ॥ म्प ल ज ता न म्प थ म म्प र स्ता दि सी म त ॥ सु नु वो  
वे न ॥ आ व श्वा ॥ स मु द्वा ॥ उ प मा ॥ अ स्य वि ष्ठा ॥ सु त र्द यो ति म स त श्व वि व ॥ ३ ॥ हि न त्स्य  
ग र्म ॥ स म् ॥ हि न त्स्य ग र्म ॥ स म् व र्त्त ता ग्रे भू त स्य ता त ॥ प ति ने क ॥ आ सी त् ॥ स दा धा न ॥  
यि ॥ नु मु ते मा द्क र्मे दे वा न ह वि ष्ठा वि धे मा ॥ ४ ॥ दृ ष्म श्व स्तु न्द ॥ ए पि वी म नु द्या मि म  
यो नि म नु य श्व र्द ॥ स मा न यो नि म नु स श्व र्द ॥ नु य श्व र्द ॥ नु य श्व र्द ॥ नु य श्व र्द ॥ नु य श्व र्द ॥  
या न न ॥ त र्ग यो दे व ॥ यि वी म न् ॥ यो दे व ॥ न न्दे दे वि त ॥ त स्य ॥ स र्प यो न म् ॥

॥ १२ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥

॥ १२ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥







॥७७॥ दधं द्याम्याम्यलिम्बु ॥ दधं द्याम्याम्यलिम्बु ॥ अस्मैस्तस्का नाश ॥ ३३॥  
हनुम्यां स्तेना न्नगवस्तास्त्वक्ष कवाय सुखादितान् ॥ ७८॥ ये जनेषु ॥ ये जनेषु  
मलिम्बुवस्तेना स स्तस्का नावने ॥ ये कन्दे द्यवापवस्तां स्ते दधा दधामि जश  
यो ॥ ७९॥ योऽस्मत्पय ॥ योऽस्मत्पय मनातीया दश्वे नो द्वे यते जने ॥ नि  
न्दाद्योऽस्मान्धिष्याश्च सर्वे न म्मसाकु ॥ ८०॥ सश्रितम् ॥ सश्रित  
म्मस सश्रितम्बी यम्बलम् ॥ सश्रितम्बु न्निष्कृष्याहमस्मिपु  
नोहित ॥ ८१॥ उदेषाम् ॥ उदेषाम्माहः अति युद्धोऽथो मलम् ॥ न्हितो  
मिम्बुल्लामि त्रानुभामि स्वाश ॥ ८२॥ अनेपते नस्य ॥ नो देह न  
मीवस्य शुष्मि तां प्रप्रदाता नानिम् ॥ ८३॥ अर्जुनो धेहि द्विपदे वतुम्बदे ॥ ८४॥  
दशानो उक्ता ॥ ८५॥ ॥ इत्येकादशोऽध्यायः ॥ ११॥ दशानो उक्ता ॥ ८६॥



6

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
सर्वभूतहितं कुरु ॥ सर्वदुःखहर्त्रे नमः ॥  
सर्वपापहर्त्रे नमः ॥ सर्वकलहहर्त्रे नमः ॥  
सर्ववैद्ये नमः ॥ सर्वशक्तिमान् नमः ॥  
सर्वभूतेश्वर नमः ॥ सर्वलोकेश्वर नमः ॥  
सर्वव्यापक नमः ॥ सर्वभूतेश्वर नमः ॥  
सर्वलोकेश्वर नमः ॥ सर्वव्यापक नमः ॥  
सर्वभूतेश्वर नमः ॥ सर्वलोकेश्वर नमः ॥  
सर्वव्यापक नमः ॥ सर्वभूतेश्वर नमः ॥  
सर्वलोकेश्वर नमः ॥ सर्वव्यापक नमः ॥







॥ वो दधित्री सुनताता अतन्ती सुमती नाम् ॥ यज्ञे न्दधे स वस्वती ॥ ८५ ॥ महो अ  
 त्सी ॥ महो अत्सी स वस्वती प्रचे तयति के तु ना ॥ धियो विश्वा विना जति ॥ ८६ ॥ इ  
 न्द्रा या हि चित्र ता नो सुता ॥ इमे त्वा य वः ॥ आत्मी ति स्त ना पू ता सः ॥ ८७ ॥ इन्द्रा  
 या हि ॥ इन्द्रा या हि धियो मि ते विष्णू तः सुता वः तः उपम्र ह्ये साणि वा द्य  
 तः ॥ ८८ ॥ इन्द्रा या हि ॥ इन्द्रा या हि तृ तु जा नः उपम्र ह्ये साणि वा द्य सुते द  
 धिष्व न श्व ना ॥ अश्वि ना धि म ता म् ॥ अश्वि ना धि म ता म् मधु स वस्व ता स जे  
 म सा ॥ इन्द्र सुत्रा मा वत्र ह जुष ना ॥ सो म्म म्म धु ॥ ८९ ॥ ॥ इम म्म ॥ ॥  
 इति वा त्त म ते य स थ हि ता याम्पो विधु शति मो द्या पथ ॥ ९० ॥ ॥ सं वत्  
 ११३ समये चैत्र सुदि १ गुड वास ने दु द्वि वे द च य उ त्सा त्म ज कुश धने रा दि  
 खित म्बि क्कु प्री ति काम ॥ ॥ श्री राम चन्द्र ॥ श्री ज ग न्ना र्थ य त म्म ॥ ॥

११२

११३



मित्रं मयूरः श्वेनस्य शत्रुः कर्कटवायसौ सह दौर्षिगल श्वेनो मयूरारुणशो  
 वसै १४ काकस्य शत्रुवो नित्यं पिंगल श्वेन कर्कटाः कर्कटस्य रिपूः स्यातां  
 सर्वदा श्वेनवायसौ १५ नीलकंठस्य सह दौसदा कर्कटपिंगलो श्वेनो  
 मूलमवेत्कुडो जीवधातुस्तवायसः १६ कर्कटो मूलजीवौ तजीवधा  
 तः शिखंडादध्वक् श्वेनो नरो वध् कुडो पुरुषो वायसस्तथा १७ कर्कुरः  
 स्त्रीषु मांसौ तु शिखंडी कुबलेक्षणाः वतुः पातृ पिंगलो ज्योतिषादौ श्वे  
 नवायसौ ताम्रचूडस्तथा श्रुंगी शिखंडपक्षिजो रगौ श्वेनः कुडो हिजश्रे ५  
 क्षोमहीया लस्तवायसः ताम्रचूडो वारिकम्बो नीलकंठो त्यजजातिजः  
 श्वेनो मुखकंठवाह कुडो वक्षस्तवायसः कर्कटः राप्तिभागस्तु शिखंडी पाद  
 युक् क्रमात् ३ कानिकर्माण्येता निप्रवक्ष्यते समासतः २९ दासादिपंच



२

१५०

मेरु डाभ्रा दीदिष रसपिंगलाः भगदिष रसका कस्य ज्येष्ठादिपंचकु  
 कुटाः २२ वस्वादिपंचमायूरमित्येवंतारकक्रमात् श्येनो नंदा दध्न  
 द्रा वायसो जयवर्णिनी २३ ताम्रचू उस्तपारिक्ता शी रवी पूर्णा क्रमाद्  
 वेत् ज्ञाकारो मेघसिंहालि ईकन्या पुमक। किंणी उकारो धने मीनो व  
 ए कारश्चतुला वषौ डोकारश्चमृजो कुभो इत्येता शशी चराः क्रमात्  
 मेरु डाधन मीनो पिंगलाश्चतुला वषौ का कश्च वस्त्रिको मेघेस्ताम्रचू उ  
 श्रक कूटः मयूरश्चघटो नक्रो इत्येवं च द्दिशायः २६ अकन्यभा उवि  
 धिना ईशो मरुतो नरको जभाः उपाय - यजंते जा एको घंटा रघो मरी डो  
 ठं देहं वलं वायु नंदादिषु क्रमात् दिशि पक्षी कार्य नूयं स्यात् पक्षि प  
 लंभवेत् अकार पक्षी म तं हि दिग्देव तदिना निच मुत्तमर्थ लाभगमने

यथा



स्तस्य ता ईश्वरानि वृत्ते निश्चयेनानीग्रामस्यो॥ विश्वाची वृत्ताची वाप्सुनसा  
 वापोहेतिर्वा तत्र प्रहेति स्तोत्रो नमोऽश्रुतेनो वन्दतेनो मृडयन्तेनो वन्दितेनो वन्दितेनो  
 नो देवितमेवाश्रमे दद्या॥ १८॥ अथमुपवि॥ अथमुपविर्वाग्वस्तुस्तस्यसेनजि  
 च सुषेणश्च सेनानीग्रामस्यो॥ उर्वशी च पूर्वविति स्वाप्सुनसा ववस्यु  
 ज्जनेतिर्वाद्युत्प्रेहेति स्तोत्रो नमोऽश्रुतेनो वन्दतेनो मृडयन्तेनो वन्दितेनो वन्दितेनो  
 यश्च नो देवितमेवाश्रमे दद्या॥ १९॥ आग्निर्मूर्धा॥ अग्निर्मूर्धादिव  
 वकुत्वतिर्वा पृथिव्याऽथ यम॥ अथाथ नृताथ सिजिन्वति॥ श्वा अथ यमग्निर्वा सह  
 सिधोवा एता वा तस्य शानि न स्थतिर्वा॥ मूर्धा कवीरमीराभा॥ २१॥ त्वामग्ने॥ त्वाम  
 ग्नेपुष्पा दद्याथर्वा निमन्त्रत॥ मूर्धा विश्वस्य द्वा न तर्वा॥ २३॥ सुवायु न स्या॥  
 सुवायु न स्या न ज सश्वनेता यत्रानियुक्तिः स च सेशिवा तर्वा॥ दिवि मूर्धा



७८

७८

स्वर्गोऽग्निः कामं ते वदेष्वहं वाहस्य ॥ २२ ॥ अमोऽग्निः समिधा जतानाम्प्रति धेनु  
 मिवावती सुखासम् ॥ यः कौऽऽवप्रवया मुजिहनाऽप्र तात वऽसि स्सते ता कम  
 मयु ॥ २३ ॥ अतो वामक वयो ॥ मै अतो वामक वयो मे द्याव वयो वन्दा उ वम ता यव  
 स्ते ॥ गविष्ठिनो न मसास्ताम मग्ने दिवी व नु कमु उव्य अ म शे त ॥ २४ ॥ असमिह ॥  
 पथमो वा विवा तृतिर्ह ता यजिष्ठोऽ अ इ ने ष्वी इ ॥ वम प्र वानो तृ गो वो वि  
 उ उ वु धे ने यु वि त्र मि स्त मि शे वि शे ॥ २५ ॥ ज नं स्प गो पा ॥ ज नं स्प गो पाऽ अ न नि  
 य जा गवि नग्निः सु दे न्दु सु वि ता य न वी से ॥ वृ त प्य ती को मृ ह ता दि वि स्तृ शा षु  
 म दि ता ति त्र ते स्य ॥ सु वि ॥ त्वा म ग्ने ॥ त्वा म ग्नेऽ अ जि नु सो गु हा हि त म न्य  
 वि न्द जि शि य मा ता म्ने न व ने ॥ स ता य से म त्थ मा न ॥ स हो म ह त्वा मा दु ॥ सह स  
 सु त्र यं दि ॥ २६ ॥ स स्वा य ॥ स म् ॥ स म् ॥ अ मि स थ स्तो म था



13



14



[illegible]



प्रत्युष्टाः अनातपोनिष्ठं प्रथं नन्दे निष्ठुष्टाः अनातपोनिष्ठं ॥ अ  
सिसपलन्दि द्वाजिनत्वा वा जे चाये सम्माजिम् प्रत्युष्टाः प्रत्युष्टाः  
अनातपोनिष्ठं प्रथं नन्दे निष्ठुष्टाः अनातपोनिष्ठं ॥ अनिष्टितासिसपलन्दि द्वाजिनी  
त्वा द्वा जे चाये सम्माजिम् ॥ २८ ॥ अदित्ये या स्ना ॥ अदित्ये या स्ना ॥  
प्रेष्योऽथ जौत्वा यस्मै तत्त्वा ननु या वपश्यामि ॥ असे जि कासि सुहृद्  
सुमाध्याम्मे ध्याम्मे मे त वयं जुमे य जु मे ॥ ३० ॥ सुवितुः त्वं अस वः तु त्वं  
मा विष्णु पाप वि त्रे रा ॥ ३१ ॥ स वि त्वं वः अस वः तु त्वं ताम्  
३० ॥ ते जौसि शु वः अस वः तु त्वं ताम्  
नन्दे वना



17

कविः स्वर्गसाक्षात्स्वर्गध्याया ॥ ३८ ॥ स्वर्गत्वात्ताग ॥ ३९ ॥ साक्षात्स्वर्गनातनमि  
 धिष्ठा हव्यश्च न ॥ ४० ॥ अग्रेषु तपते । अतश्च निष्ठासितश्च  
 रध्यताम् ॥ ४१ ॥ दृढमहमन्ते तास्तस्यपुष्पेभिः ॥ ४२ ॥ कस्त्वा । पुनर्निम  
 नन्ति कस्मै त्वा पुनर्निमन्ते त्वा पुनर्निमन्ति ॥ ४३ ॥ कस्मै त्वा पुनर्निमन्ते  
 ॥ ४४ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द ॥ ४५ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द  
 ॥ ४६ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द ॥ ४७ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द  
 ॥ ४८ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द ॥ ४९ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द  
 ॥ ५० ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द ॥ ५१ ॥ अतश्च कश्च नन्द । अतश्च कश्च नन्द



श्रीम ॥ देवानां मसि वक्रितमथु सस्त्रितमम् प्रितम उठळ तमने उड  
 म् ॥ ॥ अकुतेमसि। हविर्घातन्दृष्टु ह स्वनाहान्नामैस ह्यपति व ॥ ॥  
 विष्णुस्त्वा कुमतामुनु वा ताद्याप हतथु रन्कोय छेन्ताम्प ॥ ॥ दिवस  
 त्वास वि तु ४ प्रसवे श्वेनाम्ना कु त्याम्पूष्ठा हस्तो स्याम ॥ ॥ म्याम् ॥ स ग्नये जु ४  
 गृह्णाम्यग्नीषोमा म्या जु ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ॥ १० ॥ त्वायेत्त्वा। गाना तये १  
 स्वरत्तिदिकरो षन्दृष्टु ह नान्दुया १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ॥ १० ॥ त्वायेत्त्वा। गाना तये १  
 यास्त्वा ना नोसा द्या म्या दि त्या ५ उपस्थे गे ह वा थु रन्को ॥ ११ ॥ पवित्रे म्या ॥  
 पवित्रे म्या ॥ पवित्रे म्या ॥ पवित्रे म्या ॥ पवित्रे म्या ॥ पवित्रे म्या ॥ पवित्रे म्या ॥

१२

२







म्मो नदी दंगु दस्यो मस्य न दस्यो मस्यो तन्दीया ॥ २० ॥ वेवती नम ध्वम् ॥ वेवती नम  
 ध्वमस्मिन्यो ना वस्मिनो ठे स्मिन् लो के स्मिन् द्ये ॥ इ हे वसमा गाता ॥ २१ ॥ सुध  
 हि तासि विश्वा नृपू जामा विशा गोप लेन ॥ उपत्वा गने दि वेदि वे दो व्या वस्त धि  
 द्या व द्यम् ॥ नमो तत्रे नः एमसि ॥ २२ ॥ राज नम द्य गाताम् ॥ राजा नम द्य गाता  
 ज्ञे पा मृतस्य दी दि विम् ॥ व द्य मान ॥ स्त्रे द मे ॥ २३ ॥ स न क्ष पि ते व सून वे गे म्  
 पाद नो ले व ॥ स रस्वान ॥ स्त्र स्त्र द्ये ॥ २४ ॥ अ जे त्वम् ॥ अ गे त्वे चो ॥ अ नमः  
 उ त त्रा ता शि वा त वा व नृ प्य ॥ व सु न गि र्व सु श वा ॥ अ ह्या न न्दि द्यु म त म  
 नृ दि न्दा ॥ २५ ॥ तन्वा ॥ शो चि ठु दी दि व ॥ सु आ य नून मी म हे स रि य ॥  
 स नो मो धि सु धी रु व सु उ प्या तो ॥ अ द्या य त ॥ समस्मात् ॥ २६ ॥ इ डः ए हि ॥



कवे धुवनतु ममि ध... ४ : सुमिदा ॥ स्व  
वस्तोत्या तु कस्या शिदतिशस्यो स वितुम्मा कुस्थः कर्ममदस...  
णामिस्वा सस्य देवेस्यः आत्मा वसे वोनु द्राः आदित्या ४ सदन्तु ॥  
ता शसिः जुहन्ताम्मा सेदम्पिदेण धाम्माप्पि यथु सदः आसीद हंता  
शस्युप न्ताम्मा सेदम्पिदेण धाम्माप्पि यथु सदः आसीद हंता  
शसि कुवाताम्मा सेदम्पिदेण धाम्माप्पि यथु सदः आसीद यथे  
सदः आसीदा धुवाः असदन्त तस्य तेनो ता विष्णो  
मालिषयपतिम्पाहि माथा नाना ॥ ५ ॥ सगेवा जजित  
का नन्वा सन्ति अन्ति वा जजित ॥ ५ ॥ नाना ॥







स्वाधुनु प्रयाऽनु प्रयस्वोनुते यज्ञपतिः प्रयतामग्निमे त्व वम्माहि धृमीदेव  
 स्वासविताशयपदतु द्वर्मिमे धिनाके ॥२२॥ मातेऽ॥ मातेर्मासमिन्त्या  
 सतेमेनुयोजोतमेनुयोजेमानस्यपुजा न जात्रितामत्वादितामत्वेकताद  
 ॥२३॥ देवसात्वा॥ सवितुः प्रसवे श्विनोर्माहुस्याम्पुष्टाहस्तास्याम् ॥  
 सुतत्वे देवसाऽइन्द्रस्याहुर्गिरिदन्दिताऽसहस्रं नृभिः शततेना  
 वाधुर्गिरिगमते ताद्विमतो वधः ॥२४॥ एषिर्विदेव यतनि ॥ एषिर्विदे  
 तमनुजोऽसि ॥  
 वातः



...सिपर्वतीपु...  
 पाहृतेजीपुतित्वापर्वतीवेत्तुधान्यामसि॥१॥ धान्यामसिउहिदेवान्  
 त्वादातामत्वाद्यानादात्वा॥ दीर्घमनुप्रसितिमाहुमद्यानूदोव३स  
 विताहिनत्स्यपाणि३प्रतिगत्तात्वहिदेवापाणिनाबन्धुमत्तामह  
 नाम्यदोसि॥१॥ देवस्यत्वा॥ सवि३३सवेश्वितोम्याहुम्यामूह्लोह्ला  
 म्यामू॥ सम्बपासिसमापः३अधीति३समोषधयोत्रसेन॥ सधुपेवत  
 जगतीति३८चन्ताथसम्भुमतीम्भुमतीति३८चन्ताम्॥१॥  
 यत्पेत्वा॥ सञ्चोमीदमग्निदमग्नीमामयोनिमेत्वावमोसिदि



अहन्तः प्रसनेच्छाः पवि चेट्यास्वदेवाः ॥ इमाम्मावमत्तिविश्वेष्ट एतान् आ-  
 स्मिन्महिर्बिमाद द द्युथ स्वा वा ॥ १४ ॥ हृतावी स्याः हृतावी स्याः धुयो पात  
 ५ सुम्मे स्थः सुम्मे मा धतमा ॥ वृत्तनमं श्वेतः उपेय ज्ञेयं सिं शिवे सन्निव  
 स्वस्वि छे मे सन्निव स्व ॥ १५ ॥ अग्ने दम्याप्ते ॥ अग्ने दम्याप्ते शीतमप्राहिमा  
 दिद्योः प्राहिप्रसिते प्राहि दुनिष्टे प्राहि दुन द्युत्प्राः अविमन्तः पितुं न  
 तु सुमदा यो नो स्वा हा वा उग्ने सं वेशपत दे स्वा हा स न स्वत्ये यशो न भे नि  
 न्ये स्वा हा ॥ १६ ॥ वेदोसि ॥ वेदोसि येन त्वं देव वेद दे वे स्यो वेदो न व स्ते न मद्य  
 वेदो न द्याः ॥ देवा गा तु विदो गा तु वित्वा गा तु मिता ॥ मनसं स्पतः इमं देव  
 वृत्त- ॥ गते ध्या ॥ १७ ॥ इमं हि ॥ सम्महि न द्यु ॥ १८ ॥ विद्या हृते न स



ॐ प्रोहामि ॥ १५ ॥ ओमो तमप नुपता ओसमन्दे विषयश्च वदन्दिषमवा जस्ये  
 तम्य सुवनापोहामि ॥ इन्द्राग्नी तमप नुदता ओसमन्दे विषयश्च वदन्दिषमवा जस्ये तम्यसु  
 वेनापोहामि ॥ १५ ॥ वसुन्तस्त्वा ॥ नुदे स्यस्त्वादि त्येस्ये स्त्वासञ्जाना यान्द्याव  
 पृथिवी मित्रा वरुणो त्वा व ह्या व ताम् ॥ व्यन्तु वयोन्तं विहाणाम नुताम्यसु  
 तीर्जस्तु वशा ए शिन्मू त्वा दि व ऊ ह्यु ततो नो वृष्टिमा वरह ॥ वन्दु म्याऽथ  
 जे सि वन्दु मे पाहि ॥ १६ ॥ यम्य विधिम् ॥ यम्य विधिम् यदं यत्थाऽअ जे दे व  
 पितृर्गुह्यमा त ॥ तैत् ५ ए त म नु जो म म्ना म्मे य ने त्वा द य वे त धा ताऽ  
 जे ४ प्रियम्या यो पीतम् ॥ १७ ॥ सधु सव ता गा स्थ ॥ सधु सव ता गा स्थ ॥



१४

१४

गले आ को म हे ना श थ से न सो मे न ॥ पि तृ ता श्च म न्म जि ॥ ५३ ॥ आ न ॥  
आ न ॥ ए तु म न ॥ पु न ॥ क्र त्वे द न्ना य जी व से ॥ ज्यो क्व सू र्य न्द शे ॥ ५४ ॥ पु न ॥  
न र्न ध ॥ पु न र्न ॥ पि त सो म नो द दा तु दै व्यो ज न ॥ जी व म्या त थ स वे म हि ॥ ५५ ॥  
व ज थ सो म व्र ते त व म न स्त नू मु मि म्र त ॥ प्र जा तु न स वे म हि ॥ ५६ ॥  
ए व ते नु प्र ता ग ॥ स ह स्व स्वामि क जा त श्च म स्व स्वा हे व ते नु प्र ता ग ॥  
आ खु सो प शु ॥ ५७ ॥ अ व नु ड ॥ म दी ह्य व दे व भ्र म्भ क म ॥ य थो नो व स्य ॥  
स स्व न द य थो न ॥ से व स स्व न द य थो नो व्य व स ॥ ५८ ॥ ने व ज म ॥  
सि ने व ज म व ेश्वा व पु नू मा द ने व ज म ॥ सु ख मे षा य मे ष्यै ॥ ५९ ॥ य ॥  
म न व्य जा म हे ॥ सु ग मि मु ष्टि व र्ध न ॥ ६० ॥ उ न नु क मि म न व्य







१५

१५

सन्तु देवीनो यथेच्छां स्वस्वधिते मे न धृतिः सी॥ १॥ आपोऽस्मान्मात॥ आ  
 पोऽस्मान्मात॥ तनः सुधमन्तु ह्येते न नो ह्यतः पुनन्तु॥ विश्वं हि विष्णु  
 वहन्ती देवी नुदि दीप्तं स्मृतिं विनापूतं यमि॥ दीन्ता तपसोस्तनूनं सिता  
 त्वा शिवा शशांगमाम्पि देवे नृपस्य स्युष्यन्त॥ २॥ सुहीना मयं क्षमां मती  
 नाम्ययोऽसि वक्ष्यामि॥ असि वक्ष्यामि देहि॥ वृत्रस्य सिकं नी न कश्चन्दुदोऽ  
 असि वक्ष्यामि देहि॥ ३॥ वित्यतिम्मा॥ वित्यतिम्मा पुना तु वा कतिम्मा पुना तु  
 देवोमा सविता पुना त्वच्चिदेतापवित्रता सूर्यस्य सविता तस्य ते पवि  
 त्रे पते पवित्रपूतस्य यत्कीमः पुने त ह्यु के दमः॥ ४॥ आवक्ष्यामि॥ आवक्ष्यामि  
 इमं देवामस्युदयधरे॥ आवक्ष्यामि॥ आवक्ष्यामि॥ आवक्ष्यामि॥



मुन्दोदामास तात् ॥ अम्भकश्च तामहे सुगन्धिमतिवेदनम् ॥ उर्वीनुकमिव  
 मन्धनादितो मुन्दोदामुतः ॥ ६० ॥ एतत्तौ ॥ उद्रावसन्तेनयनो मूतवतोतिदि ॥  
 अवंततधन्वापिनोकावसः ॥ कलिवासाः सहिषं सन्नः ॥ शिवोतीति ॥ ६१ ॥  
 आद्युष्यञ्जमदे गेः ॥ कश्यपस्य आद्युष्यम् ॥ यदेवेष्टु आद्युष्यननोऽश्वस्तु  
 आद्युष्यम् ॥ ६२ ॥ शिवो नाम ॥ शिवो नामासि स्वधितिलेपितानमस्तेऽश्व  
 स्तुमामाहिषी ॥ निवृत्तदाम्प्याद्युष्ये न्याद्यायप्रजननायनायसुस्योषा  
 यमुप्रजास्त्वामसुवीप्याय ॥ ६३ ॥ ॥ एदम् ॥ तृतीयाध्यायः ॥ ३ ॥ ॥  
 एदमगन्मदेवयजनस्य धिव्यायत्रेदेवासोऽश्वजुष्यन्तविश्वे ॥ सक्तामा  
 म्याधि सन्तनोय जुम्मीनायस्योषासमिधामदेम ॥ इमाः आयः शसुमे



CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



हि॥ सोमस्य नीवि रसि विष्णोः शर्मो सि शर्म य जमानस्येन्द्रस्यो निरसि सुस  
स्याः सुवी स्तधि॥ ३ ह्युयस्व वनस्वतः ३ धो मा पा ह्य ५ हसः ५ आस्य य ज  
स्यो द व १॥ १०॥ व्रत दं पुत॥ व्रत दं पुत॥ व्रत दं पुत॥ निर्मृत्ता निर्मृत्ता  
न स्य ति र्द्यो जिये १॥ देवी न्द्रि य म्म नाम हे सु म् डी काम ति र्द्यो जिये व ज्यो वा  
अ ज्य वा वा ह सु म् सु ती न्द्रो नोऽ अ स द शो॥ ये दे वा मनो ज्ञाता मनो दु जो  
द न्दं कृत व स्ते नो व न्दु ते न १ पा न्दु ते म्प १ स्वाहा॥ ११॥ श्वा त्रा १ पीता १ श्वा  
त्रा १ पीता स व त य द्य मा योऽ अ स्मा व म् न उ द ने सु रो वा १ ताऽ अ स्य म्प  
म न्द नाऽ अ न्म मा वाऽ अ ना ग स १ स्व द न्दु दे वी र म्प ताऽ स ता द य १॥ १२॥ इ य  
नो॥ य जिये त नू र पो मु आ मि न प्र जा म् ॥ अ १ हो मु व १ स्वाहा द ता १ र थि वा

१६

१६



माः अतः वारास्य दत्तवदेति सन्देशः ॥ २३ ॥ एतता गावत्रा नागाः इति मे सोमा  
 मावश्रुता देवते त्रैलुक्तो नागाः इति मे सोमा वश्रुता देवते जागतो नागा तो ना  
 गाः इति मे सोमा वश्रुता ह्युन्दो नामाना ॥ साम्ना ज्येष्ठे इति मे सोमा वश्रुता  
 रास्मा कोसि शुक्ले सेगुह्यो विवितस्तु विविन्वन्तु ॥ २४ ॥ अतित्यम् ॥ अभि  
 त्यन्दे वधुं सवितारमोस्य ॥ ४ ॥ कविक्कतु मर्च्यो मिसत्य सवधुं रत्ने धाम नि  
 प्रियममतिदुःविम् ॥ ३ ॥ ध्यायस्यामतिस्माः अदिद्युः सवीमनि किं तत्पण  
 गिरमिमीतम् ॥ ५ ॥ प्रजापतिः ॥ न प्याता नु प्रजा  
 स्वमेनुप्राति ॥ ६ ॥ सुदे ॥ प्रशुन्दे एतामृतम्  
 मृतैर्न ॥ सनेत ॥ नमेते बुद्धाणि तप सस्तनूना राप्रजापते धर्माः ४ पनमेता



पशुना विप्रसे सहस्रपोषम्पुषेयम् ॥ २६ ॥ मित्रो न ॥ मित्रो न ॥ एहि सुमित्र धः  
 नृस्यो नृमा विप्र उन्दिता मुगानुशान् २७ स्यो नः स्यो न ॥ स्वानस्त्रा जाङ्गनेम  
 स्त्रा नेह ससुहंस्त नृशान्वेते व ॥ सोमं ह्ये नृणां स्तान् नृध्वमादौ दत्तम् ॥ २८ ॥ प  
 रिमाणे दुश्चरिता द्वाध्रस्वामा सुचरिते नृज ॥ उदा नृमा स्वा नृध्वो दस्थाम नृ  
 ता २ ॥ २९ ॥ अ नृ ॥ २८ ॥ प्रतिपन्थाम ॥ प्रतिपन्थाम पद्महि स्वस्तिगाम नेह संश  
 येन विश्वा १ पविद्धि यो वृत्तानि विन्दते वसु ॥ २९ ॥ अदित्या स्वको ॥ अदि  
 त्या स्वगस्यदित्ये सदः आसीद ॥ असंस्त्रा द्यामृ म तो ॥ अन्तर्विन्दे ममिमी  
 तव रिमातामृथिव्या १ ॥ आसीदद्विश्वा नृव नानि सम्प्रादिश्वेतो निव नृ  
 तास्य वतानि ॥ ३० ॥ वने नृवि ॥ वने नृध्वान्तिन्द नृता नृवाम नृत्सु पद्म

१८

१८



सूर्यस्य चन्द्रः॥ सूर्यस्य चन्द्रो नामैतामेव नृणां कर्तृन् कर्तृन् कर्म॥ यजेत श्रेष्ठिनी यसे  
 आ जमाने विपश्चिता ॥ ३२ ॥ उखावेतम् ॥ उखावेतन्धूमा होषु ज्योथामन  
 मूरः अवीरहणो म्प्रल यो दनौ ॥ स्वस्ति यजमानस्य गृहानां च तम् ॥ ३३ ॥  
 तद्रोमे ॥ तद्रोमे सिप्रयं वस्व तु वस्यते विश्वान्प्रसिधामानि ॥ मात्वाप निप  
 विता विदन्मात्वाप विपश्चिने विदन्मात्वा वकोऽथ श्रौतवो विदन् ॥ श्येनो  
 तुत्वाप नोपतय जमानस्य गृहानां च तन्मौ सस्तम् ॥ ३४ ॥ नमो मित्रस्य ॥  
 नमो मित्रस्य वरुणस्य चन्द्रसे सहो देवाय तदतश्च संपर्षत ॥ दूरे दृशे देवता  
 ताव के तदि वसुत्रो य सूर्या यशश्च सत ॥ ३५ ॥ वसुता स्योत्तमनम् ॥ वसु



तादेनमसि वतुतास्यस्व सुसज्जीनीस्थो वतुतास्यः अतसदन्त्यसि वतुतास्यः  
 अतसदन्त्यसि वतुतास्यः अतसदन्त्यमासीद ॥३६॥ याते ॥ याते धामा निह  
 विष्वा प्रजापतिताते विश्वपति त्वत्सु सुप्र ॥ गान् स्फान ४ पुतनरा ४ सुवनि  
 वीर हाप्पवना सोमदुर्ध्यान् ॥३७॥ ॥ अग्नेस्तनू ४ ॥ इति वतुर्ध्या  
 म ४ ॥४॥ ॥ अग्नेस्तनू रसि विष्म वेत्वा सोम स्यतनू रसि विष्म वेत्वा ति  
 येनानिथ्य मसि विष्म वेत्वा श्येना दत्वा सोम त्वत् विष्म वेत्वा गन्धे वा वस्यो १५  
 रावस्यो व देविष्म वेत्वा ॥१॥ अग्ने ज्जीति त्रम ॥ अग्ने ज्जीति त्रमसि वृष  
 तोस्यः ३ वृषसि स्यादु रसि पुनू रवाः असि ॥ गान् त्रेतात्वा सुन्द  
 मान् यामि जैसरे वत्ता दान् सामा गति ता गते न वा सो न्द मा मन्ता



20

20

मिन्द्रोदेकधनविदे॥ आलुभ्यमिन्द्र॥ पादतामात्वमिन्द्राजपादस्व॥ आपाद  
 सुखात्सखीन्सुभ्यामेधयास्वस्तितेदेवसोमसुत्यामशीम॥ एषानाद॥ प्रे  
 वेतमोयः॥ अतस्तवादिभ्योनमोद्यावाएथिवीस्त्राश॥ १॥ पाते॥ अग्नेय॥ श  
 दातनू॥ वृ॥ विष्ठाग॥ क॥ ने॥ छा॥ ॥ ३॥ ग्ग॥ स्व॥ वोऽ॥ अपावधीत्वे॥ म॥ व॥ वोऽ॥ अपावधी  
 स्वाहा॥ पातेऽ॥ अग्नेय॥ ३॥ श॥ दातनू॥ वृ॥ विष्ठाग॥ क॥ ने॥ छा॥ ॥ ३॥ ग्ग॥ स्व॥ वोऽ॥ अ  
 पावधीत्वे॥ म॥ व॥ वोऽ॥ अपावधीत्वाहा॥ पातेऽ॥ अग्नेरुनिशु॥ दातनू॥ वृ॥ विष्ठा  
 ग॥ क॥ ने॥ छा॥ ॥ ३॥ ग्ग॥ स्व॥ वोऽ॥ अपावधीत्वे॥ म॥ व॥ वोऽ॥ अपावधीत्वाहा॥ ॥ ४॥ त  
 प्रादनीमे॥ तप्रादनीमेसिद्धितोदनीमेस्पवतान्मानाधितादवतान्माव  
 त्पि॥ विदेदग्निर्नोतामाग्नेः॥ अ॥ ३॥ ॥ १॥ आ॥ दु॥ नानामोहिषोस्यामृथिद्या



नाम

मि॥२॥ ह. वत न॥ समन सा स च त सा व न प सा॥ वा स्य स्य हि धा शी वृ म्मा य ज प ति  
आ त वे द सो शि वौ न व त स्य न ॥ ३॥ अग्ना वग्नि श्वे न ति प्र वि ष्  
अ मी ता म्मु त्रो अ ति श स्ति पा वा॥ स न ॥ स्यो न ॥ सु य जा य जे ह दे वे ष्यो ह य थ स  
२ म प्र मु च्छु त्वा हा॥ ४॥ आप त वे त्वा॥ आप त वे त्वा प वि प त वे गृ ह्ना मि  
त नू नै वै शा वृ रा य श व्ने न ॥ अ जि ष्ठा य॥ अ नो धे व म स्य ना थै धृ व्य न्दे  
वा ना मो ज्ञे न ति श स्य ति रा स्ति पाऽ अ न ति श से न्य म अ सा स त्प मु प गे य  
थं स्वि ते मा य ॥ ५॥ अ ग्ने धृ त पा ॥ अ मे धृ त पा स्वे धृ त पा या त व त नू वि य थ  
सा म ति यो म त नू रे षा सा त्व दि॥ स ह नो धृ त प ते धृ ता न्य नु मे दी न्दी न्दी  
प ति न् न्वा ता म नु त प स्त प स्य ति ॥ ६॥ अ थ शु न थ शु ष्ठे । रू दे व सो मा य्या य ता



नुषक॥ ये यामिन्द्रो युवा सखा॥ उपयामगृहीतोस्य गीन्द्रा म्या न्त्वे यते यो निरगती न्द्रा  
 म्या न्द्रा॥ ३२॥ ॐ मा स स्वर्ग राती च तं ॥ ॐ मा स स्वर्ग राती च चृतो विश्वे देवा सः आगतं ॥  
 दा श्वाधं सो दा शुषं सुतम् ॥ उपयामगृहीतोसि विश्वे म्या स्त्वा देवे म्याः ए यते यो निर्वि  
 श्वे म्या स्त्वा देवे म्याः ॥ ३३॥ विश्वे देवा सः ॥ विश्वे देवा सः आगतं ॥ शुतामः ॥ ३४॥  
 हवम् ॥ ए दम्भ हि नि जी देत ॥ उपयामगृहीतोसि विश्वे म्या स्त्वा देवे म्याः ए यते यो निर्वि  
 श्वे म्या स्त्वा देवे म्याः ॥ ३५॥ इन्द्र मनु त्वं ॥ इन्द्र मनु त्वः इर पा हि सोम अथ शश्या नेऽ अ  
 पि मधु सुत स्य ॥ त व प्रणीती त व शू न शर्म ना वि वा स नि क व यं सु व ज्ञा ॥ उपयामगृ  
 हीतोसीन्द्रा यत्वा मनु त्वं तः ए यते यो निर्वि न्द्रा यत्वा मनु त्वं ते ॥ ३६॥ मनु त्वं न्त स्य मनु  
 म् ॥ मनु त्वं न्त स्य मनु त्वं व द्या न म क वा नि न्द्रि व्य थं शा समिन्द्र म् ॥ विश्वा सा ह म व  
 से नू त ना यो य थं स हो दामि रु त थं कु वि म् ॥ उपयामगृहीतोसीन्द्रा यत्वा मनु त्वं तः

३३

३३



यस्मिन्नेनामा मन्त्रं हि यत्वा सोमेनातीत्यम ॥ चर्चुवः स्वः सुप्रजाः प्रजातिः स्वां सुवी  
 नेवी वै सुपो वृषो वै ॥ २० ॥ उपयामगृहीतोसि मघं वेत्वोपयामगृहीतोसि मा  
 यवा यत्त्वोपयामगृहीतोसि शुक्लायत्त्वोपयामगृहीतोसि शुभेदेत्वोपयाम  
 गृहीतोसि न तसेत्वोपयामगृहीतोसि न तस्यायत्त्वोपयामगृहीतोसीवेत्वो  
 पयामगृहीतोस्युर्जेत्वोपयामगृहीतोसि स हसेत्वोपयामगृहीतोसि सह  
 स्यायत्त्वोपयामगृहीतोसि तपसेत्वोपयामगृहीतोसि तपस्यायत्त्वोपयामगृही  
 तोस्यधूहसस्यतदेत्वा ॥ ३० ॥ इन्द्राग्नीः आगतम् ॥ इन्द्राग्नीः आगतं सुतं  
 मिर्न्नेनो वरेत्स्यम् ॥ अस्य पातन्धिदेष्टिता ॥ उपयामगृहीतोसीन्द्राग्निस्मान्ते  
 यतेवो निविन्द्राग्निस्मान्ते ॥ ३१ ॥ आवा ॥ आवायेऽग्निमिन्धते स्तृणानि मर्हिना



सः २ नु ते दानं देवस्य २ यतः ॥ अदितेः स्यात्स्वा ॥ २॥ कदा वन ॥ कदा वन प्रमुद्युः सुते निपा  
सि जन्मनी ॥ तृतीयादित्य सर्व ननु ॥ इन्द्रिमा तं वस्था वमृतं दिव्यादित्ये स्यात्स्वा ॥ ३॥  
षष्ठो देवानां म॥ षष्ठो देवानां मृत्येति सुम्भुमादित्या सो त्रवता मृडयन्तः ॥ आवाहो  
वी सुमतिर्वैरुत्यादधु हो श्विद्या वं विवो वित्तया सदादित्ये स्यात्स्वा ॥ ४॥ विवस्व  
न्नादित्ये ॥ विवस्वन्नादित्ये षते सोमपीथस्तस्मिन्मत्वा ॥ स दस्मे नरो ववसे दधान  
नवदाशी द्वा दम्यती वाममश्नुतः ॥ पुमान्पुत्रो ज्ञानते विन्दते वस्वधा विश्वारूप  
पः ॥ अते मृते ॥ ५॥ वाममद्या सवितर्धाममुश्वोदिविदि वे वाममस्मश्रु सावी ॥  
वामस्य हिन्दवस्य देव नृनेत्रा घिया वामता जक्ष्माम ॥ ६॥ ॥ कंडिकाशत ॥ ३०० ॥  
उपवामगृहीतोसि सावित्री सिवतो धारदेतो धाः असिन्नो मयि धिहि ॥ जिन्य  
स्य अन्नं वषस्पतिः स्यात्मा देवा जन्ता सवित्रे ॥ ७॥ कंडिकाशत ॥ ३०० ॥ उपवामगृही

३५



सा द्वातादेवत्रागच्छतप्रदातात्रमाविशत॥४६॥ अग्नयेत्यामस्यसुतो  
ददातुसोमृतत्वमशीदायुर्द्वित्रः एधिमयोमह्यप्रतिग्रहीत्रेउत्रायत्तामस्यसुतो  
ददातुसोमृतत्वमशीदप्राणोदात्रः एधिवयोमह्यप्रतिग्रहीत्रेमृतत्वम  
स्यसुतोददातुसोमृतत्वमशीदत्वग्दात्रः एधिमयोमह्यप्रतिग्रहीत्रेधमा  
यत्तामस्यसुतोददातुसोमृतत्वमशीदहयोदात्रः एधिवयोमह्यप्रतिग्रहीत्रे  
॥४७॥ कोदात्र॥ कोदात्कस्माः अदात्कामोदात्कामोदादात्र॥ कामोदाता॥ कामो  
तिग्रहीताकामैतत्ते॥४८॥ ॥ उपव्यामर्गहीतोसि॥ ॥ इति सप्तमोऽध्यायः॥७॥  
उपव्यामर्गहीतोस्यादित्ये मयस्त्वा॥ धिक्काः उत्रायेषेतसोमस्तथैव स्वमात्वा  
तत्र॥१॥ कदाचन॥ कदाचनस्तानीसिनेतु सश्वसिदाशुषे॥ उपोपेन्नुमवृत्त



न सो व द ज न म स्या त्म वे त स्ये न सो व द ज न म स्ये न सः ए त सो व द ज न म सि ॥ य शो ह मे नो  
 वि द्रो श्च का न व द्रा वि द्रो श्च स्य स व स्ये न सो व द ज न म सि ॥ १३ ॥ स स्र च्छे सा । प द सा  
 स न नू त्रि न ग न्म हि म न सा स थ शि वे न ॥ त्व ष्टा सु द त्रो वि द धा तु रा मो नु मा र्छु त  
 न्वो ष दि लि ष्ट म ॥ १४ ॥ स मि न्द्र ॥ स मि न्द्र गो म न सो ने षि गो त्रि ध स थ सु नि त्रि म्म व  
 व न्म थं स्व स्था ॥ स म्प्र स्त रा दे व वे त थ द सि स न्दे वा ता थ सु म तो य जि द्वा ना थ स्वा  
 हा ॥ १५ ॥ स स्र च्छे सा । प द सा स न नू त्रि न ग न्म हि म न सा स थ शि वे न ॥ त्व ष्टा सु द त्रो  
 वि द धा तु रा मो नु मा र्छु त न्वो ष दि लि ष्ट म ॥ १६ ॥ धा ता रा ति श्च । स वि ते द भु य न्ता  
 म्पु रा प ति नि धि पो द वो ऽ अ जि श्च ॥ त्व ष्टा वि ष्णु ष प्र ज षा स थ रा णा य ज मा ना य  
 द्र वि रा न्द धा तु स्वा हा ॥ १७ ॥ सु गा व श्च ॥ सु गा वो दे वा ष स द ना ऽ अ क र्म ष थि आ ज ग्मे  
 द थं स व न भु या ता ष ॥ त न मा ता व ह मो ना रु बी थ थ्य स्मे य त व स वो व मू ति स्वा हा ॥ १८ ॥  
 वि

३६

३६



५५  
 तोसि। सुशर्मासि सुप्रतिष्ठानो मृहदुन्दा कानमध॥ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः स्त्वा देवेभ्यः  
 ऽ एष ते वो निर्वृतिं श्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ॥ ८॥ उपव्यामगृहीतोसि। मृहस्पतिं सुतस्य देवसो  
 मतः इन्द्रो विन्द्रिया वतश्च पत्नी वतो गग्रही ॥ ९॥ अद्यासस्य॥ अहस्पतस्तो दहमवस्ता  
 द्यदन्तविन्दुन्तदुमेपितान् ॥ १०॥ अहधूर्यस्य सुतस्य तो ददशी हन्ते वानां मयत्रमदुहाम  
 त् ॥ ११॥ अग्न्या ३ इ पत्नी वन् ॥ अग्न्या ३ इ पत्नी वन्स जुह्वेन त्वष्टा सोमं निष्प  
 स्वाहा ॥ प्रजापतिर्देषासिने तो धावेतो मधि धेहि प्रजापते स्ते वृक्षो वेतो धसो वेतो धा  
 मशी य ॥ १२॥ उपव्यामगृहीतोसि। हविस्सि हविषो जुनो हविष्यान्वा ॥ हर्षो धीन  
 स्थं सहसो माऽ इन्द्रो वा ॥ १३॥ यस्ते ॥ अश्वसनि क्षुर्मुन्दा योगो सनिस्तस्य तः इष्ट  
 न जुमस्तु तस्तो मस्य शस्तो न्यु रेन तस्यो परतो नन्दयामि ॥ १४॥ देव वृत्तस्येन  
 स ॥ देव वृत्तस्येन सो वयं जनमसि मनुष्य वृत्तस्येन सो वयं जनमसि पितृ वृत्तस्येन



३८

३८

प्राममृतीतोसि॥उपवाममृतीतोस्यग्नयेत्वागायत्रेष्टुन्दसङ्कलामिन्दायत्वाविष्टुन्द  
 सङ्कलामिविश्वेभ्यस्त्वोदेवेभ्यो॥३॥गष्टुन्दसङ्कलाम्यनुष्टुप्तेनिगवथा॥४॥वृशी  
 नान्वा॥वृशीनान्वापत्मनाधूतोमिकुकूननातन्वापत्मनाधूतोमितन्दनानान्वा  
 पत्मनाधूतोमिमदिनमानान्वापत्मनाधूतोमिमधुनमानान्वापत्मनाधूतोमि  
 शुक्रन्वाशुक्लेऽआधूतोम्यक्तानूपेसूर्यस्पृशिमकु॥४॥केकुतर्धुपश॥वद  
 तर्धुपश्वत्तस्येनोचतेमृहष्टुक्केष्टुक्केस्युगो॥गाधोमसोमस्यपुनोगा॥यत्ते  
 सोमादाभ्यन्नामजागृवि तस्मैत्वागृह्णामितस्मैतेसोमसोमाधुस्वाहा॥४॥उशिक्ष  
 म॥उशिक्षेन्देवसोमाग्नेऽप्रियम्याथोपीदिवशीत्वेन्देवसोमेन्द्रस्पृष्टम्याथोपी  
 ह्यस्मत्सखात्वेन्देवसोमविश्वेयान्देवानाम्प्रियम्याथोपीदि॥५॥इहवति॥इ  
 हवतिविरुचमिहधृतिविरुचस्वधृति॥स्वाहा॥उपसृजन्धुताम्मात्रेयकुलोमात॥



निश्चयं यत्वा आजायते ॥ ४१ ॥ अत्रिगुणं कलशं यत्वा विशन्ति न्यतः ॥ पुनरुज्जीवि-  
 त्तिष्ठानं सहस्रं न्युद्धो नुधा नापयस्वती पुनर्या विशता द्वाविंशति ॥ ४२ ॥ इडेनने ॥ इडेन-  
 नेह ये काम्ये चन्द्रे ज्योतिरिति सनस्वतिमहि विशुति ॥ एतातेऽअधोनामानि देवेभ्यो  
 मासु कृतं श्रुतात् ॥ ४३ ॥ विनष्टं ॥ विनष्टं इन्द्रमृधो जहि नीचाय द्युष्टं तन्यतः ॥ योऽअ-  
 स्माऽअत्रिगुणं सत्यध्वं नृमया तमः ॥ उपजामगृहीतो सीन्द्रा यत्वा विश्वं एष ते  
 यो निविन्द्रा यत्वा विश्वं ॥ ४४ ॥ वावसातिम् ॥ वावसातिम् विश्वकर्मणामृतं ये मनोजु-  
 वन्मातेऽअथाऽवेन ॥ सतो विश्वातिरुवन्तानि जोषद्विश्वशस्त्रं न वसेसाधुका-  
 र्म्मा ॥ उपजामगृहीतो सीन्द्रा यत्वा विश्वकर्मणामृतं ये निविन्द्रा यत्वा विश्व-  
 कर्मणामृतं ॥ ४५ ॥ विश्वकर्मणामृतं विषा ॥ विश्वकर्मणामृतं विषा नर्द्धनेन आतानमिन्द्रम-  
 र्णो न वधाम ॥ तस्येवि ॥ ४६ ॥ समनमनपूद्दी नृसुग्यो विहव्यो यथासतः ॥ उपजाम-  
 गृहीतो सीन्द्रा यत्वा विश्वकर्मणामृतं एष ते यो निविन्द्रा यत्वा विश्वकर्मणामृतं ॥ ४६ ॥ उप-



म

स्त्रीणि ज्ञेयानि वि सव ते सवो दुशी ॥ ३६ ॥ इन्द्रश्च। सम्प्रापु उता जातोते त न्द थै व  
 रग्गाः एतौ ॥ तयो न ह मनु तन्ने स न्ने वा मि वाग्दे वी जु पाणा सोमं स्पृष्ट्वा उ स ह प्यापो न स्वा  
 हो ॥ ३७ ॥ अग्ने पदं स्तु। स्वपाः सु से व र्चैः सु वीर्यम् ॥ ३८ ॥ इन्द्रि म्म लि पो व म् ॥ उप द्या म गृही  
 तो म्पु गृहे त्वा व र्चैः ॥ ए व ते वो नि न्म न्ने त्वा व र्चैः ॥ अग्ने व र्चैः स्वि न्ने र्चैः स्त्वि न्दे वे ष्व  
 सि व र्चैः स्वि न ह म्म नु म्पु ष्ट ह या स म् ॥ ३९ ॥ उ ति ष्ट नो ज स ॥ उ ति ष्ट नो ज स स ह पी त्वी शि  
 ष्यैः अ वे प स ॥ सोम मि न्द्र व म्पु सु त म् ॥ उप द्या गृही तो सी न्द्रा त्वो ज स ॥ ए व ते वो नि नि न्द्रा  
 त्वो ज स ॥ इन्द्रो जि ष्यो जि ष्ट स्त्वि न्दे वे ष्व स्यो जि ष्यो ह म्म नु म्पु ष्ट ह या स म् ॥ ४० ॥ अ व  
 श म स्यु के त वो वि न् श म ष्यो ज ता ॥ ४१ ॥ त्वा ज न्नोऽ अग्ने दो व या ॥ उप द्या म गृही तो  
 सि स्र यो य त्वा म्पु जा ये ष ते यो नि ष्र यो य त्वा म्पु जा य ॥ सूर्य म्पु जि ष्ट म्पु जि ष्ट स्त्वि  
 न्दे वे ष्व सि स्र जि ष्यो ह म्म नु म्पु ष्ट ह या स म् ॥ ४२ ॥ उ डु त्य म् ॥ उ डु त्य न्ता त वे द स न्दे द  
 स ह नि के त व ॥ दृ शे वि श्वा य सूर्य म् ॥ उप द्या म गृही तो सि स्र यो य त्वा म्पु जा ये ष ते यो

३६

३७



दीमृषापदी सुव नानुप्रथनां स्थास ॥ ३० ॥ मनुतो वस्य ॥ मनुतो वस्य हिन्द येन थोदि  
 वो विमह सश ॥ स सु गोपात मो ज न ॥ ३१ ॥ मही द्यो ॥ मही द्यो ॥ पृथिवी च नः इ म अ ज  
 मिमिन्दता म ॥ पि ॥ पु तानो न नी म मि ॥ ३२ ॥ आति छा व व रु भ्र थ अ न्ता ते म्भ निगा  
 हनी ॥ अर्वा वी न थु सु ते म नो ग रा वा ह गो धे म्भु ना ॥ उप ज्ञा म गृ ही तो सी न्द्रा य त्वा षो डु शि  
 नः ॥ ए य ते यो नि नि न्द्रा य त्वा षो डु शि ने ॥ ३३ ॥ सु न्द्रा हि ॥ सु न्द्रा हि के शि ना रु नी व ष रा वा क  
 क्षा प्प ॥ अ यानः इ न्द्र सो म पा ॥ गि ना सु प श्रु ति अ न ॥ उप ज्ञा म गृ ही तो सी न्द्रा य त्वा  
 षो डु शि नः ॥ ए य ते यो नि नि न्द्रा य त्वा षो डु शि ने ॥ ३४ ॥ इ न्द्र मि त्वा ॥ इ न्द्र मि द्ध नी व रु तो प्प  
 ति च य श व स म् ॥ म यी रा अ स्तु ती नु प य ज्ज अ म नु षा रा म् ॥ उप ज्ञा म गृ ही तो सी  
 न्द्रा य त्वा षो डु शि नः ॥ ए य ते यो नि नि न्द्रा य त्वा षो डु शि ने ॥ ३५ ॥ य स्मा नो ज्ञा त ॥  
 प नोऽ अ न्योऽ अ स्ति यऽ अ वि वे श भु व ना नि वि श्वा ॥ प्र ज्ञा प ति ॥ प्र ज्ञा स थ न रा







50







॥५६॥ विश्वेदेवाऽऽशु शुक्लुः सोविष्णुः प्रीतमऽऽप्यायमातोयमऽसूयमाने  
 विष्णुऽसम्पिद्यमातो वासुऽपूयमान शुक्लऽपूतऽशुक्लऽन्दी नशीर्मन्थी संकुश्री  
 विश्वेदेवाऽऽ॥५७॥ विश्वेदेवाश्चमसेयुनी तोसुहमायोद्यतो कुद्रोहयमानो वातो  
 त्यावृत्तो नृवन्दाऽप्रतिक्वातो तन्दो तन्दामाराऽपित गो नाशऽशुसाऽस  
 नऽसिन्धुऽव नृधायाऽ॥५८॥ सिन्धुऽव नृधायाद्योद्यतऽसमुद्रोऽप्यवद्विद्यमान  
 गाऽसलिलऽप्रहृतो यद्यो गोऽसास्कृतिता नृगा सास्कृतिता नृगा सिन्धो योनि  
 प्रीतमाश विष्णुऽ॥५९॥ यापत्येतेऽअप्रतीता साहो निर्विष्णुऽअगन्ध नृगा पूर्वह  
 तोऽ॥६०॥ देवान्दिवम् देवान्दिवम् गन्ध नृगास्तो माद्विष्णु मयु पितृ नृधि वीमगन्ध नृगास्तो माद्वि  
 त्तिन्दमगन्ध नृगास्तो माद्विष्णु मयु पितृ नृधि वीमगन्ध नृगास्तो माद्वि  
 त्तिन्दमयु पितृ नृधि वीमगन्ध नृगास्तो माद्विष्णु मयु पितृ नृधि वीमगन्ध नृगास्तो माद्वि



चतुर्विंशतन्तर्कोयेवितस्त्रिंशदः सञ्चतुं स्वध्यादद ॥ तेषां चित्तं नृसम्ये  
 तदध्यामिस्वाहा वृत्तमोऽञ्ज - ये तु देवान् ॥ ६१ ॥ यज्ञस्य दोहः ॥ यज्ञस्य दोहो वित  
 तः पुत्रुजासोऽमृधादिव मन्वा तता ॥ सयज्ञा पुन्ध्र महिमे प्रजाया च ॥ नक्षत्रो  
 यन्निश्वमाक्षु रशीय स्वाहा ॥ ६२ ॥ आपवस्व ॥ आपवस्व हि न ह्यव द श्वत्तसोम  
 जीव वर ॥ वाजङ्गे मत्तमान्न स्वाहा ॥ ६३ ॥ ॥ देवसवितः ॥ ॥ अक्षमो व्याधः ॥  
 ॥ ६४ ॥ ॥ देवसवितः प्रसुवयस्य म्रसुवयस्य पति स ॥ गाय ॥ दिव्यो गन्धर्वः  
 केतुः केतनः पुनातु वारस्यति वी जन्तुः स्वदतु स्वाहा ॥ १ ॥ ध्रुवस दक्षा ॥ ध्रु  
 वस दक्षान्ते पदे मन्तः सदमुप द्याम गृहीतो सिन्ध्रा यत्वा जुष्टं गृह्णात्यथ  
 ते यो नि निन्ध्रा यत्वा जुष्टं तमश्नु ॥ अमुं पदं दक्षो वृत्तं स दक्षो मस दमुप द्याम  
 गृहीतो सिन्ध्रा यत्वा जुष्टं गृह्णात्यथ ते यो नि निन्ध्रा यत्वा जुष्टं तमश्नु ॥ एधिविस



संहिता

दत्त्वा न निन्द स रन्दि वि स द न्दे व स द मुप द्वा गृही तो सी न्द्रा य त्वा जु ष्ट ऊ क्त सु ष  
 ते यो नि पि न्द्रा य त्वा जु ष्ट त म म ॥ २ ॥ अ पा थं र स म ॥ अ पा थं र स मु ष्ट स थं सृ ष्य स  
 त्थं स मा हि त म ॥ अ पा थं र स स्य षो न स स स्यो गृ ह्ण म्पु त्त म मु प द्वा म गृ ही तो सी  
 न्द्रा य त्वा जु ष्ट ऊ क्त म्पे य ते यो नि पि न्द्रा य त्वा जु ष्ट त म म ॥ ३ ॥ गृ ह्णो ऽ क्त जी क्त  
 स ॥ गृ ह्णो ऽ क्त जी क्त त द्यो य नो वि प्रो य म ति म ॥ ते षा म्बि शि पि पि न्द्रा य त्वा ह मि  
 ष्ट म्पु ज्जै ष्ठ स म गृ त्त मु प द्वा म गृ ही तो सी न्द्रा य त्वा जु ष्ट ऊ क्त म्पे य ते यो नि पि  
 न्द्रा य त्वा जु ष्ट त म म ॥ स म्पु यो स्थ ४ स म्मा न्दे ता ए ष्ठ म्बि ष्ठ यो स्थो वि मा पा य  
 ना ए ष्ठ म ॥ ४ ॥ इ न्द्रे स्य व ज्जै ४ इ न्द्रे स्य व ज्जै सि वा ज्ज मा स्त द्वा य म्वा ज्जै  
 से र ॥ यो ज्जै स्य नु प्र स वे मा त र म्म ही म दि ति न्ना म व व सा क र म हे ॥ य स्या मि द  
 श्वि श्व म्बु व न मा वि वे श त स्या नो दे व ४ स वि ता थ र्म सा वि य त ॥ ५ ॥ अ म्बु त ४ ॥

३

॥ ४१ ॥

॥ शिव ॥

॥ ४१ ॥



This image shows a blank, aged, cream-colored page, likely an endpaper or flyleaf of a book. The paper has a slightly textured appearance with some minor discoloration and faint smudges, characteristic of old paper. A small tear is visible near the top left corner. The binding edge on the left is visible, showing the stitching or glue of the book's spine.

112











अनायदग्निमात्रं जन्तुपथं ॥ २३ ॥ उशिक्षावकोऽ उशिक्षावकोऽ अनुतिः सुमेधामते  
 ष्वग्निरशतो निधायि ॥ इत्यर्तिधु यमउदत्तं शुद्धं शुद्धं शोचिमाद्यामिनन्दनं ॥  
 २४ ॥ दशानोउक्तं ॥ दशानोउक्तं ॥ उर्वाद्यो दुर्मर्मास्तुः शिष्येउवाने  
 अग्निरुपेतोऽ अतवद्धयोतिर्यदेन न्योयतनमत्सुनेतां ॥ २५ ॥ यस्तः ॥ अद्य  
 कृतावद्धदशोवेपूपन्देव छतवन्तमग्ने ॥ प्रतनन्तप्रतनन्तस्योऽ अद्यातिसु  
 मन्देवतन्तव्यविष्णु ॥ २६ ॥ आतम ॥ आतमज्ञसौश्रवसेष्वग्नः उत्थः उत्थः  
 आतज्ञशस्यमाने ॥ प्रियः सुषे प्रियोऽ अग्नान्तवात्सु जातेन तिनदुः ॥ २७ ॥  
 नित्यैः ॥ २८ ॥ त्वामग्ने त्वामग्ने यज्ञमानाऽ अनुधून्विष्वक्वसुदधियेवाय्याणि ॥  
 त्वया सह द्रविणमिच्छमाना ब्रुज्जोमन्तमुशितो विवब्रु ॥ २९ ॥ अस्ताद्या  
 ग्निः ॥ अस्ताद्याग्निर्ननाथं सुशेवो वैश्वानरऽ त्रिषितिः सोमगोपाः ॥ अद्वेषया

५२

५२



59

मन्त्रः  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



॥ श्रीगणेश ॥

पुतिता

٤٥

[illegible]



61



स न यो विज्ञा ब्रह्मे सा ते सुयति मूर्त्तये ॥ ५१ ॥ अयने ॥ अयने यो नि र्मति कोषतो जातो  
अयो व था ॥ त आ न भे गुः आ नो ह थो नो व र्द्ध या न मिम ॥ ५२ ॥ विद सि ॥ विद सि  
त को दे व त या द्वि न स्व दु वा सी द प त्रि वि द सि त को दे व त या द्वि न स्व दु वा सी द ॥ ५३ ॥  
लो क मृ ता ॥ लो क मृ ता द्वि ॥ द्र मृ ता यो सी द दु वा त्वे य ॥ इन्द्रा ग्नी त्वा मृ ह स्प  
ति न सि न्नो ना व सी व द न ॥ ५४ ॥ ताऽ अ स्प ॥ ताऽ अ स्प स द दो ह स ३ सो म थं श  
॥ ५५ ॥ ता नि ए श न्न य ३ ॥ ज न्मे न्दे वा ना न्नि श सि ब्वा नो न्ने दि व ३ ॥ ५५ ॥ इन्द्र मि श्वा ३ ॥  
इन्द्र मि श्वाऽ अ वी र ध न्स मु द्ध वा व स द्धि न ३ ॥ न थी त म धु न थी ना म्ना जा ना थ ॥ ५६ ॥  
स त्प ति म्प ति म् ॥ ५६ ॥ स मि त म् ॥ स मि त थु स द्ध ॥ त्वे था थं स मि पि नो ॥ नो वि द्धु स  
सु य न स्प मा नो ॥ इ ष म् जै म ति स म्भ सा नो ॥ ५७ ॥ स म्भ वा ३ ॥ स म्भ म ना थ सि स द्धु  
ता स मु वि ता न्ना क न म् ॥ अ ग्ने पु नी ष्या धि पा त व त्व न् ३ इ ष म् जै म्भ त मा नो

र

६१

६१



63

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



संहिता सप्त निवेदविश्वतः॥ ६४॥ यन्त्रे॥ यन्त्रे देवी निर्मिता ममन्ध पाशग्रीवास्त्वे विरुत्त  
त्यम्॥ तन्त्रे विद्याम्पाद्युषोनमद्वा दधे तस्मिन्नु मन्त्रि प्रसूतः॥ नमो नमो ये  
आकाश॥ ६५॥ निवेशनः सुक्रमतः॥ निवेशनः सुक्रमतो वसुनामिश्वानूपाति  
वयेश्वीति॥ देवः इव सविता सत्यधर्मन्द्रानतस्थो समनेपथी नाम॥ ६६॥  
सीतायुञ्जति॥ सीतायुञ्जति कुवदो मुगा चित्तं न्वते पृथक्॥ धीरीदेवेषु सु  
मूपा॥ ६७॥ युनक्त सीता॥ युनक्त सीता विपुगातं नुध दूतेषो नो वपते हमी ॥ ६८॥  
जम्॥ गिराव सुष्टिः सचनो असतो ने दीयुः इत्युक्तं पद्मे दाता ॥ ६९॥  
शुनष्टं मु॥ शुनष्टं सुफाता विवृणु नू मिष्टं शुनष्टी नाशः अतिवन्त  
वोहः॥ शुना सीता हविषा तो शमाना सुपिपलाः अषधीः कर्तनास्मे ॥ ७०॥  
वृतेन सीता॥ वृतेन सीता मधुना समज्ज्यतामिश्वदेवी ननु मता मुक्तिः॥  
ऊर्जीस्व॥ मापि न्वमाना स्मानसी ते पयसा म्माववृत्स ॥ ७१॥ लागतम



65

30

३३

३१  
३४

३१  
३४













६३

[illegible]

٤٣



69

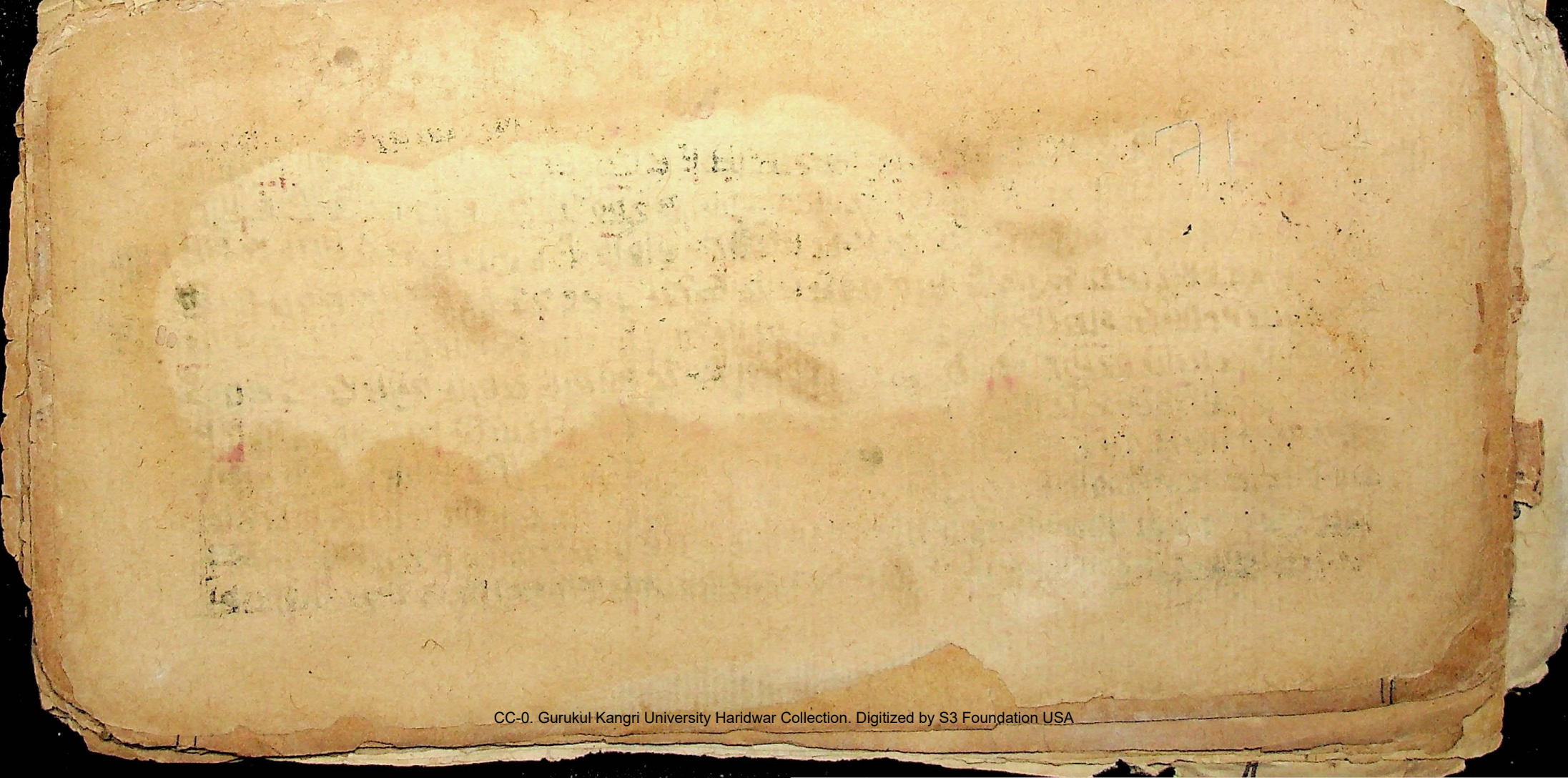
Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or letter. The text is faint and mostly illegible due to fading and bleed-through from the reverse side. It appears to be organized into several lines of prose.



त्वं यः सन्धुः निवर्षसश्चित्रो तपो वामता ता ४१०८॥ इत्युक्तं नृपे ॥ इत्युक्तं  
 नेप्रथमं स्वतन्त्रं त्रिंशत्संवायेऽत्रमर्त्ये ॥ सदृशं तस्य वपुषो विनाजसि दृष्टान्ति सान्  
 सिंक्रुतुम् ॥ १०८॥ इत्युक्तं त्रिंशत्संवायेऽत्रमर्त्ये ॥ इत्युक्तं त्रिंशत्संवायेऽत्रमर्त्ये ॥ इत्युक्तं त्रिंशत्संवायेऽत्रमर्त्ये ॥  
 महः ॥ रातिस्वामस्य सुतगायमहोमिषं नृधासिमानसिधुं नृधिम् ॥ ११०॥ अतावानमम  
 हियम् ॥ अतावानममहियं श्वदशतमग्निधुं सुम्मादधिनैपुनो जना ॥ १११॥ अतावानमम  
 सप्रथमं स्वतन्त्रं त्रिंशत्संवायेऽत्रमर्त्ये ॥ ११२॥ आप्यायस्व ॥ आप्यायस्व सप्त  
 ते विश्वतः ॥ सोमं दध्याम् ॥ तवावा जस्य सङ्गये ॥ ११३॥ सने ॥ सने पयोऽं सि स मुञ्च्य ॥ ६५॥  
 नृवाजा ॥ ससृष्ट्या निजिमातिमाह ॥ आप्यायमानोऽश्वतोऽसौ मदिध विश्व  
 वां सुत्तमानिधिम् ॥ ११४॥ आप्यायस्व ॥ आप्यायस्व मदिधुं सोमविश्वे त्रिंशत्सं  
 सिधुं ॥ तवान ॥ सप्रथमं स्वतन्त्रं त्रिंशत्संवायेऽत्रमर्त्ये ॥ ११५॥ आते ॥ वत्सो मनाय मत्पत्रमाञ्चित्स  
 धस्था ॥ अमेत्या द्वा मया गिरा ॥ ११६॥ तुभ्यन्ता ॥ तुभ्यन्ताऽश्वि न स मविश्वतः

॥ ६५॥











दिवः ककुत्सतिः एषि व्यासमम् ॥ अपाथे तां सिजि वृत्तिः ॥ उन्मस्य त्वौ जसा सादयामि ॥  
 १४॥ तुकोय नस्य ॥ तुकोय नस्य न सखनेता यत्रा निदुद्धिः ॥ सर्वसि शिवतिः ॥ दिवि मूर्धन  
 न्दधिषे स्वर्षा श्रिका मये वदयेह व्यावाहम् ॥ १५॥ ध्रुवासि ॥ ध्रुवासि ध्रुवा स्तता वि  
 खर्कर्मणा ॥ मात्वा समुद्रः उद्धधीत्मा सुपेर्मा द्यमाना एषि वीन्दुह ॥ १६॥ प्रजापति  
 व्यासि ॥ १७॥ त्रुनसि ॥ त्रुनसि त्रुमि नस्य धिति नसि विश्वधाया विश्वस्य तुवनस्य यत्री ॥ एषि  
 वीन्दुह एषि वीन्दुह एषि दाम्मा हिधसी ॥ १८॥ विश्वस्ये प्राणाया ॥ विश्वस्ये प्राणाया  
 नाना दद्यान् दानद प्रतिष्ठाये न नित्राय ॥ अग्नि द्याति पातुमद्या स्वस्था हृदि वा  
 यन्मनत द्यादेव तदा हि न स्वधु वासीद ॥ १९॥ काराडो काराडा त्रयोहती ॥ काराडो काराडा  
 त्रयोहती दनुमः पृथुपति ॥ एवानो दुर्वेषातनु सहस्रग शतेन वा ॥ २०॥ याशतेनाप्रतनो  
 दिवः हरेता विनोहसि ॥ तस्यासेदबी ऋके विधे महविष्ठा वदम् ॥ २१॥ यासेऽअने मे मूर्धे



उवोदिनात न्नतिरश्मि ति॥ नात्तिर्नोऽश्वसर्वा नीनु वे ज नो य न स्वधि॥ २५॥ याव॥ यावो  
 देवाः सर्वे नो गोष्ठे सुखा नुव॥ इन्द्राग्नीताति॥ सर्वा भी नुव नो य त न्ह स्प ते॥ २६॥  
 विनाङ्गोति॥ विनाङ्गोतिरथा न य त्स्वाङ्गोतिरथा न य त्स्वा॥ २७॥ प्रजापतिस्वासादय  
 तुष्टेष्टेष्टिमा ज्योतिष्मती॥ विश्वेमेष्टिमा ज्योतिष्मती॥ २८॥ प्राणापानास व्या नादा वि श्व उयो ति  
 र्यष्टु॥ अग्निष्टेष्टिपतिस्तदा देव तदा हि रस्व दु वासीद॥ २९॥ मधु श्व॥ मधु श्व मा  
 धव श्व वासन्ति कारुः अग्ने न न्तः श्लेष्मि क ल्ये ता न्धा का एधि वी क ल्ये ता मापः  
 ॥६॥ ॥६॥ ॥६॥ क ल्ये ता म ग्न यः ए थ म ज्ये द्यो य स द्वे ताः॥ यः अ ग्न यः स म नै सो  
 न ना द्या वा एधि वीः अ इ मे॥ वा सन्ति कारुः अत्ति क ल्ये मा नाः इ न्द्र मि वा दे वाः  
 अत्ति स मि श न्त म दे व त जा दे व त जा हि रस्व दु वे सी द त म॥ ३०॥ अ वा ठा सि॥ अ  
 वा ठा सि सह मा ना सह स्वा रा तीः सह स्व ए त ना य तः॥ स र्व वी र्यो सि सा मा जि न्वा ॥ ३१॥

॥६॥

विश्व



मधुवाता॥ मधुवाताः सतायते मधुन्द नृत्तिसिन्धुव॥ माहीर्नः सुखोषधी॥ २॥  
 मधुनक्त॥ मधुनक्तं मुतोषसो मधुमत्पार्थिवधुन॥ मधुघोत्रस्तुनः पिता॥ २॥ मधु  
 नक्त॥ मधुमातो दनस्यति नृपुमा॥ ३॥ स्तुसूर्य॥ माहीर्गोत्रवन्नुन॥ ३॥  
 पादः सन॥ अथाव सन्दी दमात्वा सूर्योत्तिता प्सीन्माग्निर्द्वै श्वान॥ अर्द्धिन्नप  
 त्राः प्रजाः शत्रु वीन्दु स्वानुत्वा दिव्या वृष्टिः सवताम्॥ ३॥ त्रीन्समुद्रान्॥ त्रीन्स  
 मुद्रान्समस्यत्स्वर्गा नपायति र्वेद्यतः २॥ कानाम्॥ पुत्री मन्मसा नः सुव तस्य तोके  
 तत्र गच्छुषत्रुर्वैपयेता॥ ३॥ मनीषो॥ पृथिवी वनः ३॥ मन्मसा नः सुव तस्य तोके  
 पिपृता नो तनीयति॥ ३॥ विष्णोः कर्मणि॥ विष्णोः कर्मणि पश्यत यतो ब्रतानि  
 पश्यते॥ ३॥ इन्द्रस्य ज्यः सखा॥ ३॥ ध्रुवासि॥ ध्रुवासि धनुषो तो जज्ञे प्रथममे  
 श्मोयो निष्मोः अधिजा तवेदा॥ सगाय त्रात्रिभु तानुभु ता वदे वेष्मो ह वस्म ह तुप्  
 तानन॥ ३॥ इषेनाये॥ इषेनायेन मस्व सहस्वे धुमाः ३॥ ऊर्जः आपत्याय॥ सम्प्राडा







सो देव तदा द्विः स्व दुवासीद ॥१२॥ ॥ वंडिकाशत १००॥ ॥ ना ज्ञासि ॥ ना ज्ञासि प्रवी  
 दि विना डसि दन्दिणा दिक्मभ्या डसि प्रती विदि क्त्वा राड सुदी वी दि गधि पत्य सि  
 श ह ती दि कु ॥१३॥ विश्व कर्मात्वा सा दयत्वे न विन्द स्पष्टे ज्योतिष्मतीम् ॥ विश्व  
 सो प्राणादायाना ज्ञात्वा ना ज्ञा विश्व ज्योतिर्विद्य ॥ वायुये धि पति स्तया देव तदा  
 द्विः स्व दुवासीद ॥१४॥ न तेश्व ॥ न तेश्व न तेषु श्व वार्षिका वृत्तः अग्ने न तेश्व  
 यो सि कल्पेता न्धावा पृथिवी कल्पेता मापः उषधसः कल्पेता मग्नयः पृथग् ॥१५॥  
 म ज्येष्ठा ज्ञासु द्वेताः ॥ येऽ अग्नयः समन सो न नाद्यावा पृथिवीः इमे ॥ वार्षि  
 का वृत्तः अति कल्पेमानाः इन्द्र मि वदेवाः अति समि शन्तु तदा देव तदा द्विः  
 स्व दुवासीद तम् ॥१५॥ इषश्व ॥ इषश्वो ज्ञेश्व शान दा वृत्तः अग्ने न तेश्व यो सि  
 कल्पेता न्धावा पृथिवी कल्पेता मापः उषधसः कल्पेता मग्नयः पृथग् म ज्येष्ठा

प्राव०



वयः१०२ मेष्ठी ह्युन्दो मस्तो वयः तश्चुन्दो ॥ २ ॥ सिर्वे जो विशालश्चुन्दः १ पुत्रो वयस्त  
 न्दश्चुन्दो व्यासो वयो नाधश्चुन्दः ३ सिधु हो वयश्चुदिश्चुन्दः ४ पठ वाधुयो म्ह  
 ती ह्युन्दः ५ उन्दा वयः ६ कुदुप्पुन्दः ७ जयतो वयः ८ सतो म्ह ती ह्युन्दो नहु न्वयः १॥ १॥  
 अन्तः न्वयः १ पङ्क्तिः श्चुन्दो धेनुर्वयो त्रगती ह्युन्दः स्या विर्वे य सिधुप्पुन्दो दित्य वाहु  
 जो विना हुन्दः १ पश्चा विर्वे योगा सत्री ह्युन्दः सित्तो सौ वयः ३ उप्ति कुन्दः स्तुष्य वाहु जो नु  
 पु ह्युन्दो लोक तोऽ इन्द्र म् ॥ १० ॥ इन्द्रा ग्नीः अयथमानाम् ॥ इन्द्रा ग्नीः अयथमानामि  
 म्हाका न्दः १ हतः सुवम् ॥ ११ ॥ एषे न द्या वा एथिर्वीः अन्त निन्दश्च मिमा धसे ॥ ११ ॥ विश्व  
 र्मात्मा ॥ विश्व कर्मात्मा सा ददा त्वन्त निन्दस्य एषे द्या व स्व ती म्प्रथ स्व ती मन्त नि  
 न्दश्च ह्युन्त निन्दे न्दः १ हान्ति निन्द म्माहि १ सी १ ॥ विश्व स्ये प्राणा पापा ना य द्या ना  
 यो दाना य प्रति द्या व व नि त्राया ॥ वाधु स्वात्ति पा तु म ह्या स्व स्या ह्युदि मा श न मे न त



79







स्तोमो मित्रस्य तागो सिव उगा स्याधिपत्यन्दिबो वृष्टिर्द्वा तस्य त ए क वि धु श स्तोमो व  
 सूना आग ॥ २५ ॥ व सूना आगो सि उगा गायमाधिपत्यश्च तुष्ण्यात्स्य तश्च तुर्द्धि धु श  
 स्तोमः आदित्या नो आगो सि म उता माधिपत्यं रू आ स्य ता ॥ २६ ॥ पश्च वि धु श स्तोमो दित्ये  
 तागो सि पूष्णः आधिपत्यं योजे स्य तन्त्रि ता व स्तोमो देवस्य स वितु र्मा गो सि मृत स्य  
 ते नाधिपत्यं धु सयी नीर्द्धि श स्य ता श्व तु व्योम स्तोमो यवाना आग ॥ २७ ॥ यवा  
 ना आ गो स्य यवाना माधिपत्यं मृता स्य ता श्व तु श्व ल्वा नि धु श स्तोमः म ह रणा म्ना  
 गो सि विश्वे षा न्दे वाना माधिपत्यं मृतं धु स्य तन्त्रि य सि धु श स्तोम ॥ २८ ॥ सह ५ सह  
 श्व सह स्य स्व हे म न्तिका वृ तः अग्ने न तः ॥ २९ ॥ श्लो यो सि क ल्प्ये ता न्धा वा ए धि वी  
 क ल्प्ये ता मा पः ॥ ३० ॥ अ म ध यः क ल्प्ये ता म ग्न यः ॥ ३१ ॥ ए य म्म ज्यै ष्या य स ज्ञे ता ॥ ३२ ॥  
 ॥ ३३ ॥ अ ग्न यः स म न सो न ना धा वा ए धि वीः ॥ ३४ ॥ हे म न्तिका वृ तः अ त्रि क ल्प्ये ता  
 नाः ॥ ३५ ॥ इन्द्र मि त्रे वाः अ त्रि स म्भि रा न्तु त या दे व त या द्भि न स्व दु वे सी द त म् ॥ ३६ ॥

५ सह

जलहं उगेर ४४ पृष्ठे







ज्य नवा सु रधि पति नासीत्स प वि थ श त्या सु वत द्या वा ए थि वी व्यो ता स्व स वो नु जाः आ  
 दि त्याः अ नु व्या र्थ स्तः ए वा धि प त यः आ स न्न व वि थ श त्या सु वत ॥ ३० ॥ न व वि थ श  
 त्या सु वत व न स्त त दो स ज्य न्न सो मो धि प ति ना सी दे क त्रि थ श ता सु वत प्र जाः अ स  
 ज्य न्न य वा श वा य वा श वा धि प त यः आ स स्त य सि थ श ता सु वत तू ता न्नो शा म्प न्न  
 जाः ति थ प न मे ष्य धि प ति ना सी लो क न्नाः ३ न्म ॥ ३१ ॥ ॥ अ ग्ने ज्ञा ता न् ॥ ॥ ३  
 ति ३ तु द शो द्या म ॥ ॥ १४ ॥ अ ग्ने ज्ञा ता न्न त्रु द न ४ स प त्ना न्न त्र्य औ ज्ञा ता न्न द  
 ज्ञा त वे द ४ ॥ अ धि नो म्भू हि सु म नः अ हे डं स्त व स्या म श र्म सि व रू थः ३ द्रो ॥ १ ॥ स  
 हे सा ज्ञा ता न् ॥ स ह सा ज्ञा ता न्न त्रु द न ४ स प त्ना न्न त्र्य ज्ञा ता आ त वे दानु द स्व ॥ अ धि  
 नो म्भू हि सु म न्न य मा नो व य थ स्या म प्र त्रु द न ४ स प त्ना न् ॥ २ ॥ षो ड शी स्तो म ॥ षो  
 ड शी स्तो मः ॥ ३ ॥ इ वि ता अ नु श्व लो वि थ शो व र्चो द्र वि त्म ॥ अ ग्ने ४ पु न्नी य म स्य

स्तोत्रे ॥



७५

नमो नमो मतीना वि शेषः ॥ अति गूढा नु दे वा ॥ सो नष्ट व्या हृत वती हती दप्य जा व दस्य  
 पुनिताय नस्य ॥ ३॥ एत रश्च न्द ॥ एत रश्च न्दो वति वरश्च न्द ॥ एत रश्च न्द ॥ एत रश्च न्द ॥ एत रश्च न्द ॥  
 एत रश्च न्द ॥ एत रश्च न्दो म न रश्च न्दो वति वरश्च न्द ॥ सि न्धु रश्च न्द ॥ समुद्र रश्च न्द ॥ तमि र  
 रश्च न्द ॥ के दु रश्च न्द ॥ का वी रश्च न्दो ॥ अक्षु पश्च न्दो न्द न पङ्क्ति रश्च न्द ॥  
 पङ्क्ति रश्च न्दो विष्ठा न पङ्क्ति रश्च न्द ॥ नु नो म्र त रश्च न्द ॥ आ वृ रश्च न्द ॥ ४॥ आ वृ  
 रश्च न्द ॥ प्र वृ रश्च न्द ॥ स म्य रश्च न्दो वि द रश्च न्दो मृ ह रश्च न्दो न य न्न रश्च न्दो नि का म ७५  
 रश्च न्दो वि वृ रश्च न्दो गि रश्च न्दो म्र त रश्च न्द ॥ स थ रश्च न्दो नु रश्च न्द ॥ ए  
 व रश्च न्दो वति वरश्च न्दो व म रश्च न्दो व म रश्च न्दो वि ष्य रश्च न्दो वि शा ल रश्च न्द  
 रश्च न्दो इ नो ह ता रश्च न्द स न्द रश्च न्दो ॥ अ का क रश्च न्द ॥ ५॥ न शि म नो स  
 त्या दा ॥ न शि म नो स त्या य स त्या जि न्द्र प्र ति ना ध म्म ता ध म्म जि न्द्रान्द्रि त्या दि



85  
यांति यो श्रीभृगु वासरे कह कने श्रीनखितारखपुर गि  
नारायण शीतीये माध्यंदिनी ब्राह्मध्यायिने यजुर्वेदपा  
कभट्ट श्री० तैक्ष्णजितात्मज गजीवनारखेन लिखित  
स्तु । स्वार्थं वापरार्थं ॥ कल्याणं भूयात् ॥ श्रीः ॥

मन्त्रः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्वृक्षशान्तिः सर्व्वे शान्तिशान्तिरेव शान्तिः शान्तिरेधि ॥५॥ इति श्रावणं गरुडजपः संपूर्णः ॥ शिवमस्तु सर्व्वजगतः श्री ॥ संवत् १८८१ प्रवर्त्तमाने शाके १९८१ प्रवर्त्तमाने रवौ उत्तरयने मधुमासे कृत्तिका पक्षे तृतीये



मतेष्वरुणो ब्रुत स्य धारोः अतितत्त्वने ॥ ८७ ॥ अश्वमेध ॥ अश्वमेध सुमुक्तिः य  
 माजिगुस्मासुते द्वा द्व विरानिधत्त इमश्वमेधमेधते देवतानो ब्रुत स्य धारामधुमत्प  
 वने ॥ ८८ ॥ धामने ॥ धामने विश्वस्त्व नमधि शित मन्तः संमुद्र ह धुत्त गधुषि ॥  
 अषामती के स मिथेयः आ नृत स म श्या म मधु मन्तः कुर्मिमा ॥ ८९ ॥ वा त श्व ॥  
 ॥ इति सप्तदशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ वा त श्व मे प्र स व श्व मे प्र स ति श्व मे प्र सि ति  
 श्व मे धी ति श्व मे द्वा तु श्व मे स्व त श्व मे श्लो क श्व मे श्रु व श्व मे सु ति श्व मे ज्यो  
 ति श्व मे स्व श्व मे य ज्यो न क ल्प ना म् ॥ १ ॥ प्रा ण श्व मे प्रा न श्व मे घ्रा न श्व मे  
 सु श्व मे वि त् श्व मे आ धी त श्व मे वा द्वा म म न श्व मे च न्दु श्व मे शो त्र श्व मे द न्द श्व  
 मे म त श्व मे म ह्ना न क ल्प ना म् ॥ २ ॥ ॐ ज श्व ॥ ॐ ज श्व मे स ह श्व मे आ त्मा व मे त न  
 श्व मे श र्म व मे व र्मा व मे ज्ञा नि व मे स्था नि व मे पृथ वि व मे श नी गा नि व मे आ धु



श्वमे जगत्तमेषु ज्येन कल्पना ॥ ३ ॥ ज्येष्ठश्च। मः आधिपत्यं च श्वमे मन्त्रश्च  
 के नाम श्वमे मन्त्रश्च श्वमे जे मा व मे महिमा व मे व प्रिया व मे प्रथिमा व मे धार्मि  
 मा रणि द्वा द्वि मा व मे वृद्ध श्वमे वृद्धि श्वमे वृद्धेन कल्पना ॥ ४ ॥ सत्यश्च। मे श्व  
 वने जगत्तमेषु ज्येन कल्पना ॥ ५ ॥ सतश्च। मे श्व  
 निष्पमाता श्वमे सुते श्वमे सुकृत श्वमे सुज्येन कल्पना ॥ ५ ॥ सतश्च। मे श्व  
 तं श्वमे सुन्दर श्वमे नामय श्वमे जीवा तु श्वमे दीर्घांशु त्वश्च श्वमे नमित्र श्वमे  
 तम श्वमे सुख श्वमे शमन श्वमे सुखा श्वमे सुदिन श्वमे सुज्येन कल्पना ॥  
 ६ ॥ यन्ता व ॥ यन्ता व मे यन्ता व मे न्द्रे म श्वमे धृति श्वमे विश्व श्वमे मह श्वमे स  
 मिष्टं मे तात्र श्वमे सुख मे सुख श्वमे सीन श्वमे तम श्वमे यज्येन कल्पना ॥  
 ७ ॥ शश्च। मे यम श्वमे प्रिय श्वमे नुकाम श्वमे काम श्वमे सौमनस श्वमे नग



म २

श्वमे ध्रुविताश्च त ॥ श्वमे यश्च मे वसीय श्वमे यश श्वमे यज्ञेन कल्पनाम् ॥ ८ ॥ उर्वैर्ज ॥  
 मधु नृ ताव मे पद श्वमे न स श्वमे ह्यु तश्च मे ध्रु व मे स र्हि श्वमे सपीति श्वमे वृ षि श्व  
 मे वृ षि श्वमे जे त्र श्वमः अदि द्य श्वमे यज्ञेन कल्पनाम् ॥ ९ ॥ नृ षि श्वमे । ता य श्व  
 मे पु ष्ठ श्वमे पु ष्ठि श्वमे । वि लु व मे पु लु व मे पू र्ति श्वमे पू र्ति त ग श्वमे दु म व श्वमे न्दि त  
 श्वमे न श्वमे नु ज्ञे मे यज्ञेन कल्पनाम् ॥ १० ॥ वि ल श्वमे वे द्य श्वमे त श्वमे त वि ष्य ज्ञ  
 मे सु ग श्वमे सु य ल्य श्वमेः सु द्र श्वमेः अदि श्वमे हृ ष्ठ श्वमे हृ ष्ठि श्वमे म ति श्वमे  
 सु म ति श्वमे व ज्ञेन कल्पनाम् ॥ ११ ॥ बी ह ष्ठ श्वमे य ता श्वमे मा णा श्वमे ति ला श्वमे सु  
 जा श्वमे ख ल्वा श्वमे पि प ज्ञ व श्वमे मे ता श्वमे श्या मा का श्वमे नी वा ता श्वमे  
 वृ मा श्वमे मृ सू ता श्वमे यज्ञेन कल्पनाम् ॥ १२ ॥ अ श्वा व । मे मृ ति का व मे गि न य  
 श्वमे य ह ता श्वमे सि के ता श्वमे व स्प त य श्वमे हि रा म य श्वमे य श्वमे मेश्या म श्व

न १







वा० र्यममिधेहि सतमसिमत्तममिधेहो ज्ञोस्यो ज्ञोममिधेहि मन्त्रु रसिमन्त्रु  
 ममिधेहि सहेसि सहेममिधेहि ॥ ८॥ वा व्याग्ब्रश॥ वा व्याग्ब्रमिधे चिको तो च  
 व अरन्दति॥ १०॥ येन मय तत्रिणा॥ सिधु ११॥ समम्यात्त्व १२॥ स १३॥ १०॥ यदापिपय॥  
 यदापिपे यमात रम्युत्र १४॥ अमुदितो धयन॥ एतत्त दग्नेः अन्त गो न वाम्यह तोपि  
 त नो मया॥ सम्पृ चस्थ सग्मा च देता एङ्क वि ए वस्त्र विमोपा प्य ना एङ्क ॥ ११॥  
 दे वा यज्ञश॥ दे वा यज्ञ सत न्वत ते षु रमिधे ज्ञा शिव ना॥ वा द्वा स न स्व ती त्रिष गिन्दा  
 येन्दि द्याणि दधत १२॥ दीन्दा ये नृ पश॥ दीन्दा ये नृ पशु श ष्याणि प्रा मणीय  
 सतो क्त्वा नि॥ क्रय स्प नृ पशु सोम स्प ता जा १३॥ सोम थ श वो मध ॥ १३॥ आतिस्था  
 नृ पमा स नम॥ आतिस्था नृ पमा स नम हा वी र स्प नृ ग १४॥ नृ पमु प स दा मे त ति  
 सोमा त्वी १५॥ सु रा सु ता ॥ १४॥ सोम स्प नृ पश॥ सोम स्प नृ पशु त स्प पी न सु त्प नि



92

[illegible]

903



जी वा पस्य गोचू मा ३॥ स न्नां नृप म्पदं नमुप वा को ३ क न म्पस्य ॥ २२ ॥ पद सो नृप म्प ॥  
पद सो नृप म्प द्वा द द्वा नृप द्वा द्वा नृप नि ॥ सोम स्य नृप म्प जित ५ सोम स्य नृप म्प मिन्द  
॥ २३ ॥ आ श्या बस ॥ आ श्या वसेति स्तो त्रिणा ३ प्रत्या श्या वा ३ अतु नृप ॥ ४ जेति धा य्या  
नृप म्प गा श्या वसेत नाम ता ३ ॥ २४ ॥ अर्द्धः सवे नृप म्प ता मा ॥ अर्द्धः सवे नृप म्प ता मा नृप  
म्पदं नृप म्प ति नि विदं प्र ता वे ३ श स्त्रा ता नृप म्प दस सोमः आ प्या यते ॥ २५ ॥ अ  
वि म्प म्प ता तः स व न म्प ॥ अ श्वि म्प म्प ता तः स व न मिन्द ता नृप म्प दान्दि न म्प ॥ वे  
नृप दे व ३ स न स्व त्पा तृ ती क्ष मा प्प थ स व न म्प ॥ २६ ॥ वा य वे द्वा य नि ॥ वा य वे  
द्वा य द्वा य न्मा प्प ति स ते न द्वा य व त श म्प ॥ कु म्प म्प म्प ता सु ते स्या ती ति स्या  
ती ति प्प ति ॥ २७ ॥ व त्ति नृप म्प ने ॥ व त्ति नृप म्प ने ग्प हा ३ ग्प ह सोमा श्व वि  
ता ३ नृप ति नृप म्प श स्त्रा ता सा म्प ता व त्ति यः आ प्या ते ॥ २८ ॥ इडा ति म्प न्दाना ॥



उडाभिर्मुन्ना नोप्नोति सुक्ते वा केना शिमः॥ शब्दु नापत्नी सभ्या ज्ञानसमिष्ट यजुषा  
 सुथं स्थाप्य ॥ २९ ॥ द्युतेन दीन्काम ॥ द्युतेन दीन्कामाप्नोति दीन्कयाप्नोति दन्दिताम ॥  
 दन्दितामश्न दामाप्नोति शुद्धया सत्यमाप्नोते ॥ ३० ॥ एतावदुपम ॥ एतावदुपम्यस्य  
 स्यपदे वैष्णवा कृतम् ॥ तदेतत्सर्वमाप्नोति यस्ये सो त्वामणी सुते ॥ ३१ ॥ सुग  
 वत्तम्मर्हि मदम् ॥ सुगवत्तम्मर्हि मदं सुवीर्य्य रथुहि न्वन्ति मर्हि वा नमो  
 ति ॥ दधोनाः सोमन्दि विदेवता सुमदे मेन्द्र्य्य जमानाः स्वर्काः ॥ ३२ ॥ यस्तो ॥  
 वस्तेन सः ॥ इतः उद्यधी सुसोमस्य शुक्लम् ॥ सुवद्या सुतस्य ॥ तेन जिह्व  
 यजमा तम्मदेन सवस्व नीमाश्विना विन्द्रमग्निम् ॥ ३३ ॥ यमश्विना ॥ यमश्वि  
 नान सुवेना सुगदधि सवस्वस्य सुनोदिन्द्रि जाम ॥ उमन्तं शुक्लम् धुमन्तामि  
 नुश सोमं ना ज्ञानमिह नन्दजामि ॥ ३४ ॥ यदत्र ॥ यदत्र विष्णु रसिनः सुत

१०४

१०४



CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



११०

नोर्ध्वं व्यज्येन ते त्रसेमलवर्धे साक्षात्तिमिथ्यामि सवस्वत्यै ते व्यज्येन वीर्यादा न्नाद्या  
 सात्तिथिश्चामीन्द्रस्येन्द्रियेणामहापरियेयैषशसेत्तिष्ठिश्चामि॥ ३॥ कोसि। वत  
 मोसिकस्मेत्वाकायत्वा॥ सुस्त्रोक् सुमङ्गलसत्यनातन॥ ४॥ शिरोमे॥ शिरो  
 मशीयैशो मुखन्त्रिषिः केशश्च स्मश्रूणि॥ नातामेप्राणोः अमृतं सुमन्त्रः  
 इन्द्रुर्ध्विनादुगात्रम्॥ ५॥ तिङ्कामे। न इन्द्राङ्गलेमनोमन्त्रुः स्वगाडाम॥ मोदाः  
 प्रमोदाः सुदुतीनङ्गानिमित्रमेसह॥ ६॥ माहूमे॥ माहूमेसहमिन्द्रियथ  
 हस्तोमेकमेवीर्यम्॥ आत्मापुनश्चमुनोमम॥ ७॥ एष्टीर्मे। नायुमुदन्म  
 सौग्रीवाश्चसोती॥ ऊरुः अत्रन्ती जानुनी विशोमेङ्गानि सर्वतः॥ ८॥ नानि  
 र्मादितमिन्त्यान म्पापुर्मपवितिर्भसत॥ आनन्दनन्दावाण्डोमेतगः॥ ९॥



नादुर्ध्वसादयतामिहत्वा॥ साकुलायिनीवृत्तवती॥ कुलायिनीवृत्तवतीपुरन्धिः स्थानेसाद  
 सदनैष्टयिष्या॥ अतिव्यानुद्रावसवोगरान्ति याम्भुलपीपिहिसोत्रगाद्याखिनादुर्ध्व  
 सादयतामिहत्वा॥ १॥ स्वेदं नैः ॥ स्वेदं नैः दं नैः पितेहसीद देवानां सुम्नेष्टतेनाया  
 पितेवैदिभूतवः आसुशवास्वावेशातन्वासमिश्रि स्वाश्विनादुर्ध्व सादयतामिहत्वा॥  
 ३॥ एष्टिष्या॥ पुत्रीमशः॥ एष्टिष्या॥ पुत्रीमशस्यप्सोना मतान्वो विश्वः अतिगृणान्दु  
 वा॥ स्तोमैष्टः वृत्तवतीहसीदप्प्रात्रावदस्मद्विष्णुयज स्वाश्विनादुर्ध्व सादयतामि  
 हत्वा॥ ४॥ अदित्यास्त्वा॥ अदित्यास्त्वाएष सादयाम्यन्ते पिन्दे स्पधत्री मिष्टमानीनि  
 शामधिपत्नी सुवनानाशः अर्मिदुप्साः आपामसि विश्वाकर्मोतः सविपंश्विनादु  
 र्ध्वसादयतामिहत्वा॥ ५॥ सुक्वश्वः॥ सुक्वश्वशुविश्व गैर्यमावर्तैः अग्नेनन्तः श्लोषो  
 सिक्वत्पतान्यावाष्टि वीक्वत्पतान्यामापः अषधयः कल्पन्तामग्नयः एष्टम त्रिष्टम  
 यस वृताशः यैः अग्नयः समनसोवाष्टि वीः इमे॥ गैर्यमावर्तैः अतिक्वत्पतान्या

यना



१४

५१







इति साहेतायाठसप्तविंशतिमोऽध्यायः ॥ होतायक्षत्वा होतायक्षत्समिधे  
 न्दमिडस्पृशेनाभापृथिव्याऽअधि ॥ दिवो बध्मन्ममिडा ॥ ७० ॥ जिष्ठ  
 श्रवर्षणीसहांवेत्वाज्ज्यस्य होतुर्वर्ज ॥ १ ॥ होतायक्षत्तु नृपानपातमृ  
 तिभिः ॥ होतायक्षत्तु नृपानपातमृतिभिर्जितारमपराजितम् ॥ इन्द्रदेव  
 स्वर्चिदम्पृथिविर्मधुमत्तमेर्नराश ७ सेनतेजसावेत्वाज्ज्यस्य होतु  
 र्वर्ज ॥ २ ॥ होतायक्षदिडाभिरिन्द्रम् ॥ होतायक्षदिडाभिरिन्द्रमीदितमाजु  
 हानममत्यम् ॥ देवोदेवैः सवीर्यो बज्रहस्तः पुरन्दरो वेत्वाज्ज्य होतुर्वर्ज  
 ॥ ३ ॥ होतायक्षद्वर्हिषीन्द्रम् ॥ होतायक्षद्वर्हिषीन्द्रं निषद्वरं वृषभनर्याप

स्य



दक्षसे॥ प्रथमं यममृतं ज्ञातवेदसं प्रियमिन्ननरी० सिधम्॥ ४२॥  
 पाहिनेः॥ पाहिनेऽग्निः एकथां पाल्युत द्वितीयया॥ पाहिगुर्जिस्ति  
 स्टमिस्तु ज्जाम्यते पाहिचतुस्तमिर्वसो॥ ४३॥ कुज्जो निपातम्॥ कुज्जो  
 नपात० सहिनायमस्मयुर्द्विरो महद्यदातये॥ भुवद्वाजेष्वाविता भुव  
 द्धुध० उत ज्ञातातनूनाम्॥ ४४॥ संवत्सरोसि॥ संवत्सरोसि परिवत्स  
 सोसीदावत्सरोसी द्वत्सरोसि॥ संवत्सरोसि॥ उषसो लोकल्यन्ताम  
 होरात्रा लोकल्यन्ताम ईमासा लोकल्यन्ताम मासा लोकल्यन्ताम  
 मृतवसे लोकल्यन्ताम॥ संवत्सरसो लोकल्यन्ताम्॥ प्रेत्याऽएतैः सञ्चा  
 न्देष्वरसारया॥ सुपर्णचिरं सतया देवतया जिरस्वभुवः सीद॥ ४५॥



द्य तस्त्वाहवामहे॥३६॥ त्वामिह। त्वामिहवामहे॥ सतौवाजस्यकारवः॥  
त्वां वृत्रेण्डुसत्यतिनरस्त्वाङ्गाष्टास्वर्गतः॥३७॥ सत्वम्। सत्वचश्चि  
त्रवज्रहस्तद्यष्टुयां महसंवा नोऽत्रिदिवः॥ गामाश्वेऽं रुथ्यो  
मिन्दुसङ्किरः॥ सत्रावाजुनजिग्युषे॥३८॥ कथानः। कथानश्चि  
त्रऽत्राभुवदुतीसुदार्धः सखा॥ कथाशचिष्ठयावृता॥३९॥ क  
त्वा सुस्योमदीनाम्मऽं हिष्ठोमत्सुदन्धसः॥ दुढाचिदरुजेव  
सु॥४०॥ अभाषुगः। अभाषुगः सखा नामविता जरितृणाम्॥  
शतम्रवास्तुतये॥ सुतायशावः। सुतायशोऽत्रुमयेगिरागिराचु य-



वम्बुर्हिरिन्द्रं सुदेवदेवैर्वीरवत्सीर्षी चैधामवर्द्धयत् ॥ वस्तोर्वृतम्राक्तेभृतं  
 रायावर्हिष्म तोत्यगाद् सुवनेव सुधेयस्य वेनुवज्र ॥ १२ ॥ देवी द्वीरः । देवी  
 द्वीरः इन्द्रं सद्वातेवी द्वीर्षीमन्नवर्द्धयत् ॥ आवत्सेनतरुणेन कुमारणे  
 त्वमीवतापार्वीणं रेणुककाटनुदन्तं वसुवनेव सुधेयस्य व्यन्तु य  
 ज ॥ १३ ॥ देवीऽ उषासानक्ते । देवीऽ उषासानक्तेन्दुं व्यज्ञेप्रयत्यङ्गे  
 ताम् ॥ देवीर्विराः प्रायासिष्टा सुष्पी ते सुधिते वसुवनेव सुधेय  
 स्य द्वातां यज ॥ १४ ॥ देवी जोष्टी । देवी जोष्टी वसुधिते तामिन्द्रमव  
 र्द्धताम् ॥ अयाद्यन्याद्या द्वेषां स्यान्त्याव सद् सुवाय्यतिः वज्रमानाय



104  
 होता वक्षस्वशरमिन्द्रम् ॥ होता वक्षस्वशरमिन्द्रं देवमिषजं ७ सुयज्ञं तुष्प्र  
 नयम् ॥ पुरु रूपं ७ सुरेतं मम धो नमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्राय ॥ १० ॥ वेत्ता ज्य  
 स्य होतव्यजं ॥ ११ ॥ होता वक्षस्व नस्यति ७ शमितारम् ॥ होता वक्षस्व नस्य  
 ति ७ शमितारं ७ शतक्रतुं न्ययो जोशरमिन्द्रियम् ॥ मद्वा समञ्जन्य  
 शिभिः सुगेभिः स्वदाति अंशं मधुना घृतेन वेत्ता ज्यस्य होतव्यजं ॥ १२ ॥ व्यप  
 होता वक्षस्विन्द्रं स्वाहा ॥ होता वक्षस्विन्द्रं स्वाहा ज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वा  
 हा स्तोका नां स्वाहा स्वाहा कतीनां स्वाहा हव्यं स कीनाम् ॥ स्वाहा देवाऽ  
 आज्यपाज्जं प्राणाऽइन्द्रऽआज्यस्य व्यतु होतव्यजं ॥ १३ ॥ देवम्बहिः ॥ दे



अथो० सरस्वतीं ज्ञानं सुमतीं गृह्णां न सुवने व सुधेयस्य चानुयजं ॥ १८ ॥  
 देवऽइन्द्रः ॥ देवऽइन्द्रो नराणां सस्त्रिवरुणस्त्रिवधुरो देवमिन्द्रमव  
 र्द्धयत् ॥ शतेन शितिष्ठाना माहितः सहस्रेण पृथक्ते मित्रा वणे द  
 स्य होत्रमर्ह तो बृहस्पतिस्तोत्रमश्विना द्वर्षवं व सुवने व सुधेयस्य च  
 तु यजं ॥ १९ ॥ देवो देवैः ॥ देवो देवैर्व नुस्पतिर्हि र एष पणो मधुशा  
 रवः सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्द्धयत् ॥ दिवमग्नेरासृक्षदात्तं रिक्षमृ  
 धिवीमदृ० ही द्व सुवने व सुधेयस्य चेतु यजं ॥ २० ॥ देवो देवैः ॥ देवमिन्द्रमव  
 र्द्धयत् ॥ वासिष्ठो देवमिन्द्रमवर्द्धयत् ॥ सासरण्यमिन्दुणा सन्नमन्या बर्ही ॥



शिखिते व सुवने व सुधेयस्य वीतां व्यज ॥ १५ ॥ देवीऽकुञ्जो हुती देवीऽकुञ्जो  
 हुती दुधे सुदुधे पयसेन्द्रमवर्द्धताम् ॥ इषमूज्जो मन्त्रा वक्षस्मिन् ॥  
 सपीति मन्त्रानवेन प्रवृन्द्यमाने पुरालेन नवमधाताम् ॥ मूज्जो हुतीऽकुञ्जो  
 यमाने व सुवाय्यलियजमानाय शिखिते व सुवने व सुधे  
 यस्य वीतां व्यज ॥ १६ ॥ देवा देव्या देवा देव्या होता राषि देवमिन्द्रमव  
 र्द्धताम् ॥ हुता घंश ॥ सावाजाष्टं व सुवाय्यलियजमानाय शिखि  
 तो व सुवने व सुधेयस्य वीतां व्यज ॥ १७ ॥ देवीस्तिस्त्रः ॥ देवीस्तिस्त्र  
 स्तिस्त्रो देवीः पतिमिन्द्रमवर्द्धयन् ॥ अस्पृष्टा द्वा रती दिव ॥ रुद्रे



ॐ ज्येष्ठ होतुर्गर्ज ॥ २४ ॥ होता यक्ष नूनपात सुद्धिदं ॥ होता यक्ष नूनपात  
 सुद्धिदं व्यङ्ग्यमिति दूधे च विमिन्दं च यो धसम् ॥ तुच्छिहृच्छन्दः इन्द्रि  
 यन्दित्यवाहङ्गां च यो दधु द्वेत्वा ज्येष्ठ होतुर्गर्ज ॥ २५ ॥ होता यक्ष हृदे न्य  
 माडितम् ॥ होता यक्ष हृदे न्यमाडितं हृत्तममिजा मिराडुं सहः सोम  
 मिन्दं च यो धसम् ॥ अनुद्धुतच्छन्दः इन्द्रियम्यन्वा विङ्गां च यो दधु द्वेत्वा  
 ॐ ज्येष्ठ होतुर्गर्ज ॥ २६ ॥ होता यक्ष त्सु बहिषम्पूषण्वतम् ॥ होता यक्ष त्सु  
 बहिषम्पूषण्वतम् ममर्त्युं सीदतम् बहिषि प्रिये मतेन्दं च यो धसम् ॥  
 बृहतीच्छन्दः इन्द्रियमिन्द्रियत्सङ्गावयो दधु द्वेत्वा ज्येष्ठ होतुर्गर्ज ॥ २७ ॥

स्य







न

109

23

23

जलथा भार्गवपितृणां परमांगतिः ॥ तत्रागस्त्येष्वरं दृष्ट्वा मुच्यते  
 अगस्त्यं च स भार्गवं च पितृन् ब्रह्म पुनं न पेत कुण्डि  
 नाथ तपसोपे शिताद्रे दक्षिणे गिरौ ॥ ५० ॥ वयो वरेष्वरस्तत्र स्थित  
 स्वप्नपितामहः ॥ तदग्रे नु किमनीकुं उपास्वि मे कपिलानन्दे  
 कपिलेशानन्दे तीरे अमासो मसमागमे ॥ कपिलायां न स्नात्वा वा  
 पितृशंसमर्चय ॥ ६० ॥ कृत्ते श्राद्धे पिं डदाने पितरो मोक्षमाप्नुयुः ॥  
 तत्राग्निधाया गिरिवरं दृष्ट्वा घनकादुनु ६१ तत्र सारस्वतं कुण्डं  
 सरस्वत्या पकल्पितम् ॥ शुक्राचार्य उवाच ॥ सा हि शशमर्कदिग्भ  
 वः ॥ ६२ ॥ तत्र त्रमुनीन्द्राणां मुनि सत्तम ॥ श्राद्धपिंडादि  
 क कृत्वा स्नानं पितृन् ब्रह्म तारयति ॥ ६३ ॥

५०







११ ~~मम~~ मन्वसुविता मम॥ अग्ने सन्म्रा डामि द्युः म  
 ममिसहऽआयच्छस्व॥३८॥ अयमग्निः॥ अयम  
 ग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजायावसुवित्तमः॥ अग्नि  
 गृहपतेभिद्युम्नममिसहऽआयच्छस्व॥३९॥ गृहा  
 मा॥ विभीतमावेपद्मर्जं विवृतं एमसि॥ ऊर्जं  
 म्विभ्रं हः सुमनाः सुमेधा गृहानेमिमनसामोदमा

३



112

वरेण्यमभर्गो देवस्य। धीमहि धियो यो नः प्रचोदया  
 त॥ ३५॥ शतम्॥ १००॥ परिते दू उभोरघोस्माँ ॥ ५ अ  
 श्ना तु विष्णवतः॥ येन रक्षसि दशुषः॥ ३६॥ भूर्भुवः॥  
 भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजामिः स्यात् सुवीरैः वीरैः सुपो  
 षः पोषेः॥ न ध्यप्रजामे पाहि स्यात् स्य पशून्मे पाह्य  
 पश्यपितुमे पाहि॥ ३७॥ आणन्म॥ विष्णवे दसमस्त



नः॥४१॥येषामद्योति॥प्रवसन्त्येषुसोमनसोबहुः॥गृहानुपहू  
 यामतेनोजानन्तुजानतः॥४१॥उपहृताइह॥गावऽउपहृताऽअ ॥३  
 जावयः॥अथोऽअन्नस्यकीत्नात्तऽउपहृतोगृहेषुनः॥क्षेमाय  
 वःशान्त्येप्रपद्यशिवंशगमंशंशंयोःशंयोः॥४३॥प्र  
 द्वासिनोहवामरुहेमरुतश्चरिणादसः॥करम्भेणसजोष  
 सः॥४४॥यद्गामे॥यद्गामेवदरस्येयत्सभायांवादिदि



१४ वे॥ यदेन शुक्रमाव यमिदन्तद्वयजामहे स्वाहा ॥ ५५ ॥ मोषूराः ॥  
मोषूराः इन्द्रात्रपुत्सुदेवैरस्ति हिष्माते शुष्मिन् नवयाः ॥ मह  
श्विद्यस्य मीढुषा जव्याहष्मतो मरुतो वन्दते जीः ॥ ५६ ॥

राम ॥



सहस्रवाटसहस्रवाडमर्त्यऽनुविगुतश्चनोहितः॥ अग्निद्वियासम्  
 एवति॥ १६॥ अग्निनूतमुरोदयेहस्यवाहमुपब्रुवे॥ देवशै॥ आसीदया  
 दिह॥ १७॥ अजीजनोहिपवमानऽसूर्यश्चिह्नैराक्रमनापय॥ गो  
 जीरयार७हमाणःपुरंध्या॥ १८॥ विभूर्मात्रात्प्रभूः पित्रोश्चोसिह  
 योस्यंयोसिमयोस्यंघ्रासिसप्तिरसिवाज्जपोसिदूषासिनुमलाऽअ  
 सि॥ अदुर्नामासिंशिभुर्नामास्यादित्यानाम्यत्वात्त्रिहिदेवाऽआ  
 शापालाऽएतदेवेज्योश्चमैधायप्रोक्षित७रक्षतेहरतिरिहरमता  
 मिह७तिरिहस्वधतिः स्वाहा॥ १९॥ कायस्वाहा॥ कस्मैस्वाहा॥ केतुम  
 मस्मैस्वाहास्वाहाधिमाधीतायस्वाहा॥ मनःप्रजापतयेस्वाहा॥ चित्तसि



तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा हुताय स्वाहा ॥ तस्मै वितुर्वरेण्यमर्गे दिवस्य धी  
 महि ॥ धियो यो नः प्रबोदयात् ॥ १ ॥ हिरण्यवाणिमृतवसवितारमु  
 पकृये ॥ सवेत्ता देवता एदम् ॥ १ ॥ देवस्य चेतनः देवस्य चेतनो महि  
 म् सवितुर्होमहे ॥ सुमति ० सुस्य राधसम् ॥ १ ॥ सुष्टुति ० सुम  
 तीवर्धन सुष्टुति ० सुमतीवर्धोराति ० सवितुरीमहे ॥ प्रदेवाय नती  
 विदे ॥ १ ॥ राति ० सत्यतिम् ॥ राति ० सत्यतीमहे सवितारमुपकृये ॥  
 आसुवन्देववीतये ॥ १ ॥ देवस्य सवितुः देवस्य सवितु मतिमा  
 सुवम्बिष्ट देव्यम् ॥ धिया न गमनामहे ॥ १ ॥ अग्नि १३ स्तोमे  
 ना बोधय समिधानो ॥ १ ॥ अमर्त्यम् ॥ हव्या देवेषु नो दधता ॥ १ ॥



ककुन्मनसावलम॥ शिवो नियुद्धिः शिवमिः॥ ३१॥ वायो मे वायो मे  
 तै सहस्त्रिणो रथासस्तमिरागहि॥ नियुक्तास्सोमपातये॥ ३२॥ एकया वा ए  
 कचदुराभिश्च स्वर्भूतैर्वाभ्यामिहये वि० राती च॥ तिष्ठमिश्च दहसे  
 त्रि० राती च नियुद्धि चयिविहता विमुच॥ ३३॥ तव वायो तव वायवृत  
 स्पते त्वष्टुर्जा मातरश्नुत॥ अवा १० स्यादृणामहे॥ ३४॥ अमि त्वा॥ अ  
 मि त्वा अरनो नुमो दुग्ध्या इव धेनवः॥ ईशानमुस्य जगत्ः स्वर्दृश॥  
 मीशान निन्दतस्युषः॥ ३५॥ नत्वा वीर॥ नत्वा वीर॥ अन्तो दिव्यो न  
 पार्थिवो न जातो न जनिष्यते॥ अन्तो लतो मघव निन्दया जिने ग



सुमच्छानि युद्धिर्वायविष्टयेदुरागे॥ निनोरयि० सुभोजसंश्रुव  
 स्वनिवीरङ्गच्युमश्म्यञ्चराधत्तार॥ १॥ आनन आनो नि युद्धिः  
 हातिनीमिरदुर० सहस्त्रिणी निरुपयाहि यज्ञम्॥ वायोऽत्र  
 स्मिंस्सर्वनेमादयस्वधुयम्पातस्वस्तिमिः सदा नः॥ २॥ नि  
 युत्वा न्वायो॥ नि युत्वा न्वायवागह्यय० शुक्रोऽयामिते॥  
 गत्वा सि सुन्वतो गृहम्॥ ३॥ वायोऽशुक्रः॥ वायोऽशुक्रोऽय  
 मिते मद्भोऽअग्न्युदिविष्टिषु॥ आयाहि सोमपीतये स्पा  
 हा देवनि युत्वा॥ ४॥ वायुरग्रेगाः॥ वायुरग्रेगांस्तु श्रीः सा



११७  
२६

११७

वोऽन्नारयि वृधः॥ पावोऽन्नारयि वृधः सुमेधाः श्वतः सिषक्ति निधुता  
 मभिश्चाः॥ ते वायवे समनसो विते स्थुर्विश्चे नरः स्वपुत्यानि चक्रुः॥ २३॥ रा  
 येनु॥ रायेनु वज्रं तुरो दसामे राये देवी धिषणा धाति देवम्॥ अधवा  
 यु न्ति युतः सश्च तस्वाऽउतश्चेत वसुधिति निरेके॥ २४॥ आपो ह। आपो  
 ह धर्ह हती विष्णु माधुना न्दधाना जनयन्ती रुग्निम्॥ ततो देवानां स  
 मवर्तता सुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २५॥ अश्विद। अश्विदा पोम  
 हिना धुर्ध्रप दक्षन् दधाना जनयन्ती र्भक्षम्॥ यो देवेषु धि देवऽएकऽ  
 आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २६॥ प्रयाभिः प्रयाभिर्व्यसिदाश्वाः



तऽअस्य। तेऽअस्य बोधेण दिव्येन यो नोऽनुषां नक्तः॥ इमं स्य जमवता  
 मधुरन्तः॥१७॥ दैव्या होता रा। दैव्या होता राऽकुर्वमधुरन्तो गे जिज्ञा  
 मभिर्गुणीतम्॥ कृणु तन्नः स्विष्टिम्॥१८॥ तिस्रो देवीः। तिस्रो देवी  
 ब्रुहि रे द७ स दत्विडा सरस्वती भारती॥ महीगुणाना॥१९॥ तन्नः।  
 तन्नः सुरीपमद्भुतमुरुक्षु त्वरा सुवीर्यम्॥ रायस्योषं विष्यतु ना  
 भिमस्ते॥२०॥ वनस्पते वा वनस्पते वस्तजारराणस्त्वना देवेषु॥  
 अग्निर्हव्यं शमितास्तदयाति॥२१॥ अग्ने स्वाहा। अग्ने स्वाहा कृणु  
 हि जातवेदऽइन्द्राय हव्यम्॥ विश्वे देवा हविरिदं जुषताम्॥२२॥ पी



त्पुरुषेण। अत्पुरुषेण हविषा देवायुजमन्वत॥ वृसलोऽस्मासीदज्यं पुन्यं दुधम  
 शरद्वि॥ १४॥ शुप्तास्य॥ सुप्तास्याः सन्धिरिधयस्त्रिः सुप्तसमिधः क्रतोः  
 देवा अद्य तैत्तनाः अर्बधुः पुरुषं पृथुम्॥ १५॥ अजेनेयुजम्॥ अजेनेयुजमय  
 जने देवास्ता निधर्माणि प्रथेमान्यासन्॥ ते हुना कम्मा हिमानः सचतुषन्  
 प्रवेसाद्याः सन्निदेवीः॥ १६॥ अद्भ्यः सञ्जतः अद्भ्यः सञ्जतः पृथिव्यै रसाच्च  
 विष्णवे कर्मणः समवर्तताग्रे॥ तस्य त्वष्टा विदधे द्रुपमेति तन्मह्यस्य दे  
 वत्वं मा जानुमग्ने॥ १७॥ वेदाहम्॥ वेदाहमेतत्पुरुषमुहा तं मादित्यव ए  
 तमे सः परस्तात्॥ तमेव विदित्वा तिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्युतेयनाय॥ १८॥



द्य जुस्तस्माद जायत ॥ ७ ॥ तस्मादश्वाः । तस्मादश्वाः अजायत ॥ वे के वो भुया  
 दतः ॥ गा वो ह ज जिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ ८ ॥ तं स्य जं म । तं स्य जं म  
 हि वि प्रोक्षन्तु कं प्रजात मग्नतः ॥ ते न देवाः अय ज तं सा द्याः रुष यश्चुवे ॥ ९ ॥  
 अत्थुनं पुं द्य द धुः क ति धा द्य कल्प यन् ॥ मुख द्वि मस्या सी किम्बा ह कि मुरु  
 पादाः उच्येते ॥ १० ॥ ब्राह्मणो स्य । ब्राह्मणो स्य मुख मासीद्वाहुराजुन्यः  
 कृतः ॥ उरुतदस्य धेनु रयः पुष्टा ॥ शुद्धो अजायत ॥ ११ ॥ चन्द्र मा न सः ॥ म  
 चन्द्र मा म न सो जातश्चक्षुः स्त्र्योः अजायत ॥ ओत्रा द्यु यश्च प्राणश्च मुखो द  
 ग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्यो आसीत् ॥ नाभ्यो आसीदन्तरिक्षं ॥ शीलो द्योः स  
 मवर्त्तत ॥ पुष्टा मृदिनिः श्रोत्रा तथा लोकां ॥ अकल्प यन् ॥ १३ ॥ म



रुष एव। पुरुषः एवेदं सर्वं व्यदुतं च भाष्यम्॥ उता मृतस्येशो नो बदनं  
 नातिरोहति॥२॥ एतावन्नस्य॥ एतावन्नस्य महिमा तो ज्ञया यं शुभ्ररुषः॥ पादो  
 स्य द्विश्चाभुतानि त्रिपादस्यामृतं द्विवि॥३॥ त्रिपादुर्ध्वः। त्रिपादुर्ध्वः उदेत्यु रं  
 षः पादो स्येहाभवत्पुनः॥ ततो विष्णु इति कामसा शनानशनेऽभि॥४॥ ततो वि  
 राट्॥ ततो विराट् जायते चिराजोऽधिपुरुषः॥ स जातोऽत्यरिच्यतं पश्चा  
 द्दमिमयो पुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वं कृतं स मृतमृषद्वा  
 ज्ञयम्॥ पुरुंस्तांश्चैवे वायुध्या नारुण्या ग्राम्याश्च मे॥६॥ तस्माद्यज्ञात्  
 द्यु तस्माज्जातं सर्वं कृतं रुचुः सामानि जज्ञिरे॥ छन्दां सिजज्ञिरे तस्मा



एवधम तानुताया नुनरायतलुवम ॥२०॥ अमयेपीवानम ॥ अग्नेयेपीवानम ॥  
 शिद्येपीठ सुप्पिरांवा यवे चारडाल मुतेरिक्षायव ० शानुतिन न्दिवेख  
 लति ० सूर्योयह सूर्यक्षेन्नक्षेत्रेभ्यः किमिरं चन्द्रमसेकिलासंमङ्गे शु  
 कुम्पिङ्गाक्षं ० रात्र्येकलम्पिङ्गाक्षम ॥२१॥ अथेतानुष्टौविरूपानालभुतेति  
 दीर्घातिरुसुत्रातिस्थूलत्रातिक्करात्रातिशुक्रातिक्कलत्रातिकुल्लत्रा  
 तिलोमरात्र ॥ अश्वदुः अब्राह्मणस्तेप्राजापत्याः ॥ मागधः पुंशुलीकि  
 त्वः क्लीबोश्चदुः अब्राह्मणस्तेप्राजापत्याः ॥२२॥ ॥१॥ इति संहितापोठ  
 त्रि ० रातमोधायः ॥ सहस्रशीर्षा पुरुषः ॥ सहस्रशीर्षा पुरुषः ॥ सहस्रा  
 क्षः सहस्रपाद ॥ सभूमि ० सर्वतस्तृतीया ॥ ॥१॥ पु

अथेतानु



मृत्यै जागरणं मृत्यै स्वप्नमात्यै जनवादिनं ॥ १७ ॥ अथ ॥ स ॥ शायं प्रच्छि  
 दम् ॥ १८ ॥ अथ राजाय कितवम् ॥ अथ राजाय कितवम् ॥ तथै दिनवदशीन्ने तीये कु  
 ल्यनं द्वापरायाधिकल्पिनमास्कुन्दाय सभास्थायुर्मृत्यवे गोल्युद्धमत्त  
 कायगोघातदुधेभोगाविवृत्तन्नेमिक्षमाणऽउपतिष्ठति दुष्कृताय वरकावाय  
 म्याप्नोते सेलुगम् ॥ १९ ॥ प्रतिष्ठां कृत्वा ॥ अर्त्तनम् ॥ प्रतिष्ठां कृत्वा ॥ अर्त्तनम् ॥  
 शायं भुषं मत्ताय वदुवादिनं मन्ताय मृक ॥ शब्दायाऽम्बराघातं महसे वीणा  
 वाङ्मोक्षाय तूणवधममवस्थाय शङ्खध्वजं वनाय चतुर्धुमन्यतोरण्याय  
 दावपम् ॥ २० ॥ नम्राय पुञ्चलम् ॥ नम्राय पुञ्चलम् ॥ हसाय कारुण्यं व्यादसे  
 शाबल्याङ्गाय पण्डितं गणकमभि कोरीकृतां नमहसे वीणावाङ्मोक्षाय चतुर्धुमन्यतोरण्याय



कृलेष्ट्रिहि नं व पुषे मानस्तुत ७ श्रीलाभाञ्जनीकारी निरुक्तौ कोवाकारी अमा  
 यास्तम ॥ १४ ॥ अमायं च मुस्तम ॥ अमायं च मुस्तमयं वृज्यो वतोका १५ संवत्सराय प  
 र्यायि लो मपरिवत्सराया विजाता मिदा वत्सराया तीक्ष्णरी मिद्वत्सराया तिष्ठद्व  
 री वत्सराय विजर्जरा १६ संवत्सराय पलिक्री मृनुज्यो जिनसुध ७ सादो  
 ज्यश्चर्ममम ॥ १५ ॥ सरोज्यो धेवुरम ॥ सरोज्यो धेवुरमुपस्था मुपस्था वराज्यो दावां  
 वैशुताज्यो वेन्दनं जालाज्यः शो धलम्पाराय मागुरं मवाराय केवर्त्तनीये ज्यो ८  
 आन्दं विषमेज्यो मैनाल १७ स्तनेज्यः पर्णकुङ्कु हाज्यः किरात ७ सानुज्यो जमकु ॥  
 म्पर्वतेज्यः किम्पुरुषम ॥ १६ ॥ बीभत्सायै पौल्लसम ॥ बीभत्सायै पौल्ल संवर्णी  
 यहिरण्यकारं तुलायै वारिजम्पश्चादुषाय ग्लाविनं विश्वेज्यो भूतेज्यः सिध्मल



मनुतां विहितं जगत् ॥ स दुन्दुभे स जूरिन्देरादु वै दूरा द्वा शोऽपसे धरा त्रै नः ॥ ५५ ॥  
 आ क्रन्दय ॥ आ क्रन्दय बलमो जे नः ॥ आ धानि र्निहि दुरिता बाधमानः ॥ अप  
 प्योथ दुन्दुभे दु कुनाऽदु तऽइन्दु स्य मुहिरसि ॥ वी ढु ड य स्व ॥ ५६ ॥ आ मूः ॥ आ मू  
 रं ज प्यु त्या वर्त्तये माः के तु म दुन्दुभिर्वा वदीति ॥ समश्च प स्याच्चरन्ति नो नरो र्म्म  
 क मिन्द्र र धिनो जय तु ॥ ५७ ॥ आ नेयः कृष्ण ग्री वः ॥ आ नेयः कृष्ण ग्री वः सा  
 र स्वती मे षी वः ॥ सौ म्यः पो ल्यः स्या मः शिति ए षो बा र्ह स्पत्यः शिल्पो नै श्व दे  
 वऽ ए न्द्रो रु णो मा रु तः कल्मा षऽ ए न्द्रा ग्नः स ७ हि तो धो र मः सा वि त्रो वा रु णः ॥  
 कृ ल ॥ एक शिति पा से त्वे न ॥ ५८ ॥ अ न ये नी क व ते ॥ अ न ये नी क व ते रो हि ता न्दि



२३३ न धो र मो सा वि नो पौ लो र ज त न न वि श्व दे रौ पि रा ज्ञे तू प रौ मा रु तः क ल्मा  
 प ६ आ ने यः कृ ष्णो जः सो र स्व ती मे षी वी रु एः पे त्वः ॥ ५ ॥ अ म न ये ग य त्रा य । अ  
 म न ये ग य त्रा य त्रि व ते रा थ तै रा थ षा क पा लः ॥ इ न्द्रा य त्रे षु ना य प च्च द श य वा  
 ह ता ये का द श क पा ले ॥ वि श्वे व ज्यो दे वे ज्यो जा ग ते ज्यः ॥ स स द शे ज्यो वै रू पे ज्यो  
 द्वा द श क पा ले ॥ मि त्रा व रु णा ज्यो मा नु षु भा ज्यो मे क वि ७ रा ज्यो वै रा जा ज्यो म  
 य स्या व ह स्य त ये पा ङ्गा य त्रि ए वा य शा क रा य च रुः स वि त्र ओ ष्ठी हा य  
 च य स्त्रि ७ रा य रै व ता य द्वा द श क पा लः ॥ प्रा जा प त्य श्रु रु श दे त्ये त्रि षु  
 प त्ये च रु र ग्न ये वै श्वान रा थ द्वा द श क पा ले नु म त्या ॥ अ रा क पा लः ॥ ६ ॥



129

इति संहिता पाठे एकोनत्रिंशति मोध्यायः ॥ देवसवितः ॥ देवसवितः ॥ असुव  
 सुतं ॥ असुव सुतं पतिम गाय ॥ दिव्यो गन्धर्वः ॥ केतुशक्तिनः ॥ पुनातुं वाचस्प  
 तिर्वाचनः ॥ स्वदतु ॥ १ ॥ तत्सवितुः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं ॥ भूर्गो देवस्य धीमहि ॥  
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ २ ॥ विश्वानि देवा ॥ विश्वानि देवसवितं ॥ दुरि  
 तानि परासुव ॥ अद्भुतं दुर्तनं ॥ आसुव ॥ ३ ॥ वित्तकार ॥ हवामहे ॥ विसृक्ता  
 ॥ हवामहे ॥ विसृक्ता ॥ सवितारं नृचक्षसम् ॥ ४ ॥ ब्रह्मणे  
 ब्राह्मणे ॥ ब्रह्मणे ब्राह्मणं ॥ नारायणं ॥ नमः ॥ श्रोत्रैश्च यत्नं पसे ॥ अद्भु  
 तं मसेतस्करं ॥ नारका ॥ अद्भुतं ॥ नारायणं ॥ नमः ॥ नारायणं ॥ नमः ॥ नारायणं ॥ नमः ॥



श्रीकामायपुंश्चलमति कुशयमागुधम् ॥५॥ नृत्ताय सुतम् नृत्ताय सुत  
 दुताय शैलुषं धर्माय सत्ताचर नृत्तायै नीमलं नृत्तायै रेम ७ हसा  
 यकारै मान्दाय स्त्रीषखं मुमदे कुमारी पुत्रमेधायै रथकारं धैर्याय  
 तक्षाणम् ॥६॥ तपसे कोलालम् तपसे कोलालं मायायै कुम्हार ७ रूपाय म  
 गिकारं ७ मुने वृष ७ शरव्याया इषुकारं ७ हेत्येधं नृत्तायै मृत्तिकायै ज्ञाकारं  
 दिष्टायै रज्जुसुज्जि मृत्तये वै मृगयुमं तैकायश्चानिनेम् ॥७॥ तद्व्यः पौन्ड्रि  
 षम् नदीव्यः पौन्ड्रिषं मृत्ताकाव्यानेषादं मृरुष व्याघ्राय दुर्मदं नृत्तायै  
 पुरोव्यो वाह्यं मृदुश्रुः उन्मत्तं ७ सर्पदेव जनेव्यो प्रतिपदं मयेव्यः कित



वं मा र्क्यतायाः अकितवमिश्राचेष्टो विदलका वी ध्यानुधाने अः क एटकी कारीम् ॥  
 सुन्धये जारम् ॥ सुन्धये जारं ऊहायो पपति नाल्यै परिवित्तनिर्कृत्यै परिविवि  
 दानमराद्याः एदिधिषुः पतिनिष्कृत्यै पेशस्कारी ॥ सुज्ञानाय स्मरकारी  
 म्रकामोद्यायोपसदं वृत्तानुसुधम्बलायोपदाम् ॥ १०॥ उत्सादेष्टु कुञ्जम् ॥  
 उत्सादेष्टुः कुञ्जम् मुदेवामनं द्वाष्टुः स्त्रामप्य स्वमायाधर्ममधर्मयवधिरम्प  
 विनायतिषजं मुज्ञानाय नक्षत्रदुर्गमा शिक्षायै प्रज्जिननं मुपशिक्षायाः अभि  
 प्रज्जिननं मूर्ध्यादाये प्रश्नविवकम् ॥ ११॥ अर्मेष्टो हस्तिपत्रम् ॥ अर्मेष्टो ह  
 स्तिपञ्जवायाश्च पम्पुष्टौ गोपालं वीर्याया विपालं तेजसेजपालं मितायेकी



नाराङ्गुलीलायसुशकारमुद्राद्यगृहपञ्चश्रेयसेविमुद्रामाद्यश्यायानुक्षतारम् ॥ १९ ॥  
 भायेदावीहारम् ॥ भायेदावीहारम् ॥ भायेदावीहारम् ॥ अग्रेधम्बुध्नस्यविष्टपायाभिषेका  
 रं ॥ वर्षिष्टायनाकायपरिवेष्टारं ॥ देवलोकायपेक्षितारं ॥ मनुष्यलोकायप्रकरितारं ॥ ६ ॥  
 सर्वलोकेभ्यः उपसेक्तारं ॥ मवेऽरुतेवृधायोपमन्यितारं ॥ मेधायवासः पल्पूल  
 म् ॥ कामायरजयित्रीम् ॥ १२ ॥ ॥ कृतयेस्तेनहृदयम् ॥ कृतयेस्तेनहृदयं ॥ दैरहत्याय  
 पिशुनं विविक्तैस्तारं ॥ मोपदृष्टायानुक्षतारं ॥ म्वलायानुचरं ॥ मूमेपरिकुन्द  
 म् ॥ यथायपि यवादिनमरिष्टाः ॥ अश्वसादं ॥ सुगीयलोकायभागदुघं  
 वर्षिष्टायनाकायपरिवेष्टारम् ॥ १२ ॥ ॥ मुन्यवेस्तापम् ॥ मुन्यवेस्तापम् ॥ क्रोधाय  
 निस्संयोगं ॥ त्तारं ॥ ६ ॥ शोकायामिसुत्तारं ॥ देमायविमोक्तारं ॥ मुक्कलनि



ति। जामृतस्यैकमेवति ॥ कंच द्रुमीयाति समसामुपस्थे ॥ अनाविद्यया तन्वो जय  
 त्वं सत्त्वाद्यमी लोमहिमापि पत्तु ॥ २८ ॥ धन्वंनागाः। धन्वंगा धन्वंनाजिज्ञये  
 मधन्वंनाती ब्रौः समदोजयेम ॥ धनुः शत्रोरपकामदू लोति धन्वंना सर्वाः  
 प्रादिशो जयेम ॥ २९ ॥ बुक्ष्यन्ती वेत। बुक्ष्यन्ती वेदागना गतिकर्ता म्पुय ० स  
 स्वाधमपरिषस्व ज्ञाना ॥ ओषे वशिङ्कु वितताधि धन्वंज्या ५ इय ० समने पार  
 धन्ती ॥ ४० ॥ ते ५ आचरन्ती। ते ५ आरचन्ती समने वओषासा ते वपुत्रम्बिभृता मु  
 पस्थे ॥ अपरा त्रैन्विद्यता ५ संविदाने ५ आर्क्षी ५ इमे विष्कुरन्ती ५ अमित्रान् ॥  
 ॥ ४१ ॥ बद्धीनाम्पिता। बद्धीनाम्पिता बद्धुरस्य पुत्रम्बिश्चाले गोति समनावगा

ना

ली



त्य॥ इषुधिः सङ्गः एतन्नाश्रुसर्वीः एषेति न दोजेयति प्रसृतः॥ ४२॥ रथेति षष्ठं न  
 रथेति षष्ठं नयाति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुवारधिः॥ अन्तीष्टनाम्न हि  
 मानम्यनायतमनः पश्चादनुयच्छति रश्मयः॥ ४३॥ तीव्रान् न्योषान् तीव्रा  
 न्योषान् क्लृप्त एव ते वृषपालयोश्च रथेभिः सह वाजयन्तेः॥ अदकामन्तः प्र  
 पदेशु मित्रांस्मि एतान् शत्रून् रनपक्षयन्तेः॥ ४४॥ रथवाहं ल० हविः॥ रथ  
 वाहा ल० हवि रस्य नाम यत्रायुधनिहितमस्य वृ०॥ तत्रारथमुपशम्य ल० स  
 दिमं विष्वाहा वृ० सुमनस्य मानाः॥ ४५॥ स्वादुष० सदः पितरः॥ स्वादुष०  
 सदः पितरो वयोधाः क्लृप्तेः शक्तीव तो गन्तीशः॥ चित्रसेना इषुव



लाऽअमृद्वाः सतोवीराऽउरवोवातसाहा॥४६॥ ब्राह्मणासुःपितरः। ब्राह्म  
 णासुःपितरः। सोम्यासुः। शिवेनोद्यावापृष्टिऽअनेहसा॥ पुषानः पातुदुरि  
 तादृतावधोरक्षाभाकिर्नेऽअधशै० सऽईरात॥४७॥ सुपर्णं वस्ते। सुपर्णं  
 वसेभृगोऽअस्यादन्तो गोभिः सन्नदापतति प्रसृता॥ धन्वानरः सञ्चुबिचुद्  
 वन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्मिष० सन्नु॥४८॥ रुजीतेपरि। रुजीतेपरिव  
 षुः नोऽश्माजवतुनस्तनः॥ सोमोऽअधिब्रवीतुनोदितिः शर्मिष० छतु॥४९॥  
 आजध्वंति। आजध्वंति सान्वैपाज्यधनोऽ॥ उपजिगृधते॥ अश्वज  
 निप्रचेतस्योश्वात्समत्सुवोरथा॥५०॥ अहिरिवभोगेः॥ अहिरिवभोगेः

वै



पञ्चैति वाहुः ज्यायहिति मपरिबाधमानः ॥ हस्तघ्नो विष्णो वयुना निविद्धा सुमानु  
 मा ॥ २० ॥ सुम्पार पातु विष्णु तः ॥ ५१ ॥ वनस्पते वीङ्गुङ्गः ॥ वनस्पते वीङ्गुङ्गो हि  
 मन्थाऽऽस्मत्सर्वस्वा प्रतरणः सुवीरः ॥ गोभिः सन्नद्धोऽसि वीङ्गुङ्गस्वा  
 स्था ताते जयतु जेहानि ॥ ५२ ॥ दिवः पृथिव्याः । दिवः पृथिव्याः पञ्चैति जुऽउ  
 दितं वनस्पतिव्यः पञ्चैति त ॥ सह ॥ अपो मो जमान मपरि गोभिराद्यैर्मिन्दस्य तु ॥  
 वज्र ॥ हविषा रथं यज ॥ ५३ ॥ इन्द्रस्य वज्रः ॥ इन्द्रस्य वज्रो मरुता मनी  
 कं मित्रस्य गन्धर्वैर्वरुणनाभिः ॥ सेमानो हव्यदातिग्जुषाणो देव रथप्रतिह  
 ग्यान्ताय ॥ ५४ ॥ उपश्वा सय ॥ उपश्वा सय पृथिवीमुत द्या मरुताते



स्वाहा कृते न ह विप्रो पुरोगा वाहिसा आह विरद नृदेवाः ॥११॥ अरक्रन्दः अरक्रन्दः प्रथ  
 मञ्जायमानः उद्यत्समुद्रादुत वापुरीषात् ॥ इत्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाह्वोः प  
 लुत्य महिजातनेऽर्चन् ॥१२॥ धुमेन दत्तम् ॥ धुमेन दत्तन्त्रितऽएन मायुन  
 गिन्दऽएण मप्रथमोऽअङ्गीतिष्ठत् ॥ गन्धर्वोऽअस्य रशुनाम गृभ्णात्सरादृष्टं  
 च सवो निरतः ॥१३॥ असिष्ठमः असिष्ठमोऽअस्यादित्योऽअर्चन् त्रितो गु  
 र्येन ब्रूतेन ॥ असिष्ठो मेन समया विष्टः आङ्गुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि ॥१४॥  
 त्रीणि त्रीणि तऽआङ्गुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यस्तु त्रीण्यन्तः संमुदे ॥ उते  
 धमे वरुणश्च तस्यैव न्यत्रातऽआङ्गुः परमञ्जुनित्रम् ॥१५॥ इमाते इमाते वा



जिन्नवमाज्जिनानीमाशफानी ॥ सनितुर्निधाना ॥ अत्रोतेमद्वारशानाऽअ  
 पश्यमृतस्यवाऽअमिरक्षतिगोपाः ॥ १६ ॥ आत्मानन्ते। आत्मानन्तेमन  
 साशदजानीमवोदिवापुतयत्तम्यतुङ्गम् ॥ शिरोऽअपश्यम्पायिभिः सुगेभिः  
 ररेणुभिः जेहमानम्यतुत्रि ॥ १७ ॥ अत्रोते। अत्रोतेरूपमुत्तममपश्य  
 जिगीधमाणमिषऽआपुतेगोः ॥ वृक्षतेमर्तोऽअनुज्ञोगमानुडादिङ्ग  
 सिष्ठऽलषधीरजीगः ॥ १८ ॥ अनुत्वा। अनुत्वारथोऽअनुमर्थोऽअर्धन्न  
 नुगावोनुभगः कुनीनाम् ॥ अनुव्रातासस्तवसकव्यमीशुरनुदेवामनिरव्वी  
 ज्यन्ते ॥ १९ ॥ हिरण्यशृङ्गेयः। हिरण्यशृङ्गेयोऽअस्यपादामनोजवाऽ  
 अवैरऽइन्द्रऽआसीत् ॥ देवाऽइदस्यहविरद्यमारुन्धोऽअर्धनाम्यथमोऽअ



धर्तिष्ठत् ॥ २० ॥ इन्मीनासः सिलिकमक्षमासः । इन्मीनासः सिलिकमक्षमा  
 सः ॥ स ७ ॥ अरणा सो दिव्या सोऽअश्याः ॥ २१ ॥ साऽइवश्चेतिरोचतत्तेवरा  
 क्षिपुर्दिव्यमज्जमभश्चाः ॥ २२ ॥ तवशरीरम् ॥ तवशरीरमपयिष्यन्ते  
 वैचित्तंवातं इव क्षीमा ॥ तवष्टङ्गाणि विष्टिता पुरुत्रारण्येषु जङ्गु  
 राणाचरन्ति ॥ २३ ॥ उपप्रा । उपप्रागा छ सनं वाज्यची देव दी चामन सा  
 दीद्यान ॥ अजः पुरो नीयते नामि रस्यानुपश्चात्कवयो वन्तिरेभाः ॥ २४ ॥ उ  
 पप्रा । उपप्रागा त्यरमं व्यत्सधस्थं नवांशं ॥ अष्टा पितरं मातरं च ॥ अद्या  
 देवाञ्जुष्टतमो हि गम्पाऽअथाशास्ते दाशुषे वा र्याणि ॥ २५ ॥ समिद्धोऽअ







मृहिः प्रदिशा पृथिव्या वृत्तो रस्या वृज्यते अग्रे अङ्गाम् ॥ सुधयने वितुरं  
 वरीयो देवेभ्यो अदितये स्यो नमः ॥ २६ ॥ द्यं च स्वती रुचिं या द्यं च स्वती रु  
 चिं या विष्प्रयत्ता मपति ज्ञेय न जनयः शुभ्रमानाः ॥ देवी द्वारो बृहती चि  
 ष्वमिन्वा देवेभ्यो नवत सुप्रायणाः ॥ २७ ॥ आ सुधयन्ती आ सुधयन्ती अ  
 जुते उपोके उपोसा नक्ता सदतान्नियो नौ ॥ दिद्ये योषणे बृहती सुसु  
 के अघि ऋषयः शुक्रपिशु न्दधाने ॥ २८ ॥ दैद्या होतारा दैद्या होतारा प्र  
 थमा सुवाचा मिमाना भुजभमनुषो यज्ये ॥ प्रचोदयन्ता विदथेषु कारु प्राची  
 नज्योतिः प्रदिशा दिशता ॥ २९ ॥ आनः आमो भुजभारती त्वयमेत्विडा



मनुष्यदिहचेतयन्ती॥ तिस्रो देवा ब्रह्मिरेदं स्यो नं सरस्वती स्वपे सः सदन्तु॥  
 अऽइ मे॥ अऽइ मे द्यावा पृथिवी जनित्री रूपैरपि ॐ राऽहुव नानि विष्मया॥ तमुद्य  
 होतरिषितो यजीया न्देवत्त एर मिह अक्षि विद्वा न्॥ ३४॥ उपावस्त जं क्त  
 न्या॥ उपावस्त जं क्त न्या समज्ज न्देवाना म्पाथ ५ कृत्या हवी ॥ ३५॥ विष्म न  
 स्पतिः श मिता देवो ५ अग्निः स्वदन्तु हव्य म्मधु नाघृते न॥ ३५॥ सद्यो जा  
 तः॥ सद्यो जातो व्यमिमीत अग्नि देवाना मभवत्पुरोगाः॥ अस्य होतुः यदि  
 रथ तस्य वाचि स्वाहा कृतं हविरेदन्तु देवाः॥ ३६॥ केतु डू एव न केतु डू एव न के  
 तवे पशो मर्षा ५ अपेशसे॥ समुषद्भि रजायथाः॥ ३७॥ जीति म् तस्येव मव



तु देवान्॥ अनुत्तास प्येष्टादिशः स च त्वां सुधामस्मे भजमाना यथेहि॥ २॥ ई  
 द्यश्चा ईदुश्चा सि च न्यश्च वा जिन्ता शुश्चा सि मे द्यश्च मप्ये॥ अग्नि द्यौ  
 देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वद्विं बह तु ज्ञात वेदाः॥ ३॥ स्तीर्ण म्वर्हिः॥ स्ती  
 र्ण म्वर्हिः सुष्टरी माजुषाणे॥ रु एधु प्रथमान मृषि धाम्॥ देवेभिर्द्युक्त म  
 दितिः सजोषाः स्योनङ्क एवाना सुविते दधातु॥ ४॥ एताऽ उवः॥ एताऽ उवः स न  
 ता द्विश्च रुपा द्वि पक्षोभिः प्रथमाणाऽ उदोतैः॥ रुष्वाः सुतीः कुवपः कुव  
 माना द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु॥ ५॥ अतुरामित्रा वरुणा॥ अतुरामित्रा  
 वरुणा चरन्ती सुखं व्यज्ञाना मभि संविदने॥ उषा सोवा ऽ सुहिरण्ये सुशि



ल्येऽऽतस्य मो नो विहसा दयामि ॥ ६ ॥ प्रथमा वा मू। प्रथमा वा षं सरथिना सुवर्णी ॥  
 देवो पश्यन्तौ भुवनानि विष्णोः ॥ अर्पिप्रयुञ्जो दनावा मिमानो होतार ज्यो  
 तिः प्रादिशो दिशता ॥ ७ ॥ आदित्येर्नः। आदित्येर्नो नार ती वष्टु स्रुत् ॥ स  
 रस्वती सुह रुद्रैर्नः आवीह ॥ इडोपहता व सुभिः सुजोषीं वृक्ष नो देवी रु  
 मृतेषु धत्त ॥ ८ ॥ त्वष्टा वीरम्। त्वष्टा वीर देव कामञ्ज जान त्वष्टु रवी जायत  
 आशु रश्मिः ॥ त्वष्टे दं विष्णु मुर्वे नञ्ज जान व होः कर्तार मिह अक्षि हो  
 तः ॥ ९ ॥ अश्वो घृतेन। अश्वो घृतेन त्वमन्या समेत्तः ॥ उपदेवांरा ॥ कृतुराः  
 पाथः एतु ॥ वनस्पतिर्देवलो कम्प जान न्नग्निना हव्या स्वदिता मि वक्षत ॥ १० ॥  
 प्रजापतेस्तपसा। प्रजापतेस्तपसा ब्राह्मणानो सद्यो जातो दधिषे म नमने ॥



गत्या छन्दसेन्द्रियं ॐ नमः मिन्दु वयो दधे सुवने वसुधेयस्य वे तु भज ॥४१॥  
 देवो नराश ॐ सः ॥ देवो नराश ॐ सो देवमिन्दु वयो धसं देवो देव मेव ईयत् ॥  
 विराजा छन्दसेन्द्रियं ॐ रूपमिन्दु वयो दधे सुवने वसुधेयस्य वे तु भज ॥४२॥  
 देवो वनस्पतिः ॥ देवो वनस्पतिर्देवमिन्दु वयो धसं देवो देव मेव ईयत् ॥४३॥  
 यदा छन्दसेन्द्रियं ॐ मगमिन्दु वयो दधे सुवने वसुधेयस्य वे तु भज ॥४४॥  
 देवमूर्तिः ॥ देवमूर्तिर्वा रितानी देवमिन्दु वयो धसं देवो देव मेव ईयत् ॥४५॥  
 आ छन्दसेन्द्रियं ॐ अरा इन्दु वयो दधे सुवने वसुधेयस्य वे तु भज ॥४६॥  
 देवोऽग्निः ॥ देवोऽग्निः स्विष्टक देवमिन्दु वयो धसं देवो देव मेव ईयत् ॥



अतिछन्दसा छन्दसेन्द्रियं दुःत्रमिन्दुवशो दधं ह सुवने व सुधेयस्य वेतुयजो ॥ ५ ॥  
 अग्निमघा अग्निमघहोतारमवृणाताथं अजमातः पचन्मन्त्रीः पचन्म  
 रोडाशो मन्त्रनिन्दाय वयोधसेछागम् ॥ स्तुपस्थाः अघदेवो वनस्प  
 ति रभवदिन्दाय वयोधसेछागेन ॥ अधुन मे दस्तः अतिपचताग्रभीद  
 वी वृधन्पुरोडाशो न ॥ त्वामघः केषे ॥ ४ ॥ इति संहिता पाठे अष्टाविंश  
 तिमोऽध्यायः ॥ समिद्धोऽञ्जन् समिद्धोऽञ्जन् देवमतीनां हुतमग्ने  
 मधुमत्पिन्नमानः ॥ वाजीवहन्वाजिनञ्जातवेदो देवानां वसिष्ठियमासु  
 धस्थम् ॥ १ ॥ धृतेञ्जन् धृतेनाञ्जन्ममथो देवयानीन्मजानन्वाज्यप्ये



यस्तुपेशास्वतीस्तिस्रः॥ होताअक्षसेवास्वतीस्तिस्रोदेवीर्हिरण्ययात्रीरतावे  
 हतीर्महीपतिमिन्द्रवयोधसम्॥ विराजन्त्येऽइहेन्द्रियेभ्योऽनुज्ञानवयो  
 दधद्वत्वाज्यस्यहोतव्यज॥ ३१॥ होताअक्षस्तुरेतसत्त्वशरम्॥ होताअक्ष  
 स्तुरेतसत्त्वशरम्पुष्टिवर्द्धनंरूपाणिबिभ्रतमृधम्पुष्टिमिन्द्रवयोध  
 सम्॥ द्विपदंछन्दःइन्द्रियेभ्योऽनुज्ञानवयोदधद्वत्वाज्यस्यहोतव्य  
 ज॥ ३२॥ होताअक्षद्वनस्पतिंशमितारम्॥ होताअक्षद्वनस्पतिंशमिता  
 रंशतक्रतुं॥ हिरण्यपर्णमुक्चिनं॥ रशनाम्विभ्रतं वृशिःप्रगुमिन्द्रवयो  
 धसम्॥ ककुत्तंछन्दःइहेन्द्रियेभ्योऽनुज्ञानवयोदधद्वत्वाज्यस्यहोतव्य



होता यक्षद्वयं स्वतीः सुप्रायणाः। होता यक्षद्वयं स्वतीः सुप्रायणाः ३ कं ता वधो  
 होरो देवी हि रयथा ब्रह्माण मिन्दं वयोधसम् ॥ पङ्क्तिः चन्द्रः इहेन्द्रिय  
 त्वय्यवाहङ्गं वयोदधं द्यात्वा ज्यस्य होतव्यं ज ॥ २८ ॥ होता यक्षत्सुपेरासा सु  
 शिल्प्ये। होता यक्षत्सुपेरासा सुशिल्प्ये वृहतीः ५ तु मे न कोषासान दं वीते  
 विश्वमिन्दं वयोधसम् ॥ त्रिष्टुप् चन्द्रः इहेन्द्रियं पृथवाहङ्गं वयोदधं द्या  
 तामा ज्यस्य होतव्यं ज ॥ २९ ॥ होता यक्षत्सुपेरासा देवानाम्। होता यक्षत्सु  
 चेतसा देवानाम्। तु तमं व्यशो होता रा देव्या कवी सयुजेन्दं वयोधसम् ॥ जगती  
 चन्द्रः इन्द्रियमनः पृथवाहङ्गं वयोदधं द्या तामा ज्यस्य होतव्यं ज ॥ ३० ॥ होता



मिन्द्रे वयोदधं द्वसुवने वसुधे यस्य वीतां व्यज ॥ ३७ ॥ देवी जोष्टी । देवी जोष्टी  
 वसुधिता दिवमिन्द्रे वयोधसं देवी देवमवर्द्धताम् ॥ ब्रह्म्या छन्दसेन्द्रियं  
 ओजमिन्द्रे वयोदधं द्वसुवने वसुधे यस्य वीतां व्यज ॥ ३८ ॥ देवीऽकुज्जाहुती ।  
 देवीऽकुज्जाहुती दुधे सुदुधे पयसेन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्द्धताम् ॥ पञ्चा  
 छन्दसेन्द्रियं शुक्रमिन्द्रे वयोदधं द्वसुवने वसुधे यस्य वीतां व्यज ॥ ३९ ॥  
 देवा देव्या । देवा देव्या होता स देवमिन्द्रे वयोधसं देवो देवमवर्द्धताम् ॥ त्रिष्टुभा  
 छन्दसेन्द्रियं त्रिषुमिन्द्रे वयोदधं द्वसुवने वसुधे यस्य वीतां व्यज ॥ ४० ॥  
 देवी स्तिस्त्रः । देवी स्तिस्त्रस्तिस्त्रो देवी वयोधसं मयतिमिन्द्रे मवर्द्धयन् ॥ ४१ ॥



ज॥॥॥ होता वक्षस्वाहो कृतीरुग्निम्रा होता वक्षस्वाहो कृतीरुग्निः हपति मय्यग्न  
 रत्नमेष जङ्गु विष्णु त्रिमिन्द्रं वयोधसम् ॥ अतिष्ठ न स मन्दं सन्दिध्यम्  
 हृदयं ज्ञां वयोधसं दद्यात् तज्ज्यस्य होतव्यं ज॥ २४ ॥ देवम्बुहिः देवम्बुहिर्वि  
 योधसं देवमिन्द्रं मवर्द्धयत् ॥ गायत्र्या छन्दसेन्द्रियञ्च क्षुरिन्द्रे वयोधसं  
 द्वसुवने वसुधेयस्य चेतुर्व्यज॥ २५ ॥ देवीर्द्वारः देवीर्द्वारो वयोधसं सु  
 त्रिमिन्द्रं मवर्द्धयत् ॥ उक्लिहा छन्दसेन्द्रियमप्राणमिन्द्रे वयोधसं द्वसु  
 वने वसुधेयस्य चेतुर्व्यज॥ २६ ॥ देवीऽउषासानक्ता देवीऽउषासान  
 क्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्द्धयत् ॥ अनुष्टुप् छन्दसेन्द्रियं मल



सि॥१॥ बुज्जते मनः॥ बुज्जते मनः॥ उत बुज्जते धियो विष्णु विप्रस्य बृहतो त्रि  
 पुश्चितः॥ विहोत्रादधे वृधुना विदेकः इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥२॥  
 देवीद्यावा एधिवा॥ देवीद्यावा एधिवा॥ मरुवस्य वा मद्यशिरो राद्या सन्देव्य  
 जने एधिवा॥ मरुवाय त्वा मरुस्य त्वा शर्क्षे॥३॥ देव्यो वन्म्यः॥ देव्यो वन्म्यो भू  
 मृतस्य प्रथजा मरुवस्य वो द्यशिरो राद्या सन्देव्य जने एधिवा॥ मरुवा  
 य त्वा मरुवस्य त्वा शर्क्षे॥४॥ इयत्यग्रे॥१६००॥ कण्डिका शतं॥ इयत्यग्रे  
 आसीन्मरुवस्य ते द्यशिरो राद्या सन्देव्य जने एधिवा॥ मरुवाय त्वा मरु  
 स्य त्वा शर्क्षे॥५॥ इन्द्रस्यो जः॥ इन्द्रस्यो जस्त्य मरुवस्य वो द्यशिरो राद्या स







न॥ च॥ प॥ ए॥ मा॥ ए॥ डा॥ ज्ञ्या॥ मा॥ दि॥ त्यां॥ र॥ म॥ शु॥ भिः॥ प॥ न्या॥ न॥ म्रु॥ ज्ञ्या॥ न्या॥ वा॥ ए॥ धि॥ वी॥ वृ॥ त्तो॥  
 ज्ञ्या॥ धि॥ द्यु॥ त॥ डू॥ ना॥ न॥ का॥ ज्ञ्या॥ १९॥ शु॥ क्का॥ य॥ स्वा॥ हा॥ क॥ ला॥ य॥ स्वा॥ हा॥ पा॥ र्वा॥ ए॥  
 प॥ क्ष॥ मा॥ ए॥ य॥ वा॥ र्वा॥ इ॥ क्ष॥ वो॥ वा॥ र्वा॥ ए॥ प॥ क्ष॥ मा॥ ए॥ य॥ वा॥ र्वा॥ इ॥ क्ष॥ वः॥ १९॥ वी॥  
 त॥ म्र॥ आ॥ ए॥ ना॥ वा॥ त॥ म्र॥ आ॥ ए॥ ना॥ वा॥ ने॥ न॥ ना॥ सि॥ के॥ ३॥ उ॥ प॥ या॥ म॥ म॥ ध॥ रे॥ लो॥ के॥ न॥ स॥  
 दु॥ त॥ रे॥ ए॥ प्र॥ का॥ शे॥ ना॥ त॥ र॥ म॥ नू॥ का॥ शे॥ न॥ बा॥ ह्य॥ नि॥ वे॥ ष्य॥ म्रु॥ धा॥ स्ति॥ न॥ यि॥  
 तु॥ नि॥ ब॥ धे॥ ना॥ श॥ नि॥ म॥ स्ति॥ के॥ ए॥ धि॥ द्यु॥ त॥ डू॥ ना॥ न॥ का॥ ज्ञ्या॥ डू॥ ए॥ ज्ञ्या॥ १९॥ आ॥  
 न॥ १९॥ ज्ञ्या॥ त्रा॥ ज्ञ्या॥ डू॥ ए॥ ते॥ द॥ नी॥ म॥ ध॥ र॥ कु॥ ले॥ न॥ पः॥ शु॥ क॥ कु॥ ले॥ न॥ चि॥ त्त॥ म॥ न्या॥  
 म्र॥ मि॥ र॥ दि॥ ते॥ ७॥ श॥ र्वा॥ नि॥ र॥ ति॥ नि॥ र्ज॥ र्ज॥ ल्ये॥ न॥ शी॥ र्वा॥ स॥ डू॥ शे॥ शः॥ प्रा॥



लान्नेमाले ॐ स्तुपेन ॥ २॥ मशकाचेरौः मशकाचेरौः रिन्दु ॐ स्वपसाव  
 हेनं हृहस्पति ॐ शकुनिसादेनं कृष्णच्छेपे रान्क मरा ॐ स्फुराभ्यामृ  
 क्षलोतिः कृपिज्जलां जुवज्जं धाव्याम ध्वान्मवा कृज्यां जावलीनार  
 एयमग्निमतिरुभ्यां पृषणं दोज्यामिच्छिनाव ॐ साव्या ॐ रुद्र ॐ रोरा  
 व्याभ्र ॥ ३॥ अग्नेः पक्षतिः अग्नेः पक्षतिर्वायो निपक्षति रिन्दुस्य लत  
 आसो मस्य चतुर्थ्य दित्येप च्चुमीन्द्राये षष्ठी मरुता ॐ सप्तमी वृ  
 हस्पतेर हृम्यर्ष्य मरणेन वमीधातु द्रुमीन्द्रस्येकादशी वरुण  
 स्य द्वादशी वृमस्य त्रयोदशी ॥ ४॥ इन्द्राग्न्योः पक्षतिः इन्द्राग्न्योः पक्ष  
 तिः सरस्वत्ये निपक्षति मित्रस्य तुतीया पाञ्चतुर्थी निरृत्येप च्चुम्य



पारस्यद्विषैराख्यकः॥३५॥ एण्यङ्कः। एण्यङ्कोमण्डूकोमृषिकातिनि  
 रिस्ते सर्पाणां ह्येषा राऽआश्विनः लक्ष्मिराऽयाऽरुक्षोजतः सुषि  
 लीकातऽइतरजनानाञ्जहकावैक्षवी॥३६॥ अन्यवापोर्धमासाना  
 म्। अन्यवापोर्धमासानामृश्योमधूरः सुपर्णस्तेगन्धर्वाणाम्  
 पामुद्रोमासाङ्कः श्यपोरोहितकुण्डुणाचीगोलनिकातेप्सरसा  
 मृत्यवैसितः॥३७॥ वर्षाहर्कतुनाम्। वर्षाहर्कतुनामाशुः कशो  
 मान्यालस्तेपितृणाम्बलायाजगरोवस्तरनाङ्कः पिञ्जलः कपोतऽ  
 उत्तकः शरास्तेनिर्ऋत्यैवरुणाधारण्योमेषः॥३८॥ श्वित्रऽआदि



दित्यानाम्। श्वित्रः आदित्यानाम्। श्वित्रः आदित्यानाम्। श्वित्रः आदित्यानाम्। श्वित्रः आदित्यानाम्।  
 अरण्याय स मरुतः कथिः कुरुर्द्धो हस्तिवाजिना  
 कृमायपिकः॥३६॥ खड्गो वैश्वदेवः। खड्गो वैश्वदेवः। खड्गो वैश्वदेवः। खड्गो वैश्वदेवः।  
 योगिर्द्भस्तरक्षुत्ते रक्षसा मिन्द्राय स करः सि० हो मारुतः कंकला  
 सः पिप्पका राकुनिते रा रघ्याये विष्वेष्टा न्देवानां मृषतः॥४०॥ द  
 तिसंहिता पाठे चतुर्विंशतिमोऽध्यायः॥ शार्दूलद्रिः। शार्दूलद्रिः। शार्दूलद्रिः। शार्दूलद्रिः।  
 वकान्द तैमूलेर्मर्दम्ब र्देवस्तै गान्द० प्राञ्ज्या० सरस्वत्याऽअग्नयि  
 द्विजिक्वायाऽउत्सादमवक्रुदेन तालुवाज० हनुज्यामपऽआर्य



पतये पुनः पान्दुस्तिनुः आलंनते वाचे सुषी च सुषे मराकां चो नो यभृङ्गः  
 प्रजापतये च ॥ १४० ॥ प्रजापतये च वायवे च गोभृगो वरुणा यार एयो  
 भिषोऽसमाय हलो मनुष्य राजाय मर्कटः शार्दूलाय सोहि दृषभाय  
 भव्याय क्षिप्रयेनाय वृत्तिकानीलङ्गः किमिभू स मुद्राय शिशुमा  
 राहिभवते हस्ती ॥ १४१ ॥ मयुः प्रजापत्यः ॥ मयुः प्रजापत्यः उलोह  
 लिः श्वेतो वृषदं शस्ते धात्रे दिशाङ्कः कुङ्कोऽधुङ्गः श्वेती कलविङ्को लोहि  
 ताहिः पुष्करमादसे ताड्यावाचे कुञ्जः ॥ १४२ ॥ सोमाय कुलुङ्गः सो  
 माय कुलुङ्गः आरण्या जैनकुलः शक्रते दोः कोष्ठा मायेरि



नैस्यगौरमृगः पिहो न्यङ्कुः ककुटस्तेनुमर्त्ये प्रतिश्रुत्वा ये च न वा कः ॥ ३२ ॥  
 सोरीबलाका। सोरीबलाकाशार्गः सृजुयः शयाण्डकस्तेमैत्राः सरस्व  
 त्येशारिः पुरुषवाक्स्वाविज्ञो माग्राहलो हृकः पदाकुलमन्यवे सरस्व  
 तेश्रुकः पुरुषवाक् ॥ ३३ ॥ सुपर्णः पाञ्चन्यः। सुपर्णः पाञ्चन्यः ॥ ३४ ॥  
 तिर्वाहसोदार्विदाते वायवे बहस्पतये वाचस्पतये वैङ्गः राजो लजः ॥ ३५ ॥  
 रिक्षः पुषो मरुत्स्यते नदीपतये द्यावापृथिवीयः कूर्मः ॥ ३६ ॥ पुरु  
 षमृगश्चन्द्रमसः। पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधाकालकादावाघाटस्ते च  
 स्यातीङ्कवाकुः सावित्रो ह॥ सोवातस्य राकोमकः ॥ कुलीपयस्ते क



इति निर्वृद्धे सुखास्ति विश्वानरः सविता देवः एतु ॥ अपि यथा सुवानो  
 मत्स्ये श्रुतो विश्वञ्जगदभिपित्वे मनीषा ॥ ३४ ॥ अदृष्ट ॥ अदृष्टकच्च वृ  
 त्तहन्तु दगाऽऽमि सूर्य ॥ सर्वत्र दिन्दते चरे ॥ ३५ ॥ तुरागि विश्वदर्श  
 तः ॥ तुरागि विश्वदर्श तो ज्योतिष्कदसि सूर्य ॥ विश्वमाभासिरो  
 चनम् ॥ ३६ ॥ तत्सूर्यस्य ॥ तत्सूर्यस्य देवत्वे तन्महितं मध्याकतो  
 चित्तं तत्सञ्जगत् ॥ अदेद युक्तं हरितः सुधस्थादा इति वासस्तनुते  
 सिमस्मे ॥ ३७ ॥ तन्मित्रस्य ॥ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिरक्षे सूर्योक्त  
 पङ्क्तं एतद्योरुपस्थे ॥ अनन्तमन्य दुरादस्य पाजं ॥ हस्तमन्यदुरितः



द्रुमाक्षेधियम्प्रभरेमहोमहीमस्यस्तोत्रेधिषणावर्तः॥ आनजे॥ तमुत्स  
 वेचप्रसवेचसासहिमिन्दुदेवासःशर्वसामदेनह॥ २७॥ विष्वाङ्गुह  
 त्॥ विष्वाङ्गुहसिबतुसोम्यम्मङ्गीयुर्द्धद्यक्षपतावविङ्गुतम्॥ वा  
 तज्जतोमोऽभिर्क्षतिक्ष्मनीपूजाःपुषोषपुरुधाविरोजति॥ २८॥  
 उदुत्यम्॥ उदुत्यञ्ज्वातवेदसन्नेववृहतिकेतवः॥ दुरोश्वायस्सर्व  
 म्॥ २९॥ येनोपावकयेनोपावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनां॥ अनु॥ त्वं  
 वरुणपश्यसि॥ ३०॥ दैव्यावद्भ्युऽआगतं॥ ३१॥ नस्सर्वत्वचा॥ मद्वा  
 ज॥ ३२॥ समञ्जाथे॥ तम्पुत्रायंवेनश्चित्रदेवानाम्॥ ३३॥ आनः॥ आनः॥



सुत्रा मा एमि मे सो माः सु रा मा ए श्छा गे न्त मे षे नैः सु ताः श  
 ज्ये न्त तो क न्नि लु जै र्म ह स्व तौ म द्मा सर ए परि धू ताः शु क्रः  
 प य सं तो म् ताः प्र स्थि ता वो म धु श्रु त स्ता न् चि ना सर स्व ती न्दः सु  
 त्रा मा दृ त्वा हा जु ष ती ऽ सो म्य म्म धु पि ब न्तु म द न्तु च्य नु हो त र्ज ज  
 ॥४२॥ हो ता अ द्द द्वा चि नो ळा ग स्य । ह वि ष आ ता म्म धु म ध्य तो मे  
 दः उ ङ्ग त म्पु रा दे वो भ्यः पु रा पौ रु षे व्या गु नो च स्ता न् न न्धा से  
 त्रि ज्ज्रा एां व व स प्र थ मा ना ऽ सु म त्स् रा एां ऽ श त रु दि यो  
 एा मग्नि घा ता तां म्प्यो वो प व स ना ना म्प्या र्जु तः श्रौ ए त शि ता म्



तत्सादृतोऽङ्गादङ्गादवचानाङ्कुरतः एवाश्विनोऽनुषेतो हविर्होत  
 र्वजः॥४॥ होता यक्षुत्सरस्वती मेषस्य हविषः आवयदद्य म  
 ध्यतो मेदुः उद्धतम्पुरादेषोभ्यः पुरा पोरुषेष्वागृजो घसन्नूनद्वा  
 सेऽ अज्ज्वाणां चर्वसप्रथमानां सुमत्क्षराणां शतरुदिया  
 रामानिष्ठा चानां भ्यो बोपवसनानां भ्याश्चुतः श्रौणितः शितामृतः  
 तत्सादृतोऽङ्गादङ्गादवचानाङ्कुरदेवः सरस्वतीऽनुषेतो हविर्होत  
 र्वजः॥४॥ होता यक्षु दिन्द्रमृषुनस्य हविषः आवयदद्य मध्यता  
 मेदुः उद्धतम्पुरादेषोभ्यः पुरा पोरुषेष्वागृजो घसन्नूनं घा  
 सेऽ अज्ज्वाणां चर्वसप्रथमानां सुमत्क्षराणां शतरुदि

१७५



येषामिन्द्रो युवा सखा ॥२४॥ इन्द्रहि ॥ इन्द्रहि मत्स्यन्धसो विस्वमिः सोमपर्वमिः ॥  
 महारं ॥ अजिष्टिरो जसा ॥२५॥ इन्द्रो बृत्रम् ॥ इन्द्रो बृत्रमवलो धर्दनीतिः ॥ अ  
 मायिनाममिना दृप्पणीतिः ॥ अहन्त्यो ॥ समुद्राधुग्वनेषां विर्दनाऽअकरो  
 दाम्याणाम् ॥२६॥ कुतस्त्वम् ॥ कुतस्त्वमिन्द्रमाहिर्नः सन्नेको वासि सत्पते कि  
 त्तिऽइत्या ॥ सम्ये ॥ सेसमराणः शुभानैर्द्वौ चेस्तन्नो हरियो अत्रैऽअस्मे ॥  
 महारं ॥ इन्द्रो अऽअजसा कुदानुनस्तस्मै रीरसि कुदानुनप्रयुच्छसि ॥२७॥  
 आतत् ॥ आतत् ॥ इन्द्रो यवः पनतामि यऽउर्वङ्गो मत्तितितत्सा नः ॥ स  
 कृत्स्वये पुरुषु चाम्मही ॥ सहस्रधारा म्वहता नु दुक्षन् ॥२८॥ इमान्ते ॥



विवाजान् ॥ १८ ॥ गावुऽउप। गावुऽउपावतावु तं महीधूलस्य रप्सुदा ॥ उताकर्णो हि  
 रण्यया ॥ १९ ॥ यदुद्य। यदुद्यसु रउ उदिते नो गामित्रोऽअर्च्यमा ॥ सुवातिस  
 विताभगः ॥ २० ॥ आसुते। आसुते सैश्च तश्चिथ ॥ ६ ॥ रोदस्योरभिश्चिथ ॥ रसा  
 दधीत वृषभम् ॥ तम्पुत्राय वेनः ॥ २१ ॥ आतिष्ठन्त्पारि। आतिष्ठन्त्प रिचि  
 रद्विष्टेऽअभूषंश्चिथो वसानुश्चैतिस्वरोचिः ॥ महत्तद्वल्लोऽअसुरस्यनामा ॥  
 द्विष्टरूपोऽअमृतानितस्यो ॥ २२ ॥ प्रवः। प्रवोमहे मन्दमानायाभ्युसोच्चिद्विष्टा  
 नरायद्विष्टाभुवे ॥ इन्द्रस्य यस्य सुमरुव ॥ सहोमहिष्ट्रवो नृमगाभुरोद  
 सा सपुष्यतः ॥ २३ ॥ बृहन्निश। बृहन्निदिधमऽएषाभू रिशस्तमृथुः स्वरुः



यमध्वानो जनानां हृदये तृणो नाम् ॥ १४ ॥ शुद्धिश्च कर्णः शुद्धिश्च कर्णः  
 च द्विभिर्देवैरग्ने सुधावन्ति न। आसीदनुबुद्धिर्विमित्रोऽर्घ्यमाप्नोत व्योवा  
 लोऽअद्वयम् ॥ १५ ॥ विश्वेषामदितिः ॥ विश्वेषामदितिर्व्यक्षिपानो विश्व  
 श्वेषामतिष्ठुर्मानुषाणाम् ॥ अग्निर्देवानामवऽआवृणानः सुमृडीको  
 नवतु जातवेदाः ॥ १६ ॥ महोऽअग्नेः ॥ महोऽअग्नेः समिधानस्य शर्मण्य  
 नागामित्रे वरुणे सुस्तये ॥ अहं स्याम सवितुः सवीमनि तदेवानामवो  
 हृणीमहे ॥ १७ ॥ आपश्चिद ॥ आपश्चित्पिप्युस्तु व्योमगावो नक्षत्रतज्ज  
 रितास्त इन्द्र ॥ आहिवायुर्न नियुतो नोऽअच्छीत् ७ हि धीमिदं यसे



विणस्युर्विपन्यया॥ समिद्धः शुक्रः आहुतः॥१॥ विश्वेभिः सोम्यम॥ विश्वे  
 भिः सोम्यमम द्वेभ्यः इन्द्रेण वायुना॥ पिबा मित्रस्य धामभिः॥१०॥ आयतु॥ व्या  
 आयद्विषे नृपति ते जुः आनहु चिरेतो निषिक्तन्यो रभीके॥ अग्निः रा  
 द्धं मनवुद्यं शुक्वानं स्वाधीजनयत्सुदयच्च॥११॥ अग्ने शर्द्धा अग्ने श  
 र्द्धं महते सौमं गायतव द्युम्ना न्युतुमानिसन्तु॥ सञ्जास्यत्यु सुयममा  
 क्तुषु श्वराश्च यतामभितेषुमहा॥१२॥ त्वा हि त्वा हि मन्द्रतममर्क  
 शोके वैरुमहेमहि नः श्रोष्य मे॥ इन्दुनत्वा शर्वसा देवता वायुमर्धन्ति राधसा  
 न्ततमाः॥१३॥ त्वेऽग्ने त्वेऽग्ने स्वाहुतं प्रियासः सन्तु सुरयः॥ अन्तारो



चिह्नपोदे चिह्नपे चरतः स्वर्धः अन्यान्या वृत्त सुपधा पयेते ॥ हरिरन्यस्या  
 प्रवेति सुधावीं शुक्रोऽन्यस्या नददरो सुवर्ची ॥ ५ ॥ अथ मिह ॥ ११०० ॥  
 अथ मिह प्रथमो धायिधातुर्हि होता भजिष्ठोऽअद्वरेष्ठी डः ॥ अमन्त्र वा  
 उ तो भगवो विरुरुचुर्चने चित्रं द्विजं विरो विरो ॥ ६ ॥ त्रीणि शता त्रीणि रा  
 प ता त्री सुहस्रा एयग्निं त्रिं वाच देवानं वा स पथ्यन् ॥ औक्षं मृतैरस्तृणान्  
 हरिस्ममाऽआदिदोतारन्यो सादयन्तो मूर्द्धनं दिवः ॥ मूर्द्धनं दिवोऽअरति  
 मृष्टिच्योश्चानुरमृतं आजातमुनिम् ॥ कुविं सुम्राजुमतिं शिञ्जानानां  
 मासन्नापात्रं ज्ञानयते देवाः ॥ ७ ॥ अग्निर्घृत्राणि अग्निर्घृत्राणि जङ्घनं इ



पुञ्चमेधायाता ददातुमे स्वाहा ॥ १५ ॥ इदमे । इदमे ब्रह्म मे क्षुत्रञ्चो ते श्रियं म  
 न्नताम् ॥ मयि देवा दधतु श्रियं मुत्तमा तस्यै ते स्वाहा ॥ १६ ॥ इति संहिता  
 पाठे द्वात्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ अस्या जरा सः ॥ अस्या जरा सोऽदमा मुरि  
 त्वा ॥ अर्चुर्दमा सोऽग्नयः पावकाः ॥ श्वितीरयः श्वात्रा सोऽमुरण्यवो न  
 नर्षदो वा मवान सोमाः ॥ १ ॥ हरयो धूमकेतवः ॥ हरयो धूमकेतवो न  
 चातं जताऽ उपधवि ॥ यतं ते बृथगग्नयः ॥ २ ॥ अजानः । अजानो मित्रा व  
 र्णा यजा देवाः ॥ रुतं बृहत् ॥ अग्ने अक्षि स्वदमम् ॥ ३ ॥ धुक्ष्वाहि ॥ पु  
 स्वाहि देव हतं मां ॥ अश्वं ॥ अग्ने रथीरिव ॥ निहोता पुरुषः सदः ॥ ४ ॥ इ



ना

मां निवेद भुवनानि निविश्या ॥ अत्र देवाऽऽमृतं मानशास्तृतीयधाम न्न डोरय  
 त ॥ १०॥ पुरीत्य भूतानि ॥ पुरीत्य भूतानि पुरीत्य लोकांश्चुरीत्य सर्वाः प्रु  
 दिशो दिशश्च ॥ उपस्थाय प्रथमं जामृतं स्यात्तमनात्मानं मुनि संविवेश  
 ॥ ११॥ परिधावा एषि वी ॥ परिधावा एषि वी सुद्यऽइत्वा परिलोकांश्च दि  
 दिशः परिस्वी ॥ सुतस्य तत्तुं चितं तं चित्तं तदं पश्यत्तदं भवत्तदा सी  
 त ॥ १२॥ स देसु स्याति म ॥ स देसु स्याति मङ्गुतं म्रिय मिन्द्रस्य काम्य म  
 सुनिमे धामे धा सिषु ॥ स्वाहा ॥ १३॥ धामे धाम ॥ धामे धामे देवगुणः पि  
 तरश्चोपासते ॥ तथा मा मुद्य मे धया नै मे धा विनङ्क रु स्वाहा ॥ १४॥ मे  
 धामे ॥ मे धामे वरु णो ददा तु मे धा मग्निः प्रजापतिः ॥ मे धा मिन्द्रश्च वा



कृत्वा धिषी च दृढा येन स्वस्तमितं येन नाकः ॥ १॥ अन्तरिक्षे रजसो विमानः  
 कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २॥ अङ्गु नंदसी ॥ अङ्गु नंदसी ॥ अर्वासा तस्तमाने ॥  
 अङ्गोक्षेतामनसा रेजमाने ॥ यत्राघिसर ॥ उदितो विभाति कस्मै देवा  
 य हविषा विधेम ॥ आपो ह गृह्णीतीर्षश्चिदापः ॥ ७॥ द्वेनस्तत् ॥ द्वेनस्तत्  
 इत्यनिहितं दुःखं संधत्तु चिन्त्यु मवत्येकं नीडम् ॥ तस्मिन्निद ॥ सच्च  
 द्विचेति सर्वं ॥ स ॥ तः प्रोतश्च विभः प्रजासु ॥ ८॥ प्रतत् ॥ प्रतदौ चेदम्  
 तत्तु विद्वां गंधर्वो धाम विभुं दुःखं सत् ॥ त्रीणि पदानि निहितान्युतास्यं  
 स्ता निवेदस पितुः पिता सत् ॥ ९॥ स नः ॥ स नो बंधुं ज्ञातिता स विधाता धा



तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ताऽपुः स पूजापतिः ॥१॥ सर्वे निमेषाः । सर्वे निमेषा जे  
 त्तिरे विद्यतः पुरुषादधि ॥ नेन मूर्धनतिर्व्यञ्जनमद्योपरिजग्यमत् ॥२॥  
 नतस्य । प्रतिमाऽस्ति अस्य नाम भूहद्यरी ॥ हिरण्यगर्भऽइत्येधमा मा  
 हि ७ सा दित्येषा अस्मान्ना ज्ञातऽइत्येषः ॥३॥ एषो ह ॥ एषो ह देवः प्रदि  
 शो नु सर्वाः पूर्वो ह ज्ञातः सऽउगर्भऽअतः ॥ स एव ज्ञातः स जे निव्यमालः  
 प्रत्यङ्मुनास्तिष्ठति सर्वतो मुखः ॥४॥ यस्माज्ज्ञातम् । यस्माज्ज्ञातम् न पु  
 शाकिञ्च नैव अऽश्वि बभूव भुवनं निविश्वम् ॥ पूजापतिः पूजया स ७ र रा  
 एस्त्री एज्जोती ७ पिसचते सषोडशी ॥५॥ अ न द्यौः ॥ अ न द्यौः रुग्णा ए



पुजापतिश्चैति॥ पुजापतिश्चरतिगर्भेऽमृतैरजायमानो बहुधा विजायते॥ तस्य  
 ओ निम्पारपश्यति धीरास्तस्मिन् न तस्युर्ज्वना निविश्या॥ १९॥ ओ देवे  
 ब्यः॥ ओ देवे ब्यः॥ आतपति ओ देवानां पुरोहितः॥ प्रवो ओ देवे ब्यो जातो नमो रु  
 चाय ब्राह्मणे॥ २०॥ रुच ब्राह्मणम्॥ रुच ब्राह्मणं नयन्तो देवाः अग्रे तद  
 भुवन्॥ अस्त्वैव ब्राह्मणो विधातुस्य देवाः असुन्वरो॥ २१॥ श्रीश्च॥ श्री  
 श्वेतलक्ष्मीश्च पत्न्यां व होरात्रे प्राप्ते नक्षत्राणि रूपमाश्विनौ व्यातम्॥ इत्य  
 निषाणा मुम्मेऽदृषाणि सर्वलोकम्मेऽदृषाणि॥ २२॥ इति संहितापाठे एक  
 त्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ तदेवा तदेवाग्निस्तदादित्यस्तदायुस्तदुचुन्द्रमाः॥



नो हे मन्त्रायै पिवाङ्गुच्छिन्निराय ॥ ११ ॥ अथ योगाय चै । अथ योग  
 यन्त्रे पञ्चो वयस्त्रिपुने दिव्यवाहोजगत्त्रिवत्साऽनुपुने तु  
 वाहऽउल्लिहे ॥ १२ ॥ पञ्चवाहो विराजोऽपञ्चवाहो विराजऽउक्षा लोच  
 हत्याऽरुषताः ककुभे नङ्गाहः पञ्चैधे नवोति छन्दसे ॥ १३ ॥ क  
 लयीवाऽआग्नेयाः । कलयीवाऽआग्नेया बभ्रवः सौम्याऽउप  
 स्ताः सावित्रा वत्सतयः सारस्वत्यः श्यामाः पौष्ठाऽएश्वर्यो मारुताः ॥  
 बहुरूपा वैश्वदेवा विशाद्यावा दधिधीयाः ॥ १४ ॥ उक्ताः सञ्चराः । उक्ताः  
 सञ्चराऽएताऽएश्यामाः कल्लावोरुणाः एश्वर्यो मारुताः काया स्त



पशः॥१५॥ अग्रेनीकवते। अग्रेनीकवते प्रथमजानालजते मरुद्भ्यः सा  
 तपनेभ्यः सवाश्यामरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बर्हिषिहान्मरुद्भ्यः कीडि  
 भ्यः स॥ सुशान्मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्यो नु सुशान्॥१६॥ उक्ताः सञ्चराः।  
 उक्ताः सञ्चराः एताः ऐन्द्राग्नाः शशुङ्गा माहेन्द्रा विदुः रुपा वैश्वकर्म्मणाः॥  
 ॥१७॥ धूम्रावज्जुनीकाशाः पितृणां सोमवता ॥  
 मज्जुवो धूम्रनीकाशाः पितृणां मवर्हिषदो दुःस्त्रावज्जुनीकाशाः पितृणां  
 मनिष्ठात्तानी दुःस्त्रा एष ते स्त्रैयमुकाः॥१८॥ उक्ताः सञ्चराः। उक्ताः  
 सञ्चराः एताः शुनासीरीयाः श्वेतावायव्याः श्वेताः सौव्याः॥१९॥ व



स प्ररत्नि ॥ ३० ॥ व एमहा ॥ व एमहा ॥ असि सस्येवडादित्यमहो ॥ असि ॥ म  
 हस्ते सतो महिमाय नस्यते द्वादेवमहा ॥ असि ॥ ३१ ॥ व ह्य ॥ व ह्य ॥ व ह्य ॥ व ह्य ॥  
 मुहारा ॥ असि सत्रा देवमहा ॥ असि ॥ मन्ना देवाना मसुच्यः पुरोहिता विमुज्ज्यो  
 तिरदात्र ॥ ३२ ॥ आयते इव सस्य ॥ आयते इव सस्य ॥ आयते इव सस्य ॥ आयते इव सस्य ॥  
 नक्षत्र ॥ वसु निजाते जनेमानु ॥ जसा प्रतिभाग नदीधिम ॥ ३३ ॥ अघा दे  
 वाः ॥ अघा देवा उदिता सस्यस्य निर ॥ हसः पिष्टानि रवद्यात् ॥ तन्नो मित्रो  
 वरुणो मा महन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी ॥ उत द्यौः ॥ ३४ ॥ आकृष्टेन ॥ आकृ  
 ष्ठेन रजसा व्रतमानो निवेशयन्त मृतमर्त्य ॥ हिरण्ययेन सवितारथेन ॥



सप्ररति॥३॥ व एमहा॥ व एमहा॥ असि सस्येवडादित्यमुहां॥ असि॥ सु  
 हस्ते सुतोमहिमापनस्यते द्वादेवमुहां॥ असि॥ ३॥ व द्दुर्ग्य॥ व द्दुर्ग्यश्चवसा  
 मुहां॥ असि॥ सत्रादेवमुहां॥ असि॥ मुक्तादेवानां मसुख्यः पुरोहितौ विभुज्ज्यो  
 तिरदीर्घ्यम्॥ ४०॥ आयत्ते इव सस्येवडा॥ आयत्ते इव सस्येवडा विष्टेदिन्द्रस्य  
 नक्षत्र॥ वसुनिजाते जनेमानु॥ जसा प्रतिभागनदीधिम॥ ४१॥ अघादे  
 वाः॥ अघादेवाः उदिता सस्येवडा निरुहसः पिष्टानि रवद्यात्॥ तन्नो मित्रो  
 वरुणो मा महन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवीः उत द्यौः॥ ४२॥ आकृष्टेन आकृ  
 ष्टेन रजसा वृत्तमानो निवेवायन्त मृतमर्त्यम्॥ हिरण्ययेन सवितारथेना



देवोधातिभुव नानिपश्यन् ॥ ४२ ॥ प्रवाहजे। प्रवाहजे सुप्रथाबुद्धिरेषामा  
 विरप्यतीववीरितऽइयाते ॥ विशासक्तोरुषसः पूर्वहं तौ वायुः हुषा सुस्तये  
 नियुक्तोर्द्विन्दुवायुवहस्पतिम् ॥ इन्दुवायुवहस्पतिमित्राग्निमूषण  
 प्रगम् ॥ आदिश्यान्मरुतं ज्ञेयम् ॥ ४५ ॥ वरुणः आविता ॥ वरुणः आविताभु  
 वन्मित्रो विष्वाभिरुतिभिः ॥ करतान्नः सुराधसः ॥ ४६ ॥ अधिनः अधिनः  
 इन्द्रेण विष्णोः सज्जुहोनाम् ॥ इतामरुतोऽआश्विनौ ॥ तस्युतथायं वेनोषेदे  
 वासुऽआनऽइन्द्रो विष्णवेभिः सोम्यमद्वौ मासः वर्षणीधृतः ॥ ४७ ॥ अग्नः  
 इन्द्रः ॥ अग्नः इन्द्रवरुणमित्रदेवाः राहुः अथ तमरुतो त विष्णो ॥ उक्तानासत्यासु



द्रोऽथ धर्माः कृषाः शूराः सरस्वती जुषतः ॥ ४८ ॥ इन्द्राग्नी ॥ इन्द्राग्नी मित्रावरु  
 णादिति ॥ स्वः पृथिवी-द्याभिरुतः पर्वतां ॥ ४९ ॥ इन्द्रो वे विष्णु मूषणश्च हर्म  
 णस्पतिर्भग नृश ॥ ५० ॥ सविता रभृतये ॥ ५१ ॥ अस्मे रुद्राः ॥ अस्मे रुद्रा  
 मिहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहंतो सजोषाः ॥ ५२ ॥ श ॥ सते सुवते धायि पृज्ज ॥  
 इन्द्रो ज्येष्ठा ॥ अस्मा ॥ अव नृदेवाः ॥ ५३ ॥ अर्वाचोऽय ॥ अर्वाचोऽय ॥ अर्वाचोऽय  
 तव ताव जत्रा ॥ आबोहादि जयमानो व्यये यम् ॥ आर्द्ध नो देवा निजुरो वृकस्य ॥  
 आर्द्ध नृ-र्त्ता देवपदो जत्राः ॥ ५४ ॥ विश्वे ॥ अय ॥ विश्वे ॥ अय मरुतो विश्वे ॥  
 रुती विश्वे भवन्त्ययः समिधाः ॥ विश्वे नो देवाः अवसागमन्तु विश्वे मस्तु



१७८  
 द्विंशं वा जोऽश्नुस्मे ॥ ५२ ॥ विश्वे देवाः ॥ विश्वे देवाः ॥ ऋणुते म० हवमेमे ॥  
 अतस्त्रिंशं उपे विष्ट ॥ अ० अग्नि जिह्वा ॥ उत वाच जैत्री ॥ आसद्यास्मि  
 न्वर्हि विमादय द्धम् ॥ ५३ ॥ देवे ब्रह्माहि ॥ देवे ब्रह्माहि प्रथमं अजिये ब्रह्मा  
 तत्त्व० सुव सिन्हाग मुत्तमम् ॥ आदिद्वा मान ० सवितुर्व्योमं ऋषे नृचीना जी वि  
 षेता मानुष्यः ॥ ५४ ॥ प्रवायुम् ॥ प्रवायुमष्टा बृहती मनीषा बृहद्भ्यं विश्व  
 वार० रथ आम् ॥ द्युत द्यामा नियुतः पत्ये मा नः कुविः कुविमियक्ष सिप्र  
 यज्ज्यो ॥ ५५ ॥ इन्द्रो वायु इमे ॥ इन्द्रो वायु इमे सुता ॥ उपप्रयो निरागतम् ॥  
 इन्द्रो वायु इति हि ॥ ५६ ॥ मित्र० इवे ॥ मित्र० इवे हत दक्षं वरुण चरिशा



दसम् ॥ अथैकं ताची ॥ साधना ॥ ५७ ॥ दस्रो युवाकं वः ॥ दस्रो युवाकं वः सुताना  
 सत्यावृत्तं बहिषः ॥ आयातं रुद्रवर्तनी ॥ तस्मिन्नायं चनेनः ॥ ५८ ॥ विदधदि ॥  
 विदधद्दी सरमा रुग्ण मे दुर्महिपाथः ॥ पुर्व्यं सुद्रोक् ॥ अग्रं नयत्सु प  
 द्यक्षराणां मधुरं वं प्रथमा जानती गात्र ॥ ५९ ॥ नहि स्पृशेत् ॥ नहि स्पृशेत् ॥ नहि स्पृशेत् ॥ नहि स्पृशेत् ॥  
 नन्यमस्मो द्वैश्चानुरात्युरः एतारमुनेः ॥ एमेन मरुधन्मताः अमर्त्यं द्वैश्चान  
 रद्वैत्रजित्याथ देवाः ॥ ६० ॥ उग्रा विघ्निना ॥ उग्रा विघ्निना मधुः इन्द्राग्नीहवा  
 महे ॥ तानो मृडात इन्द्रो ॥ ६१ ॥ उपोस्मै ॥ उपोस्मै गायतानरः पवमाना येन्द  
 वे ॥ अग्निदेवाः ॥ इयक्षते ॥ ६२ ॥ येत्वा ॥ येत्वा हि हत्ये मघवन् वदन्त्ये शोम्बरे ह



रिबो मेग विष्टो॥ अत्तानुममनुमदति विष्टाः पिवेनु सोमः सगलो मरुद्भिः॥ ६३॥  
 जनिष्ठाऽऽग्न्यः॥ जनिष्ठाऽऽग्न्यः सह सेतुरायमन्दऽऽजिष्ठो बहुलाभिमानः॥  
 अवर्द्धनिन्दममरुतश्चिदन्नमाता अद्वीरन्धनद्वनिष्ठा॥ ६४॥ आतु॥ आतूनऽ  
 इन्द्रश्च हन्तस्माकमुद्धमागहि॥ महान्महीमिरुतिभिः॥ ६५॥ त्वमिन्द्र॥ त्वमि  
 न्द्रप्रतूर्तिष्वाभिविश्वाऽऽसिस्पधः॥ अशस्तिहाजनिता विन्धुतूरासित्वन्  
 व्यतरुष्यतः॥ ६६॥ अतुते॥ अतुते शुष्मन्तुरयतमीयतुः॥ शोणी विशुन्नमा  
 तरा॥ विन्धुस्तस्पधः श्नययतमन्यवैवृन्नं व्यदिन्दुत्तर्वसि॥ ६७॥ अतो दे  
 वानाम्॥ अतो देवानाम्प्रत्येति सुम्नमादित्या सोऽतवतामृडयतः॥ आवोर्वीचि



181

सुमतिर्वचसां॥६॥ होश्चिदावशिबो वित्तशसत॥६॥ अर्द्धेभिः सवितः॥ अर्द्धेभिः  
 सवितः प्रायुर्भिर्द्व॥ त्रिवेभिरुद्यपरिपाहिना गयम्॥ हिरण्यजिह्वः सुविताय  
 नद्यैः सैरक्षामाकिर्नोऽग्रघरा॥ सऽईशत॥६॥ प्रवीरया॥ प्रवीरया शुचं  
 योदद्विरेवामद्वयुभिर्मधुमतेः सुतासः॥ बहवो योनियुतोऽप्यष्टापि  
 वा सुतस्यान्धसो मदीय॥७०॥ गावऽउप॥ गावऽउपावतावतं महीश  
 वं जस्यैरुप्सदा॥ उभाकर्णा हि एयथा॥७१॥ काव्यो राजानेषु॥ काव्यो  
 राजानेषु क्रत्वादक्षस्य दुरोणे॥ विशादसा सुधस्यऽआ॥७२॥ देव्याव  
 द्विर्॥ देव्यावद्वर्षुऽआगतं॥ रथेन सूर्यत्विषा॥ मद्वाग्र॥ समञ्जाश्रे॥



तस्य तन्वा यंचेनः ॥ ७३ ॥ तिरश्चीनो द्वितनः ॥ तिरश्चीनो द्वितनो रश्मिरेषां मधः  
 स्थिदासी ३ दुपरिस्थिदासी ३ त ॥ रेतोधाऽऽसन्महिमानेऽऽसन्महिधाऽऽवस्ता  
 त्रयतिः परस्ता ॥ ७४ ॥ आरोदसी ॥ आदसीऽऽपला दास्वर्मुहं ज्ञातं व्यदे  
 नमपसोऽऽधारयन् ॥ सोऽऽर्द्धं रायुपरिणीयते क्विरत्यो नवा जसातये  
 चनो हितः ॥ ७५ ॥ उक्थेभिर्द्वे नृहते मा ॥ उक्थेभिर्द्वे नृहते मां आमन्नासि  
 दागिरा ॥ आङ्गुषैरा विवा सतः ॥ ७६ ॥ उपनः ॥ उपनः स्तुनवो गिरः शृण्वन्  
 मृतं स्यते ॥ सुमृडीका भवन्तु नः ॥ ७७ ॥ ब्रह्मणि मे ॥ ब्रह्मणि मे मतयः  
 रा ७ सुतासः शुष्मऽइयति प्रभृते मेऽऽदिः ॥ आशा सते प्रतिहर्ष्यन्तु को मा



187  
 हरीवृहतस्तानोऽअच्छे॥७८॥अनुत्तमाते॥अनुत्तमातेमधवन्न किन्तु नत्वा वीरं॥  
 अस्ति देवता विद्वान्॥न जायमानो न मीते न जातो यानि करिष्याकं एहि प्रवृ  
 द्वा॥७९॥तदिह॥तदिहोऽसुभुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञऽउग्रस्त्वेषन्तं मगः॥स  
 द्यो जज्ञानो निरिणातिशान्नं ननु यं द्विष्ट्वे मदत्तु माः॥८०॥इमाऽउत्ता॥इ  
 माऽउत्ता पुरुवसो गिरीवर्द्धन्तु या ममा॥पावकवर्णाः सुचयो विपश्चितो मि  
 त्तो मे रक्षत॥८१॥अस्यायम्॥अस्यायं द्विष्ट्वे आर्यो दासः शो वधिपा  
 अरिः॥तिरश्चिदर्थे रुशमे पवीरवितुञ्जे सोऽअज्ज्यते रुचिः॥८२॥अयं  
 सहस्रमृषिभिः सह स्तुतः समुद्रऽदेवपप्रथे॥सह्यः सोऽअस्य महिमा  
 गृणो शवो अज्ञे षु विष्णु राज्ञे॥८३॥अदह्वे मिः सवितः॥अदह्वे मिः स



वितः कथुमिष्टं ७ शिवेभिरुद्यपरिपाहिनो गयम् ॥ हिरण्यजिह्वः सुविताय  
 नद्यं सेरक्षामाकिर्नोऽअघश ७ सईशत ॥ ८४ ॥ आनो वृजन्दिविस्पृशं वा  
 योऽआहि सुमन्मभिः ॥ अतः पवित्रं उपरिष्ठी लानोऽय ७ शुक्रोऽअया  
 मिते ॥ ८५ ॥ इन्द्रवायुसुसन्दश ॥ इन्द्रवायुसुशन्दरा सुहवे हहं वामहे ॥ अ  
 थानः सर्वं ७ इज्जिनो नमीवः सङ्गमे सुमनाऽअसद ॥ ८६ ॥ रुध्रगिथा रुध्रगि  
 त्या समर्त्यः शशमे देवती तये ॥ को नूनमिन्नावरुणा वमिष्टथऽआचुके  
 हृद्यदातये ॥ ८७ ॥ आयातम् ॥ आयातमुपभूषतम् ॥ पिवतमश्चिना ॥  
 दुग्धमप्यो वृषणा जेन्म्याव सुमानो मर्द्धिष्ठमागतम् ॥ ८८ ॥ प्रेतु ॥ प्रेतुवृ  
 ह्मरास्पतिः प्रदेव्यो तु सुनता ॥ अछावीरनय्यमपङ्क शोध सन्देश



१८३  
 सन्नयतुं ॥ ६॥ चन्द्रमाऽऽप्सु चन्द्रमाऽऽप्सु तरो सुपर्णो धावते दिवि ॥ रायमि  
 शङ्गं म्वहुलम्पुरुषं ह ॥ हरिरेतिक नि क्रदत् ॥ ७॥ देवन्देवं च ॥ देवन्देवं वो व  
 से देवन्देवमभिष्टये ॥ देवन्देव ॥ हुवे मवा जसा तये गुणान्ते देव्याधिया ॥ ८॥ दिवि  
 एष्टः ॥ दिविष्टोऽऽरोचताग्निर्चैश्चानरो वृहन् ॥ श्मया च धानऽऽ जसा  
 च नोहितो ज्ज्योतिषा बाधते तमः ॥ ९॥ इन्द्राग्नीऽऽपात् ॥ इन्द्राग्नीऽऽपा  
 दियं मूर्वागा तु द्वतीभ्यः ॥ हिती शिरो जिह्वा वा वद चरन्त्रि ॥ सत्यदा न्यक  
 मीत् ॥ १०॥ देवा सोहि ॥ देवा सोहि श्मामने वे सम न्यवो विश्वे साक ॥ सरात यः  
 ते नोऽऽद्यतेऽऽपर तु चै नो भव तु वरिवो विदः ॥ ११॥ अपाधमत् ॥ अपाध  
 तु



मदमिशस्तीरशस्तिहोशेन्द्रोद्युम्न्यातवत्॥ देवास्तऽइन्द्रसकव्यायवेभिरेवहद्वा  
 नोमरुद्गण॥ ५॥ प्रवः॥ प्रवऽइन्द्रोयवहतेमरुतोब्रह्माञ्जित॥ वृत्र७हनतिवृ  
 त्रहाशतकृतुर्वज्ज्रेणशतपर्वणा॥ ६॥ अस्येता॥ अस्येदिन्द्रोवारधेवृष्ट्य  
 शवोमदसुतस्यद्विष्टवि॥ अद्यातैमस्यमहिमानमायवोनुष्टुवतिपूर्वथा॥  
 इमाऽउत्तोरस्यायमय७ सहस्रैर्मूर्ध्वऽउपुण॥ ७॥ इतिसंहितापाठेत्रय  
 स्त्रि७ शतमोधायः॥ यज्जाग्यतः॥ यज्जाग्यतोदूरमुदैतिदेवत्तदुसुप्तस्य  
 तथेवेति॥ दूरङ्मज्ज्योतिषाज्ज्योतिरेकतेन्मेमनःशिवसङ्कल्प्यमस्तु॥ १॥ येन  
 कर्माणि॥ येनकर्माण्यपसोमनीषिणो॥ यदेकएवतिद्विदशेषुधीराः॥ यदेष्वं

२३६॥

१८६



८७  
 अक्षमन्त्रः पूजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥ अक्षमन्त्रः ॥ अक्षमन्त्र  
 न मुनचेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरं तं पूजासु ॥ अक्षमन्त्रः कृतो किञ्चन कर्म  
 क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥ येनेदम् ॥ येनेदम् तन्मे मनः शिवस  
 ष्यत्यर्चिगृहीतममृतेन सर्वम् ॥ येन बुद्धिस्तयते स फलहेता तन्मे मनः शिवस  
 ङ्कल्पमस्तु ॥४॥ अस्मिन् न चः ॥ अस्मिन् न चः सामं यज्ञं ॥ अस्मिन् न चः  
 हितारथनामा विवाराः ॥ अस्मिन् श्रुतं सर्वमो तं पूजानां तन्मे मनः शि  
 वसङ्कल्पमस्तु ॥५॥ सुषारथिरश्वानिव ॥ सुषारथिरश्वानिव अक्षमन्त्र  
 ष्यन्ति नीयते न शुचिर्वाजिन इव ॥ इत्यतिष्ठं यदजिरञ्जविष्ठं तन्मे मनः शि



वसं दुःखं मस्तु ॥ ६ ॥ पितृनु ॥ पितृनुस्तोषं मुहो धर्माणु न विधीम् ॥ अस्थत्रितो  
 व्योजं साष्ट्रं विषं वमर्दयत् ॥ ७ ॥ अन्विह ॥ अन्विहं तु मते वं मन्या सेशं च न  
 स्तुधि ॥ क्रतुदक्षो धनो हिनु अणु आरु ॥ पितारिषः ॥ ८ ॥ अनुनः ॥ १००० ॥ अनु  
 नोद्यानुमतिं अज्ञाने वे पुमन्यताम् ॥ अग्निश्च हव्यवाहनो भवतद्वायुवेमयः ॥  
 सिनीवालि पृथुष्टुके ॥ सिनीवालि पृथुष्टुके आदेवानामसि स्वसा ॥ जुषस्व हव्य  
 माहुतं मृजाने विदिदि ॥ १० ॥ पञ्चनद्यः ॥ पञ्चनद्यः सरस्वती मपि यति  
 सस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पञ्चधा सोदरो न वत्सरिह ॥ ११ ॥ त्वमग्ने त्वमग्ने प्रथ  
 मा अङ्गिरा रुषिर्देवो देवानामजवः शिवः सरवा ॥ तं वच्नते कवयो विष्णुना पसो



जायतमसुतो ब्राह्मणदृष्टयः ॥१२॥ त्वन्नः ॥ त्वन्नोऽग्नेतवदेव पायुर्भिर्मघो नो रक्ष  
 तन्नैश्वर्यं ॥ त्रता लोकस्य तनये गवामस्य निमेष ७२ ह्यमाणस्य वृते ॥१३॥  
 उत्तानायामव ॥ उत्तानायामव भराचिकित्वा सद्यः प्रवीता वृषणञ्ज जान ॥ अ  
 रुषस्त्रपो रुरादस्य पाज ॥ इडायास्पुत्रो वयुने जानिष्ट ॥१४॥ इडायास्त्वा ॥  
 इडायास्त्वापुदेव यन्नाता एष्टिच्याऽअधि ॥ जातवदो निधी मस्थ्यै मह्यायवो  
 ढवे ॥१५॥ प्रमन्महे ॥ प्रमन्महेशवसानाय सुषमाङ्गुषङ्गिर्धलसेऽअङ्गिरस्व  
 त ॥ सुवृत्तिभिस्तुवतऽकमियायीर्चीमार्कनरे द्विष्कृताय ॥१६॥ प्रवः ॥ प्र  
 वोमहे महिनमो नरङ्गुमाङ्गुष्यो ७ रावसानाय साम ॥ वेनानः रवे पितरः पद



शाऽअर्चन्तोऽप्रङ्गिरसोगाऽअविन्दन् ॥ १७ ॥ इच्छन्ति वा इच्छन्ति वा सोम्यासः  
 सर्वा यः सुन्वन्ति सोमन्दधति प्रया ॥ १८ ॥ सि ॥ तितिक्षतेऽअमिशस्तिज्ज  
 नानामिन्दुत्वदाकश्चन हिष्केतः ॥ १९ ॥ न ते न ते दूरे परमाचिदुजा ॥ २० ॥ स्यात्तु  
 अथाहि हरिवो हरिब्राम् ॥ स्थिराय ब्रह्मे सर्वनाकृते मां युक्ताग्यावाणः समि  
 धानेऽअमौ ॥ २१ ॥ अषाढं युत्सु ॥ अषाढं युत्सु एतना सुपप्ति ॥ २२ ॥ स्वर्षाम  
 प्सां हृज नस्य गोपाम् ॥ तरेषु जा ॥ सुक्षिति ॥ सुश्च वस ॥ जय ते स्वा मनु  
 मदेम सोम ॥ २० ॥ सोमो धेनुम् ॥ सोमो धेनु ॥ सोमोऽअर्व ते मा ॥ २१ ॥ सोमो  
 वीरूः मृण्यो रदाति ॥ सादन्त्यं विदथ्यो ॥ सतेयं मित्तप्रवणं यो ददोराद



CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



हिरण्यहस्तोऽअसुरः॥ हिरण्यहस्तोऽअसुरः सुनीधः सुमृडीकः स्ववावातुर्वा  
 इ॥ अपसेधं नृक्षसोपातुधानानरत्न्यादेवः प्रतिदोषं हृणनः॥ २६॥ अतो अ  
 तेपः आः सवितः पूर्यसोरि एवः सुकृताऽअतरेक्षे॥ तेभिर्नोऽअद्यपि निः  
 सुगेही रक्षावनोऽअधिचब्रूहि देव॥ २७॥ उभापिवतम्॥ उभापिवतमाश्रि  
 नोभानः शर्ममच्छतम्॥ अविद्युयामिरुतिभिः॥ २८॥ अन्नं स्वतीमश्विना  
 अन्नं स्वतामश्विना चामस्मेकृतनोदस्त्रावृषणामनीषाम्॥ अद्युह्ये  
 वसेनि कृयेवावृधेवनो नवतं वाजसातो॥ २९॥ द्युमिरक्तुभिः॥ द्युमिरक्तु  
 भिः परिपातमुस्मानरिष्टभिरश्विना सोमगेभिः॥ तन्नो मित्रो वरुणो मा  
 महन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः॥ ३०॥ आकृलेन॥ आकृलेन रज



सावर्त्तमानो निवेशयेन्न भूतममर्त्यं च ॥ हिरण्ययेन स वितारयेन्नादेवो वाति  
 भुवै नानि पश्यन् ॥ ३१ ॥ आरात्रिः आरात्रिपार्थिवः ७ रजः पितुरप्राधिधाम  
 मिः ॥ दिवः सदा १० सिरहता विनिष्ठसुः आत्वेषं वर्तते तमः ॥ ३२ ॥ उषस्त  
 तः ॥ उषस्तत्रिमाः ११ रास्मिन् वाजिनीवति ॥ येन तो कञ्चुतनयः शुधामहे ॥  
 ॥ ३३ ॥ प्रातरग्निम् ॥ प्रातरग्निमप्रातरिन्दुः ७ हवामहे प्रातर्भिर्वावर्त्तणा प्रात  
 रग्निना ॥ प्रातर्जगमूषणम् अहमणस्पतिमप्रातः सोममुतरुद् ७ हुवेम ॥ ३४ ॥  
 प्रातर्जितमगम् ॥ प्रातर्जितमगमुग्र ७ हुवेम वयस्पुत्रमदिते व्योवि धृती ॥  
 आहुश्चिद्यमन्यमानस्तुरश्चिद्वाजा चिद्यमगमुक्षीत्याह ॥ ३५ ॥ नगप्रले  
 तः ॥ नगप्रलेतर्जगसत्यराधो नगे मान्धि यमुदवा ददन् ॥ नगप्रलेतजनयुगो



भिरश्चेष्टेर्जगत्प्रन्तमिन्वतैः स्याम ॥ ३६ ॥ उतेदानीम् ॥ उतेदानीम् गवतः  
 स्यामो तप्यपित्वः उतमद्योऽनन्ताम् ॥ उतो दितामघवत्तर्ष्यस्यवृथचेवानां  
 सुमतौ स्याम ॥ ३७ ॥ जगः एव ॥ जगः एव जगवांश्च ॥ अस्तु देवास्तेन वृथ जग  
 वतः स्याम ॥ तत्त्वो जगत्सर्वं इज्जो हवीति स नो भगपुरः एता मे वेह ॥ ३८ ॥  
 समद्वुराय ॥ समद्वुरायोषसो नमत्तदधिकारवैवश्रुचये पदाय ॥ अर्वाचीनं वै सु  
 विदुः जगन्तो रथमिवाश्वावाजिनः आवहंतु ॥ ३९ ॥ अश्वावती गोमतीः ॥  
 अश्वावती गोमतीर्नः उषासो वीरवतीः सदमुद्यतुमद्वा ॥ घृतन्दुहा  
 ना विष्मत्तः प्रदीतायूथम्पातस्तुस्तिभिः सदानः ॥ ४० ॥ हृषते वै ॥ हृष  
 तव वृते वृथ नरिष्ये मकदाचन ॥ स्तोतारस्तः इह सम्मसि ॥ ४१ ॥ पृथ



स्पष्टः परिपतिम् ॥ पथस्पष्टः परिपतिं च चस्यां कामेन कृतोऽश्रयानि डर्कम् ॥  
 सनोरास छुरुधश्चन्द्राग्राधियन्धिय ७ सीषधातिप्रपूषा ॥ ४२ ॥ त्रीलिपदा ॥  
 त्रीलिपदाविवक्रमेविहृगेपाऽश्रदाज्यः ॥ अतोधम्मो लिधारयन् ॥ ४३ ॥  
 नु तद्विप्रासः ॥ तद्विप्रासो विन्यवोजागृवा ७ सुःसमिन्धते ॥ विलोच्यत्पु  
 मभ्युदम् ॥ ४४ ॥ दृतवती भुवनानाम् ॥ दृतवती भुवनानामलिच्छिप्रयो वी  
 दृथ्वी मेधुदुधे सुपेशासा ॥ द्यावापृथिवीवृक्षस्य धर्मणा विष्कमितेऽश्र  
 जरेभरिरेतसा ॥ ४५ ॥ मेनः ॥ मेनः सपत्नाऽअपतेव वसिन्नु ग्निभ्यामव  
 बाधा महताम् ॥ वसवोरुद्राऽआदित्याऽउषा  
 यज्ञे तौरमधिरा



जमक्रव॥४६॥ आनीसत्या॥ आनीसत्यानु॥ नरेन्द्र॥ नो॥ येभिर्ध्यातमधु  
 पेयमश्विना॥ आयुस्तारि॥ एनीरवा॥ ॥ सिमृक्षत॥ सेधत॥ न्देषोमवत॥  
 सचाभुवा॥४७॥ एषवः॥ एषवस्तोमोमरुतः॥ इयङ्गीमीन्द्रार्घ्यस्यमान्यस्यका  
 रोः॥ एषासा॥ एतन्नेत्र्यांविद्यामेधंजनेज्जीरदनुम्॥४८॥ सुहस्तोमाः  
 सुहच्छन्दसः॥ सुहस्तोमाः॥ सुहच्छन्दसः॥ आरुतः॥ सहप्रमाः॥ रूपयः॥ सप्त  
 दिव्याः॥ एवेषाम्प्रथामनुदश्यधीरोऽन्त्रालेभिरेरुथ्योनरस्मीन्॥४९॥  
 आयुष्योवृक्षस्यम्॥ आयुष्योवृक्षस्य॥ रायस्योषमोद्दिदम्॥ इदं॥ हिर  
 एयं॥ वृक्षस्वज्जे॥ रायाविरालादुमाम्॥५०॥ नतैरा॥ नतदुक्षी॥ ॥ सिनपिशुचा



स्तरतिदेवानामोजः प्रथमजं ह्येतत् ॥ यो विनर्त्ति दाक्षायुगां हिरण्यं  
 स देवेषु कृणुते हीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते हीर्घमायुः ॥ ५१ ॥ यदा  
 बन्धनं ॥ यदा बन्धनं दाक्षायुगां हिरण्यं ज्ञातानीकाथ सुमनस्यमानाः ॥  
 तन्मऽआवध्नामिशतशारदायायुषमाञ्जुरदृष्टिर्थासम् ॥ ५२ ॥ उत  
 नः ॥ उत नो हि बन्धुध्वंशः शृणोतु जऽएकपात्यशिवीसंमुद्रः ॥ त्रिष्वेदेवाऽ  
 रतावधौ दुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवतु ॥ ५३ ॥ इमागिरः ॥ इमागि  
 रऽआदित्येभ्यो घृतस्मूः सनाद्भजन्त्यो जुह्वी जुहोमि ॥ शृणोतु मित्रो  
 अर्थाभाभगोनस्तुविजातो चरुणोदक्षोऽः ॥ ५४ ॥ सुप्तऽसुप्त



यय ॥ सुप्तः कषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षति सदमप्रमादम् ॥ सुप्तापुः  
 स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽस्वप्नजो सन्नसदो च देवो ॥ ५५ ॥ उत्ति  
 ष्ठ ॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयज्ञे स्त्वमहे ॥ उपप्रयत्तु मरुतः सुदान  
 वः इन्द्रप्राश्नर्त्तवासवा ॥ ५६ ॥ प्रनूनम् ॥ प्रनूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं द  
 त्यक्यो म ॥ यस्मिन्निन्दोच्चरुणो मित्रोऽर्शुमा देवाऽऽकांथं सचक्रि  
 र ॥ ५७ ॥ ब्रह्मणस्पते ॥ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य युता सुक्तस्येवोचि  
 तं नयन्त्रजिन्व ॥ विश्वतद्गुदं ददन्ति देवा बृहद्देमविदये सुवीरः ॥ ५८ ॥  
 इमा विश्वा विश्वकर्माचो नः पितान्ते पुते नस्य नो देहि ॥ ५९ ॥ इति संहि



द्वापुः पुनाता सविता पुनात्य मूर्त्तौ जसा सप्य सा चर्च सा विप्र यता मुनि याः॥  
 तापाठे चतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः॥ अपेतः॥ अपेतो यत्तु पुण्यो सुम्ना देवधी  
 यवः॥ अस्य लोकः सुतावतः॥ धूमिरहो मिश्रकुमि द्यौः कं स्य मोददा त्ववसा  
 नमस्मे॥ १॥ सुविता ते॥ सुविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोक मिच्छतु॥ त  
 स्मे सुज्यन्ता मुस्त्रियाः॥ २॥ अश्वत्थेवः॥ अश्वत्थेवो निषदं नम्यते  
 वो वसतिष्ठाता॥ गोना ज्ञऽइत्तिला सप्रमत्सुनवधु प्ररुषम्॥ ४॥ सुविता  
 ते॥ सुविता ते शरीराणि मानुरुपस्थः आवपन्तु॥ तस्मै पृथिवि शस्रव॥ ५॥  
 प्रजापतो ह्य॥ प्रजापतो ह्यदेवताया मुपोदके लोके निदधाम्यसौ॥ अपनः शो  
 मुवदधम्॥ ६॥ परम्पत्यो॥ परम्पत्योऽनुपरे हि पन्था व्यस्तैः अन्यः  
 इतरो देवयानात्॥ चक्षुः श्रमते शृणुते तै ब्रवी मिमानः प्रजा शरिषो मो

199



तवीश्वरः॥७॥शंवातःशंवातःशं० हिते धृतिः शंते भवन्ति एकाः॥शंते भ  
 वन्ति यः शंतिं वा सोमा त्वामिच्छु वन्॥८॥कल्पन्तांते।कल्पन्तांते दिशस्तु  
 ब्रुमापः शिवते मास्तु ब्रुमाव तु सिन्धवः॥अत्र रिक्ष० शिव तु ब्रुङ्क ल्पन्ता  
 ते दिशः सर्वाः॥९॥अश्मन्वती रीयते॥अश्मन्वती रीयते स० रमद् मुत्तिष्ठ  
 तु प्रतरता सरवायः॥अत्रो जहो मे शिवावेऽस्य स्थिवा न्नुय मुत्तरे मा भिवा जा०॥१०॥  
 अषाधम॥अषाधमपु किल्वि मपे कृत्या मपोरपः॥अपो मार्गत्वे मस्मदप दुः  
 क्ष्वप्न० सुव॥११॥सुमित्रियानः॥सुमित्रियानः आपः० षधयः सन्तु दु  
 मित्रियास्तस्मे सन्तु श्रोस्मा देष्टुम श्रुवन्दिष्मः॥१२॥अनङ्गाहं मुन्वार  
 नामहे॥अनङ्गाहं मुन्वारं नामहे सौरमेयं सुस्तये॥सन्तुऽरुऽरुव देवे ब्रुव



द्विः सत्तारलोभव ॥ १३ ॥ उद्दुयम् ॥ उद्दुयते मे सुस्पृष्टः पश्यते ॥ उतैरम् ॥  
 देवदेवत्रासस्यमगन्मज्ज्योतिरुत्तमम् ॥ १४ ॥ इमञ्जीवेज्यः ॥ इमञ्जीवे  
 ज्यः परिधिन्दधामिमैषानुगादपरोऽअर्थमेतम् ॥ शतञ्जीवनुशरदः पुरु  
 चीरतमस्त्यन्दधताम्यवतेन ॥ १५ ॥ अमुऽआसृषि ॥ अमुऽआसृष्यपवसऽआ  
 सुवोर्जमिषञ्चनः ॥ आरेवाधस्वदुष्टनाम् ॥ १६ ॥ आयुष्मान्नमे ॥ आयुष्मान  
 ग्नेहविषादधानेधृतप्रतीकोधृतयोनिरेधि ॥ धृतम्बीत्तामधुवारुगद्यम्यिते  
 वेपुत्रमभिरक्षतादिमास्त्वाहा ॥ १७ ॥ परीमे ॥ परीमेगामनेषतपश्चग्निमहध  
 त ॥ देवेष्वेकतम्यवः कऽइमारं ॥ आदधर्षति ॥ १८ ॥ क्रुच्यादमग्निम् ॥ क्रुच्या  
 दमग्निमहि लोमिदुरम्यमराज्ये कऽछहुरिषवाहः ॥ इहैवायमितरोजातवे



दादेवेज्यो हव्यं ब्रह्म प्रजानम् ॥ १९ ॥ ब्रह्म वृषाम् ॥ ब्रह्म वृषाणां तवेद-पितृभ्यो अ-  
 चित्तान् चैत्य निहिता अशके ॥ मेदसः कुल्याऽउपतास्त्रवन्तु सत्याऽएषामाशिषः स-  
 न्ममतां स्वाहा ॥ २० ॥ स्योनाष्टि वि ॥ स्योनाष्टि विनो भवान्क्षरा निवेशनी ॥  
 यच्छानः शर्मसुप्रथाः ॥ अपतुः शोचु च दधम् ॥ २१ ॥ अस्मात्त्वम् ॥ अस्मात्त्व-  
 मधिजातो सि त्वदय जायताम्पुनः ॥ असौ स्वर्गाय लोय स्वाहा ॥ २२ ॥ इति संहि-  
 ता पाठे पञ्चत्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ रुचं द्वाचम् ॥ रुचं द्वाचम्प्रपद्ये मनो मजुः  
 प्रपद्ये सामप्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ द्वागोजः सहो ज्ञो मयि प्रा-  
 णा पुनो ॥ १ ॥ अन्ते ॥ यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वा तित्त्वा म्ब्रह्म स्प-  
 ति मेति दधातु ॥ शन्नो न वतु नुवनस्य अस्पतिः ॥ २ ॥ भूर्भुवः ॥ भूर्भुवः स्वः

का



तस्य वितुर्वरेण्यं अर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ कथानः ॥  
 कथानश्चित्रः आभुवदुती सदार्थः सखा ॥ कथाशचिष्ठयावृता ॥ ४ ॥ कत्वा ॥  
 कत्वा सस्यो मदानाम् ॥ हिंशामसुदन्धसः ॥ दृढा विदारुते वसु ॥ ५ ॥ अनीषु  
 लः ॥ अनीषुलः सखीनामविता जेरिन्दृणम् ॥ शतम्रवासूतिभिः ॥ ६ ॥ कया ल  
 म् ॥ कया ल्वन्तः कृत्यामिप्रमन्दसे वृषम् ॥ कया सोत्तव्यः आभर ॥ ७ ॥ इद्वोचि  
 म्भ्यः स्या राजति ॥ शनोऽस्तु द्विपदेशाच्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शनो मित्रः ॥ शनो मि  
 त्रः शं वरुणः शनो नवत्वर्च्यमा ॥ शनोऽइद्वो वृहस्पतिः शनो विष्णु ररुक्  
 मः ॥ ९ ॥ शनो वातः ॥ शनो वातः पवता ॥ १० ॥ शनोऽस्तु सूर्यः ॥ शनोऽस्तु कनिक्



ददेवः पुञ्जिन्योऽमिर्वर्षतु॥१०॥ अहनिशम॥ अहनिशमवतुनः॥ ७ रात्रीः  
 प्रतिधीयताम्॥ शनैऽइन्द्राग्नीर्नवतामवोतिः शनैऽइन्द्रावरुणाशतहव्या॥  
 शनैऽइन्द्राध्रुवणावाजसातोशमिन्द्रासोमासुवितायशंभ्योः॥११॥ शनैः॥  
 शनैर्देवीरतिष्ठयुः आपोऽनवन्तुपीतये॥ शंभ्योऽरुतिस्त्रवतुनः॥१२॥ स्योना  
 एधिवि॥ स्योनाएधिविनोभवान्त्वक्षुरातिवेशनी॥ यच्छीतः शर्मसुप्रयाः॥ १३॥  
 आपोहि॥ आपोहिषामयेभुवस्तानऽपुञ्जिर्दधातन॥ मुहुरणायचक्षसे॥ १४॥  
 जावः शिवतमोरसस्तस्यजाजयतेहनः॥ उशतीरिव्रमातरमा॥ १५॥ तस्माऽ  
 अरम्भ॥ तस्माऽअरद्गमावोयस्यक्षमायजिन्वथ॥ आपोजनमथाचनः॥ १६॥

म



द्योः शान्तिः॥ द्योः शान्तिरुत्तरिक्षं शान्तिः॥ द्यौर्वी शान्तिरापः शान्तिरोषध  
युः शान्तिः॥ वतस्पतयुः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः॥  
शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरोधि॥ १७ दत्तदृढं दत्तेदृढं हमा मि  
त्रं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षताम्॥ मित्रस्याह चक्षुषा सर्वाणि  
भूतानि समीक्षे॥ मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥ १८ दत्तेदृढं दत्तेदृढं  
हमा॥ ज्योक्ते सुन्दरी जीव्या सुज्योक्ते सुन्दरी जीव्या सम॥ नमस्ते न  
मस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअरुवर्चिषे॥ अन्यस्तेऽअस्मत्तपचुहेतयः  
पावकोऽअस्मभ्यं शिवो नमः॥ २० नमस्ते नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते



तनयिनिवे॥ नमस्तेनगवन्स्तुयतः स्वः समीहसे॥ २१॥ यतोयतः समीहसे॥  
 यतोयतः समीहसेततो नोऽन्नयदुःखं॥ शन्नः कुरुषुजाज्जोत्तयन्नः पु  
 मुब्धः॥ २२॥ सुमित्रिधानः॥ सुत्रिधानः आपुःषधयः सतुदुर्मित्रिया  
 तस्मै सतु सोस्मान्देष्टिअन्नं वृथान्दुष्मन्॥ २३॥ तच्चक्षुः॥ तच्चक्षुर्देवहि  
 तम्पुरस्ताधु क्रमुच्चरत्॥ पश्येयमशरदः शतं जीवेमशरदः शतं ७ शृणु  
 यामशरदः शतम् प्रब्रूयामशरदः शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्  
 यश्च शरदः शताह॥ २४॥ इति संहिता पाठे षड्विंशतमोऽध्यायः॥ देवस्य ह्य  
 देवस्य ह्यसवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बो दुब्ध्याम्प्लोहस्ताभ्याम्॥ आददेनारिर



व्ययामसि॥ पावकोऽसमञ्जसश्च शिवो भव॥४॥ हिमस्यैव  
 जरायुणाग्रेपरिव्ययामसि॥ पावकोऽसमञ्जसश्च शिवो भव॥  
 ५॥ उपज्जन्तुपवेतसेवतारगृहीष्वा॥५॥ अग्नेपित्तमपामसिम  
 रदूपाताभिरागहिसेमन्त्रोयज्ञमपावकवर्त्तश्च शिवइष्टि॥  
 ६॥ अपामिदंन्ययनः समुद्रस्य निवेशनम्॥ अन्यास्ते  
 असमत्पन्तुहेतयः पावको असमञ्जसश्च शिवो भव॥७॥ अग्ने  
 पावकरोचिषामन्त्रयादे







स्वापरिं गृह्णाम्यं तरिं ह्ये लोपयच्छामि॥ इन्द्राग्निं तामधुनः सारधस्य  
 धर्मम्यातृत्वं सेवो यजतु वाट्॥ स्वाहा सूर्यस्य रुद्रमये चारुवनेये॥ इ॥  
 समुद्राय स्वाहा॥ समुद्राय स्वाहा वाताय स्वाहा सरिराय स्वाहा वाताय स्वाहा॥ अना  
 धृष्याय स्वाहा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय स्वाहा वाताय स्वाहा॥ अरुस्य वै स्वा  
 हा वाताय स्वाहा शिमिहाय स्वाहा वाताय स्वाहा॥ ७॥ इन्द्राय स्वाहा॥ इन्द्राय स्वाहा  
 सुमने रुद्रवते स्वाहा द्यौय स्वाहा दित्यवते स्वाहा द्यौयै नमोतिष्ठे स्वाहा॥ सु  
 वित्रे रुद्र रुद्रवते स्वाहा रुद्रवते स्वाहा रुद्रवते स्वाहा रुद्रवते स्वाहा रुद्रवते स्वाहा  
 रुद्रवते स्वाहा॥ रुद्राय स्वाहा॥ रुद्राय स्वाहा रुद्राय स्वाहा रुद्राय स्वाहा रुद्राय स्वाहा



यस्वाहा धर्मः पित्रे ॥ १८ ॥ त्रिष्याऽआशाः ॥ त्रिष्याऽआशादक्षिणमद्विष्वा  
 न्देवानया डिहा ॥ स्वाहा कृतस्य धर्मस्य मधोः पिबतमश्चिना ॥ १९ ॥ दिवि  
 धोः ॥ दिवि धोऽदुमं व्यज्ञमिमं व्यज्ञं दिवि धोः ॥ स्वाहा ग्नये अजिनाय  
 नाशं व्यजुं व्यः ॥ २० ॥ अश्चि धर्मम् ॥ अश्चिना धर्मं मया त ॥ हा दीनमहं दिवा  
 भिरुतिभिः ॥ तत्रायणेन मोद्या वा एष्टि वीज्याम् ॥ २१ ॥ अयातामश्चिना ॥ अ  
 यातामश्चिना धर्ममनुद्या वा एष्टि वीऽअम ॥ साताम् ॥ इहे वरातयः सन्तु ॥ २२ ॥  
 इषे पिन्वस्व ॥ इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व  
 द्यावा एष्टि वीज्याम् ॥ पिन्वस्व ॥ धर्मासि सुधर्मा मे न्यस्मे नृमगा निधारय



चमुस्मेनि यच्छ देव वायुवम् ॥१६॥ अपश्यंगोपाम् ॥ अपश्यंगोपामनि  
पद्यमानुमाचपराचपप्रिनिश्चरंतम् ॥ ससध्रीचीः सविष्ट्रीर्वसानुष्माव  
रीवर्त्तिभुवनेषुतः ॥१७॥ विश्वासाश्रुवांपते ॥ विश्वस्यमनसस्पते विश्व  
स्यवचसस्पते सध्वस्यवचसस्पते ॥ देवश्रुत्वन्देवधर्म देवो देवान्याह  
त्रावीरनुवां देववीतये ॥ मधुमाध्वी आमधुमाध्वी आम् ॥१८॥ हृदेत्वा  
हृदेत्वा मनसे वा दिवेत्वा स्मर्गयत्वा ॥ कुर्द्धोऽश्रुदुरं दिवि देवेषु धेहि ॥१९॥  
पितानोसि पितानोसि पितानो बोधि नमस्तेऽस्तु मामाहि ॥ त्वष्टमत्त साः  
स्त्वासपेमधुनाम्यश्नमयिधेहि प्रजामस्मासुधे स्तुष्टाहं सुहर्षसाभू



यासम॥२०॥ अहः केतुना॥ जुषता ॥ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा॥ रात्रिः केतु  
 भोजुषता ॥ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा॥ २१॥ इति संहिता पाठे सप्तत्रिंशो ध्या  
 यः॥ देव स्येत्वा॥ सवितुः प्रसुवेन्मिनोर्बाहुभ्यां मृलोहसाम्भ्याम्॥ आद  
 देदित्येरास्नासि॥ १॥ इदु ए ह्यदित एहि सरस्वत्ये हि॥ असावे ह्यसावे ह्य  
 सावे हि॥ २॥ अदित्ये रास्ना सान्द्राण्याऽनुक्षीषन्पृथासिधुर्मोयदीक्ष॥ ३॥  
 अश्विभ्यां पितृस्व॥ सरस्वत्ये पितृस्तेन्द्राय पितृस्व॥ स्वाहेन्द्रवत्स्वाहेन्द्र  
 वत्स्वाहेन्द्रवत्॥ ४॥ अस्ते॥ स्तनः शशयो मोमयो भूयो रितुधा व सुविद्यः  
 सुदत्रः॥ येन विश्वा धुष्यसिवाकीर्णसरस्वती तमिह धातवेकः॥ उर्व  
 तारि सुमन्त्रे मि॥ ५॥ गायत्रं छंदो सि॥ त्रैलोक्यं छंदो सिद्धावा पृथिवीभ्यां



मेलिधारय सुत्रधारय विशन्धारय ॥१४॥ स्वाहा सुखे ॥ स्वाहा सुखेशरसे स्वा  
 हा ग्रावेभ्यः स्वाहा पतिरवेभ्यः ॥ स्वाहा पितृभ्यः रुद्रवेर्हिभ्यो घर्म  
 पावेभ्यः स्वाहा धावा पृथिवीभ्यः ॥ स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः ॥१५॥ स्वाहा  
 रुद्राय ॥ स्वाहा रुद्राय रुद्रो हतये स्वाहा संज्योतिषा ज्योतिः ॥ अहः के  
 तुना जुषतां सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ॥ रात्रिः केतुना जुषतां सु  
 ज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा ॥ मधुहुतं मिन्द्रतमे शुभा वृश्या मत्तै घ  
 र्ममैसे अस्तु मामाहिंसीः ॥१६॥ अक्षुमं ॥ अक्षु ममाहि मादिवं  
 विष्णो बभूव सुप्रथाः ॥ उत श्रवसा पृथिवीं स ऽसीदस्व महाशं

हेव



असिरोचं स्वदेववीतमः॥ विधुममग्नेऽनुषमिधेऽसृजप्ररात्तदर्श  
तम्॥ १७॥ आते धर्मे दिव्याशुग्या गायत्र्या ॐ ह विद्महे॥ सातुऽ  
आप्पायतानि द्यायता तस्यैते स्वाहा॥ आते धर्मा त्रिदशे शुग्या त्रिदुब्रा  
नीद्वे॥ सातुऽआप्पायतानि द्यायता तस्यैते स्वाहा॥ आते धर्मे द्युग्या ॐ  
शुग्या जगत्या ॐ सदस्या॥ सातुऽआप्पायतानि द्यायता तस्यैते स्वाहा॥  
आते धर्मा त्रिदशे शुग्या त्रिदुब्रा नीद्वे॥ सातुऽआप्पायतानि द्यायता ॥ १८॥  
क्षत्रस्येत्वा॥ क्षत्रस्येत्वा परस्याधु ब्रह्मरात्तन्देऽप्याहि॥ विरास्त्वाध  
र्मेणावय मनु क्रामाम सुविताय नन्द्यसे॥ १९॥ वतुः स्त्रक्तिनीभिः॥ च



तुः स्रक्तिर्नीभिर्नृतस्य सुप्रथाः सनौ विष्वा धुः सुप्रथाः सनः सुवर्धुः सुप्र  
 थाः ॥ अपुद्देषोऽपुद्दरो न्यवैतस्य साश्चि म ॥ २० ॥ घर्मेतत् ॥ धर्मेतत्ते पु  
 रीषु ते नृवर्द्ध सुवार्चप्याय स्व ॥ वृद्धिषी महि च वृथ मा चप्या सिषी महि ॥  
 ॥ २१ ॥ अचिक्रदृष्टा ॥ अचिक्रदृष्टा हरिर्महा न्मित्रो न दर्शितः ॥ स ७ सर्वे  
 रादि द्युत दुदधिर्निधिः ॥ २२ ॥ सुमित्रियानः ॥ सुमित्रियानः आपः उप  
 धयः स तु दुर्मित्रियास्तस्मै स तु योस्मान्देष्टु चर्च वृथान्द्विषमः ॥ २३ ॥  
 उद्वयम् ॥ उद्वयते म सुस्परिस्वः पश्यतुऽउ तैरम् ॥ देव न्देवना  
 स्तर्त्तु मगन्मुज्ज्योतिरु तुम् ॥ २४ ॥ एधौ सि ॥ एधौ स्पेधिषी महि स



मिदसितेजोसितेजोमयिधेहि॥२५॥ आवतीद्यावापृथिवी॥ आवतीद्यावा  
 पृथिवी आवञ्चसुप्सिन्धवोच्चितस्थिरे॥ तावन्तेमिन्दतेग्रहमुज्जागृ  
 ह्णाम्यक्षितमयिगृह्णाम्यक्षितम्॥२६॥ मायित्यद॥ मयित्यन्दिन्द्रि  
 यम्वहन्मयिदक्षोर्मुकदुः॥ धर्मस्त्रिभुग्विराजतिविराजाज्ज्योतिषा  
 सहब्रह्मणातेजसासह॥२७॥ पयसोरेतः॥ पयसोरेतुः आभृततेस्यदे  
 हंमशीमुख्यतैरामुतैरां॥ समाम्॥ लिषः सुहृक् क्रत्वेदक्षस्यतेसुषु  
 म्नास्यतेसुषुम्नाग्निहुतः॥ इन्द्रपीतस्यश्रुजापतिमक्षितस्यमधुम  
 तः॥ उपहृतः॥ उपहृतस्यमक्षयामि॥२८॥ इतिसंहितापाठेअष्टत्रिंशत्त



217

हितेन॥ॐ॒ग्रं॒लो॒हिते॒न॒मि॒त्र॒ॐ॒ सो॒ ब्र॒ह्मे॒न॒रु॒द्र॒स्यै॒र्ब्र॒ह्मे॒ने॒न्द्र॒म्य॒क्री॒डे॒न॒म॒रु॒  
 तो॒व॒ले॒न॒सा॒द्यान्म॒स॒हा॥॒ह॒व॒स्य॒क॒ण्ठ॒ॐ॒ रु॒द्र॒स्वा॒तैः॒ पा॒श्र्व॒र्च॒म॒हा॒दे॒  
 व॒स्य॒म॒रु॒त॒र्च॒व॒स्य॒व॒नि॒कुः॒प॒मु॒प॒तैः॒ पु॒रा॒त॒त॒॥॑॥॒लो॒म॒भ्यः॒ स्वा॒हा॥॒लो॒म॒  
 भ्यः॒ स्वा॒हा॒लो॒म॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ त्व॒चे॒ स्वा॒हा॒ त्व॒चे॒ स्वा॒हा॒ लो॒हि॒ता॒य॒ स्वा॒हा॒ लो॒हि॒ता॒य॒ स्वा॒  
 हा॒ मे॒दो॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ मे॒दो॒भ्यः॒ स्वा॒हा॥॒मा॒ं॒ से॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ मा॒ं॒ से॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ स्ना॒  
 व॒ं॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ स्ना॒व॒ं॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ स्थ॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ स्थ॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ म॒ज्ज॒भ्यः॒ स्वा॒हा॒ म॒  
 ज्ज॒भ्यः॒ स्वा॒हा॥॒रे॒त॒से॒ स्वा॒हा॒ पा॒य॒वे॒ स्वा॒हा॥॑॥॒आ॒या॒ सा॒य॒ स्वा॒हा॥॒आ॒या॒  
 सा॒य॒ स्वा॒हा॒ प्रा॒या॒ सा॒य॒ स्वा॒हा॒ सं॒द्या॒ सा॒य॒ स्वा॒हा॒ वि॒द्या॒ सा॒य॒ स्वा॒हा॒ हो॒द्या॒ सा॒य॒ स्वा॒



हा॥ शुचे स्वाहा॥ राचे ते स्वाहा॥ शोचमानाय स्वाहा॥ मोक्षाय स्वाहा॥ ११॥ तपस्व स्वाहा॥  
 तपसे स्वाहा॥ तप्यते स्वाहा॥ तप्यमानाय स्वाहा॥ तप्ताय स्वाहा॥ धर्माय स्वाहा॥ निष्क  
 से स्वाहा॥ प्रायश्चित्ते स्वाहा॥ नेषजाय स्वाहा॥ १२॥ शुभाय स्वाहा॥ शुभाय स्वा  
 हा॥ तैकाय स्वाहा॥ मृत्यवे स्वाहा॥ अहमेणे स्वाहा॥ ब्रह्महत्याये स्वाहा॥ वि  
 श्वेन्द्रो देवेन्द्रः स्वाहा॥ धावा एधिषीत्या ॥ स्वाहा॥ १३॥ इति संहितापाठे  
 तेन चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः॥ ईशावास्यम्॥ ईशावास्ये द्वादशमं सर्गं किंचुज  
 मित्या जगस्यां जगत्॥ तेन स्युक्तेन भुंजायां मागृधः कस्यस्विद्धनं मा॥ १॥  
 कुर्वन्नेव। कुर्वन्नेवेह कर्माणि। विविधेषु तत्समा॥ एवं च नान्यथे

मि

धि



मो ध्या यः॥ स्वाहा प्राणे ज्यः॥ स्वाहा प्राणे ज्यः सा धि पति के ज्यः॥ पृथि  
 वी स्वाहा मन्ये स्वाहा तैरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा॥ दिने स्वाहा सूर्याय स्वा  
 हा॥१॥ दिग्यः स्वाहा॥ दिग्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रे ज्यः स्वाहा द्व्यः  
 स्वाहा चरुणाय स्वाहा॥ ना ज्ये स्वाहा हुताय स्वाहा॥२॥ वाचे स्वाहा॥ वाचे  
 स्वाहा प्राणाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा॥ चक्षुषे स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्रो  
 य स्वाहा श्रोत्रो य स्वाहा॥३॥ मनसुः कामम्॥ मनसुः काममा कूतिं वाचः  
 सुत्यं मशीम्॥ पशुनाथं रूपमनं स्य रसो ब्रह्मः श्रीः श्रयताम्मायि स्वा  
 हा॥४॥ प्रजापतिः सन्नि यमाणः॥ प्रजापतिः सन्नि यमाणः सुम्ना ह  
 त्तो द्वे श्व देवः स६ सन्नो धर्मः प्रवृत्तस्तु नृणां आश्विनः



पयस्यानीयमानेपोऽमो। वैष्णव्यन्मानेमारुतः कूर्ध्वम्॥ मेतः शरसि स  
 ताव्यमानेवायुव्योऽहियमालः। आग्नेयो हयमानो वायुतः॥ ५॥ सुविता  
 प्रथमे॥ सुविता प्रथमे ह नृग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीयः। आदित्यश्चतुर्थे  
 चन्द्रमाः पञ्चमः। कर्तुः षष्ठे मरुतः। सप्तमे बृहस्पतिश्चतुर्मे॥ मित्रो नव  
 मे वरुणो दशमः। इन्द्रोऽएकादशे विष्णवे देवादौ द्वादशे॥ ६॥ उग्रश्च॥ उग्र  
 च्छ्वन्नीमश्च द्वाते अधुनिश्च॥ सा सं ह्नांश्च। मिथुग्वा च द्विष्टिपः स्वाहा॥ ७॥  
 अग्निः॥ हृदयेन॥ अग्निः॥ हृदयेन॥ शनिः॥ हृदयेन॥ पशुपतिः॥ हृदयेन॥  
 हृदयेन॥ नवम्पक्रा॥ शर्वम्पतस्नाञ्ज्यामाशानम्भुनीमहादेवमेतः प  
 र्श्वेनो ग्पन्नेवं च निष्ठनीव सिष्ठहनुः शिङ्गीनिकोरयाञ्ज्याम्॥ ८॥ उग्रलो